ISSN : 2454-1133

अनुग्रह ज्योति

2015

अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना

श्रेणी 'ए' – राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (नैक) द्वारा पुनर्मूल्यांकित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यु.जी.सी.) द्वारा 'विशिष्ट' महाविद्यालय के रूप में रेखांकित

महाविद्यालय प्रार्थना

करो अनुग्रह हे नारायण,
ज्ञान की ज्योति जले...!
भासित अन्तर्मन जन-जन का,
जगमग जग कर दे ऽ ऽ...!
करो अनुग्रह ...!

आत्म विश्वास से भरा हृदय हो,
कर्म-धर्म हो, दया, विनय हो।
सत्य बने संबल जीवन का
ऐसा मन कर दे ऽ ऽ ऽ...!
करो अनुग्रह ...!

ऊँच नीच का भेद नहीं हो
स्वस्थ्य तन, अनुशासित मन हो,
विजयी हो संघर्ष हमारा
बाधा सब हर ले ऽ ऽ ऽ
करो अनुग्रह ...!

बिहार विभूति डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह

तुम केवल नश्वर न, अनश्वर भी थे।
मानव थे तुम सही, और कुछ ईश्वर भी थे।
इसलिए जब चले गये, तब भी विभूति बाकी है।
चारो ओर अनुग्रह की अनुभूति अभी बाकी है।

– कलेक्टर सिंह 'केसरी'

कृतज्ञ महाविद्यालय परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि

अनुग्रह ज्योति 2015

डॉ ललन सिंह, (प्रधानाचार्य)
प्रधान संरक्षक

डॉ. पूर्णिमा शेखर
संरक्षक

डॉ. कामेश कुमार
संरक्षक

डॉ. कलानाथ मिश्र
संपादक

संपादक मंडल

डॉ. शैलेन्द्र मिश्र

डॉ. बद्री नारायण सिंह

डॉ. के.के. सिंह

डॉ. बिमल प्रसाद सिंह

डॉ. अजय कुमार

डॉ. शैलेश कु. सिंह

डॉ. अरूण कु. सिंह

डॉ. कुमारी वीणा

डॉ. शबाना करीम

डॉ. कृष्णा सिंह

केशरी नाथ त्रिपाठी
राज्यपाल, बिहार

सत्यमेव जयते

राजभवन, पटना – 800 002
दूरभाष : 0612–2217626
फैक्स : 0612–2786184

शुभकामना संदेश

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना की महाविद्यालयीय पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' का वर्ष २०१५ का अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

आशा है, पत्रिका महाविद्यालय की प्रतिभाओं की सर्जनात्मकता को तो विकसित करेगी ही, साथ ही, देश और समाज की मौजूदा समस्याओं और चुनौतियों से जुड़े विषयों के संदर्भ में भी सार्थक विमर्श प्रस्तुत करेगी।

मैं पत्रिका के प्रकाशन की सफलता की मंगलकामना करता हूँ।

(केशरी नाथ त्रिपाठी)

बिहार सरकार

मुख्यमंत्री
मंत्री

बिहार सरकार

पटना

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना द्वारा महाविद्यालय पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' का प्रकाशन किया जा रहा है, जिसका लोकार्पण अनुग्रह बाबू की जयंती के अवसर पर दिनांक १८ जून, २०१५ को होगा।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना का योगदान सराहनीय है। आशा है, प्रकाश्य पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए उपयोगी होगी तथा भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में मार्गदर्शन करेगी।

कॉलेज पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नीतीश कुमार)

Nikhil Kumar
Former Governor Nagaland, Kerala

8, Western Avenue, Maharani Bagh
New Delhi - 110065
Tel. : 26327199, 26329515
E-mail : nikhilkumar1943@yahoo.com

SOPAN, Boring Road
Patna - 800 001
Tel. : 2531171, 2532177

शुभकामना संदेश

अनुग्रह बाबु बिहार के विभूति थे जिनका हमारे स्वतंत्रता संग्राम में और फिर स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण में, विशेषकर बिहार के निर्माण में, प्रमुख व महत्वपूर्ण भूमिका थी।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना द्वारा महाविद्यालय पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' का प्रकाशन किया जा रहा है जिसका लोकार्पण अनुग्रह बाबू की जयन्ती के अवसर पर होगा। इस पत्रिका में अनुग्रह बाबु के कार्यकलाप की चर्चा होती रहेगी जिससे आज की पीढ़ी को प्रेरणा मिलती रहे।

मैं ए.एन.कॉलेज के शिक्षकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को बधाई और पत्रिका की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

(निखिल कुमार) 11/2/15

बिहार सरकार

प्रशान्त कुमार शाही
मंत्री
शिक्षा विभाग, बिहार सरकार, पटना

बिहार सरकार

कार्यालय : 0612–2204904
आवास : 0612–2215513

शुभकामना संदेश

यह हर्ष का विषय है कि अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना द्वारा महाविद्यालय पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' का प्रकाशन किया जा रहा है जिसका लोकार्पण बिहार विभूति अनुग्रह बाबू की जयन्ती के अवसर पर होगा। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना का योगदान अत्यंत ही महत्वपूर्ण रहा है।

मैं समारोह की सफलता तथा महाविद्यालय पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' के ससमय प्रकाशन के लिए मंगलकामना करता हूँ।

(पी.के.शाही)

NALANDA OPEN UNIVERSITY

3RD FLOOR, BISCOMAUN BHAWAN, PATNA-800001, BIHAR, INDIA
Ph. : 0612-2201019; Fax : 0612-2201001

Prof. Rash Bihari Prasad Singh
Vice-Chancellor
E-mail : singh.rbp@gmail.com | Ph. : +91 9572356845 | 9431021277

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि ए.एन.कॉलेज, पटना, बिहार विभूति डॉ. अनुग्रह नारायण सिन्हा का १२८वाँ जन्म दिवस प्रभावशाली ढंग से मनाने जा रहा है। इस अवसर पर 'अनुग्रह ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन अति प्रशंसनीय प्रयास है। डॉ. अनुग्रह नारायण सिन्हा राज्य के प्रथम उपमुख्यमंत्री तथा वित्त मंत्री थे। उन्होंने राज्य के विकास हेतु अनेक आदर्श मापदण्डों की स्थापना की थी। उस महान आदर्श महापुरूष के नाम पर मापदण्डों की स्थापना हेतु सतत् प्रयत्नशील है। अनुग्रह जयंती के शुभ अवसर पर मैं सभी कार्यक्रमों तथा अनुग्रह ज्योति पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(रास बिहार प्रसाद सिंह)
कुलपति
नालन्दा खुला विश्वविद्यालय
पटना।

Dr. Shamshad Hussain
Prof. Emeritus, Patna University
Chairman, Bihar State Madarsa Education Board

Residence
Singhi House, Professor Colony,
Tripolia, Patna - 800 007
Ph. : 0612-2372044 | Mob. : 9430058190

Formerly ::
Chairman, Bihar State University Service Commission
Vice-Chancellor, Nalanda Open University & Magadh Unviersity
Head, Department of Psychology, Patna University

शुभकामना संदेश

It is a matter of great pleasure to learn that the prestigious A.N. College, Patna is going to celebrate Anugrah Jayanti on 18th of June, 2015. This will be a great occasion Dr. Anugrah Narayan Sinha , Bihar Bibhuti, has really proud himself as one of the illustrious sons of Bihar because of his unforgettable contributions as an exemplary leader, first deputy Chief Minister and Finance Minister of Bihar. His contribution as an illustrious leader and a remarkable minister will last long A.N. College, Patna, will ever remember this exemplary leader for establishing an educational institution of high quality. He proud himself as a persons of efficient administrations who was accessible by all. It is a matter of pleasure that the effectual educational institutions: A.N. College, Patna, is celebrating Anugrah Jayanti in the memory of such great man.

I hope by celebrating this unforgettable occasion, the Principal, Dr. Lalan Singh, teachers, non-teaching Staff and the students will make people reminded that A.N. College, Patna will never forget such great man having diversified qualities and endeavours.

I hope this special occasion will leave an imprint on the minds of teachers and students. I am hopeful that this occasion will reflect the performing skills of the Principal, teachers, non-teaching staff and the students towards promoting standards of teaching, learning and brotherhood.

I wish every success of the celebration under the dynamic leadership of Dr. Lalan Singh, Principal.

Shamshad Hussain
8.06.15

Dr. Shamshad Hussain

Shyama Singh

'SOPAN'
Boring Road,
Patna - 800 001

Message

I did not have the privilege of knowing him as a revered family elder but Anugrah Babu, Baba to me, left behind an aura of patriotism, selfless social service, dedication to social justice and personal integrity that has affected all of us. I am one of those. I keep hearing and reading accounts of his complete identification with the common man, his being and integral part of Bapu's first foray into mass movement which was to champion the cause of Champaran's indigo farmers that put us on to the path that brought us our freedom and his contribution to nation building and particularly to our state of Bihar. I feel blessed to be part of this heritage and, like millions, feel inspired to do my bit in the cause of our nation's development and progress. It was his ideal that was always before me during my term as a member of the Lok Sabha and later and am confident it will be so for our people especially our younger generations.

I pay may respectful homage to him on his 128th birth anniversary.

Shyama Singh

अनुग्रह जयन्ती संस्मरणात्मक परिप्रेक्ष्य

प्रधानाचार्य की कलम से

लोकतंत्र के मर्यादा पुरुष बिहार विभूति डा0 अनुग्रह नारायण सिंह पर हमें गर्वोन्नत होने के अनेक कारण हैं। सर्वप्रथम, वे दलित, वंचित, मजलूम और पिछड़े के हक में सदा खड़े रहे, वकालत की, संघर्ष भी किया और नेतृत्व प्रदान किया। महात्मा गॉधी के आदर्शों को समग्रता में जीने और पूर्णता में प्रदर्शित करनेवाले अपने समकालीन राजनीतिज्ञों में वे सदा अग्रणी रहे। बिहार महात्मा गॉधी को इसलिए प्रिय था कि बिहार में चम्पारण था और चम्पारण के संदेश को शेष बिहार के चप्पे–चप्पे में पिरो देनेवाले डा0 अनुग्रह नारायण सिंह थे। वे महात्मा गॉधी के आत्मीय अनुयायी, डा0 राजेन्द्र प्रसाद के हमदर्द मित्र और श्रीकृष्ण सिंह के विश्वस्त सहकर्मी थे। उपमुख्यमंत्री रहते हुए राज्य में वित्तीय अनुशासन तथा तत्कालीन कराधान की अराजक तथा अव्यवस्थित प्रावधानों को जन–जन के अनुकूल बनाने का कठिन कार्य कर डा0 अनुग्रह नारायण सिंह ने तत्कालीन केन्द्रीय वित्तमंत्री को पीछे छोड़ दिया था। उन्हीं के प्रयत्नों का परिणाम था कि भारतवर्ष में उन दिनों अग्रणी राज्यों में बिहार का नाम शुमार था। अगर बाबू साहब एक दशक और नेतृत्व प्रदान किये होते तो बिहार का उद्योग और कृषि एशिया महादेश के लिए मानक बन गया होता।

मुझे फक्र है कि मैं बिहार विभूति के जीवन्त स्मारक, जिसकी बुनियाद उन्हीं के नाम से रची गयी थी, का एक कर्मशील कर्मचारी हूँ। विगत एक वर्ष से मुझे इस वृहत संस्था को नेतृत्व प्रदान करने का गुरुतर दायित्व दिया गया है जिसे फलीभूत करने में मैं अहर्निश संघर्ष कर रहा हूँ। सीमित साधनों और अनेक प्रकार की प्रतिकूलताओं के बाबजूद शिक्षा के स्तर को कभी शिथिल नहीं होने दिया। अपनी निरंतरता के साथ–साथ अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना उच्च शिक्षा की गुणवत्ता के संवर्द्धन में राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान दिनानुदिन रेखांकित करता जा रहा है। जबकि शिक्षा के शैथिल्य का यह दौर सबके लिए ध्यानाकर्षण का विषय बना हुआ है। ऐसे में हमारी संस्था अंधेरे में सौ चिराग की तरह प्रकाशित और आलोकित है। हमारे शिक्षक प्रवीण और कुशल हैं, कर्मचारी दक्ष हैं, छात्र अनुशासित और पूर्णतः विद्यानुरागी हैं। इनका बल हमार बल है। इनका वर्तमान हमारा वर्तमान है। इनका भविष्य हमारा भविष्य है।

बिहार विभूति का पावन जन्म–दिन हमारे लिए किसी पवित्र त्योहार की तरह ही उत्साहवर्द्धक है। इस पुनीत अवसर पर प्रतिवर्ष हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'अनुग्रह ज्योति' का प्रकाशन होता है। इस पत्रिका में हमारी शिक्षा का वर्तमान स्वरूप मुखरित हो रहा है। इसके विषय वैविध्य में हमारी विविधता प्रतिविम्बित हो रही है। मुझे विश्वास है कि रचनाधर्मिता की वर्तमान दिशा, जो तकनीकी माध्यमों से होकर गुजरती है, का लघु संस्पर्श इसमें दृष्टिगोचर होगा। सभी आलेख या स्तम्भ, लेखकों की मौलिकता के नमूने हैं। इनके प्रत्येक हर्फ में बिहार–विभूति की प्रेरणा, संदेश या उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि की अन्तःस्फूर्त स्वर समाहित हैं। इस अवसर पर इस 'ज्योति' के और प्रखर होने की मैं कामना करता हूँ।

✍ डॉ. ललन सिंह
प्रधानाचार्य

सम्पादकीय

अनुग्रह ज्योति' 2015 प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष एवं संतोष का अनुभव हो रहा है। हम प्रति वर्ष 18 जून को महान स्वतंत्रता सेनानी, स्वतंत्र बिहार के प्रथम उप मुख्यमंत्री, बिहार विभूति अनुग्रह बाबू का जन्म दिन मनाते हैं। अनुग्रह बाबू एक मानवतावादी प्रगतिशील विचारक एवं महान शिक्षाविद् थे। उनकी जयन्ती का आयोजन हमारे लिए किसी उत्सवधर्मी परंपरा का निर्वाह मात्र नहीं है, न ही किसी समारोह की रस्मअदायगी की वाध्यता। यह उस महान परंपरा के युग–पुरुष के स्मृति तर्पण का पर्व है जिसके व्यक्तित्व में राष्ट्र धर्म, राजनीति, समाज सेवा एवं शिक्षा, सभी एक साथ समान रूप से समादृत है। अतः बाबू साहब का जन्म दिन हमारे लिए प्रेरणा और संकल्प का दिन है। इस अवसर पर हम हर वर्ष महाविद्यालय पत्रिका **'अनुग्रह ज्योति'** का प्रकाशन करते हैं।

महाविद्यालय पत्रिका कॉलेज की शैक्षिक, सांस्कृतिक विविधताओं, गतिविधियों और उपलब्धियों का प्रतिबिंब होता है। कॉलेज के प्रधानाचार्य डा. ललन सिंह के कुशल नेतृत्व और प्रेरणा से कॉलेज के शैक्षिक, सांस्कृतिक वातावरण में नव उत्कर्ष आया है। कॉलेज को पुनः राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद्(नैक) द्वारा श्रेणी 'ए' के रूप में पुनर्मूल्यांकित किया गया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू. जी.सी) द्वारा विशिष्ट महाविद्यालय के रूप में रेखांकित किया गया है। यह हमारे लिए गर्व का विषय है।

हम छात्रों को मात्र पाठ्यक्रम की शिक्षा ही नहीं देते अपितु हमारा उद्देश्य उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। इस हेतु हम समय–समय पर विभिन्न शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियों, खेल–कूद प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करते रहते हैं। इस वर्ष भी कॉलेज के विभिन्न विभागों द्वारा निरंतर सेमिनार, कार्यशाला, निबंध प्रतियोगिता, भाषण कला प्रतियोगिता, वाद–विवाद, कविता पाठ आदि आयोजित होते रहे।

हम जानते हैं शिक्षा जीवन के लक्ष्य की पूर्त्ति के लिए एक आवश्यक औजार है। महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डा. राधाकृष्णन मानते थे कि– शिक्षा वह है, जो मनुष्य को ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ उसके हृदय एवं आत्मा का विकास करती है। शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के विकास के साथ–साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी प्रेरित करती है।

शिक्षा के महत्व को परिलक्षित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा कि जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें, यर्थाथ में वही वास्तविक शिक्षा होगी।

अनुग्रह बाबू की प्रेरणा और देश के ऋषितुल्य महान व्यक्तित्वों से प्रेरणा ग्रहण कर शिक्षा के क्षेत्र में हम आगे बढ़ रहे हैं। हम अपने छात्रों का निर्माण इस तरह से करना चाहते हैं जिससे हम राष्ट्र की अखण्डता और अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं को भी अक्षुण्ण रख सकें। हमारा ध्येय नैतिक तथा बौद्धिक, दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना है जिससे युवाओं में आदर्शवाद की खुशबू तो हो ही, साथ ही आधुनिकता और पाश्चात्य कुशलता का सामंजस्य भी हो।

'अनुग्रह ज्योति' में हमने एक ओर जहाँ कॉलेज के कई विद्वान प्राध्यापकों का सुचिंतित आलेख, कविता, कहानी संकलित किया है– जो अध्ययन के क्षेत्र में एक सार्थक उपलब्धि है– वहीं सृजनधर्मी छात्र–छात्राओं की रचना को भी समाहित किया है। इन रचनाओं में युवा मन की अभिव्यक्ति तो है ही, उनकी सर्जनात्मक क्षमता का भी विकास हमें देखने को मिलता है। अभिव्यक्ति कौशल के बिना व्यक्तित्व का विकास संभव ही नहीं है। इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों में वैचारिक प्रस्फुटन तो होता ही

है देश काल समाज के संबंध में उनके दृष्टिकोण से भी हम परिचित हो पाते हैं। इस प्रकार कॉलेज पत्रिका वैचारिक स्तर पर शिक्षक एवं छात्रों को करीब लाने में एक सेतु का काम करती है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कॉलेज पत्रिका महाविद्यालय के समस्त गतिविधियों का दर्पण है। हमने **'अनुग्रह ज्योति'** में वर्ष भर के गतिविधियों का लेखा–जोखा भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) की गतिविधियों, क्रीड़ा परिषद् की ओर से किए गए खेल–कूद प्रतियोगिता, विभागों द्वारा आयोजित सेमिनार, अन्य विभागीय गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण भी प्रकाशित करते हैं जिससे कॉलेज का सर्वांगीण पक्ष पाठकों के सामने प्रस्तुत हो सके।

हमें यह कहते हुए गरिमा का बोध होता है कि यह कॉलेज आज राजधानी के शीर्ष, गौरवपूर्ण शिक्षण संस्थानों में शुमार है। हमारी उपलब्धियाँ और गतिविधियाँ अखबार की सुर्खियाँ बनती रही हैं। हम पाठकों के समक्ष समाचार पत्रों के कुछ अंश कलात्मक ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं जिससे हमारे छात्रों में नव उर्जा का संचार हो।

प्रकाश्य लेखों के आधार पर इस बार हमने इस पत्रिका के लिए अंतरराष्ट्रीय मानक सीरियल नंबर (ISSN) प्राप्त करने का मन बनाया। हम आभारी हैं नेशनल साइंस लाइब्रेरी के डॉ. वी.वी. लक्ष्मी जी का कि उनके सहयोग से कम समय में ही पत्रिका को (ISSN) नंबर प्राप्त हो गया।

प्रधानाचार्य और महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापकों ने मुझे पत्रिका के संपादन का गुरुतर भार वहन करने योग्य समझा इसके लिए मैं उन सबका आभारी हूँ। अल्प समय में पत्रिका के लिए महत्वपूर्ण आलेखों का संग्रह करना, शब्द संयोजन और स्तरीय प्रकाशन कर पाना अन्यंत दुरूह कार्य था। अकेले मुझसे यह सब कर पाना संभव नहीं था। संपादक मंडल के सदस्यों का भरपूर सहयोग और सुझाव इस महती जिम्मेवारी को पूरा करने में मुझे मिला है। मैं उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

जिन विद्वानों ने अपनी रचना पत्रिका में दी है उनके प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ। विशेष रूप से मैं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री, डॉ. जगन्नाथ मिश्र और भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व पदाधिकारी डॉ. रामउपदेश सिंह 'विदेह' का आभारी हूँ, जिन्होंने बिहार विभूति के उपर अपने महत्वपूर्ण आलेख देकर पत्रिका को गौरव प्रदान किया है।

हमने यथा संभव पत्रिका को त्रुटि रहित बनाने का प्रयास किया है। फिर भी यदि कुछ मुद्रण दोष रह गया होगा तो मैं उन त्रुटियों के लिए विनम्रता पूर्वक पाठकों से क्षमा याचना करता हूँ।

आप के सुझाव भविष्य में पत्रिका को और अधिक समृद्धता प्रदान करेंगे इस आशा के साथ पत्रिका के स्वरूप और सामग्री आदि के संबंध में आपके सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

बिहार विभूति अनुग्रह बाबू का यह कथन 'Stand by your merit' (अपनी योग्यता के अनुरूप खड़े हो) हमारे लिए आर्श वाक्य की तरह है। हमारे छात्र अपने ज्ञान, गुण और योग्यता के बल पर जीवन पथ पर अग्रसर रहें, सफलताओं को प्राप्त करें। उनमें विनयशीलता हो, संवेदनशील हों यही हमारी कामना है। क्योंकि विद्या हमें विनयशील बनता है – 'विद्या ददाति विनयम'।

विगत दिनों शिक्षा में कदाचार की चर्चाएं मुखर रहीं। हम अपने छात्रों को सदाचार की शिक्षा देते हैं। हम आशावादी हैं और मानते हैं कुरीतियों और कदचार के बीच भी हमारे छात्र सतपथ पर ही चलेंगे।

मैं अपनी बात दिनकर की निम्न आशावादी पंक्तियों के साथ समाप्त करना चाहूँगा–

''आयगा वह दिन बहुत ही शीघ्र आएगा,
जब मही बिल्कुल बदलकर
स्वच्छ, शीतल, सौम्य, शोभायुत, नयी हो जाएगी,
जिस तरह कोई नहा कर स्वच्छ हो जाये।
व्योम यह उजली किसी कोमल विभा से पूर्ण होगा।
और यह नैराश्य का तम भाग जाएगा।
आदमी को पंख निकलेंगे।
जहाँ तक स्वप्न उड़ता है
वहाँ तक आदमी निर्विघ्न होकर उड़ सकेगा।''

इति शुभम...

कलानाथ मिश्र

अनुक्रम

- गांधी–युग के सच्चे जनसेवक – डॉ. अनुग्रह नारायण सिंह : **डॉ. जगन्नाथ मिश्र** 15
- बाबू साहब, जिनकी स्मृतियाँ अशेष हैं : **रामउपदेश सिंह** **17**
- Review and Options - Global Trends : **Dr. Kamesh Kumar** 21
- Use of Constructed Waterland Based system for waste water treatment : **Dr. Bihari Singh** 24
- Global Warming climate change : **Dr. Ashok Ghosh** 26
- Smiling inside our contribution to life : **Dr. Kamal Kishor Singh** 28
- Shrilal Shukla and His Raag Darbari : **Dr. Shailendra Mishra** 30
- The God Particle : The Quest for the ultimate truth : **Dr. Arun Kumar** 32
- Time to combat empty nest syndrom : **Dr. (Mrs.) Vijaya Lakshmi** 36
- कबीर का परमतत्व : **डॉ. ब्रदीनारायण सिंह** 38
- बिहार में नक्सली आंदोलन : **डॉ. रामावतार सिंह** 39
- Federal National Interface of India : **Dr. Bimal Prasad Singh** 41
- Enrolled in School but not educated : **Dr. Ajay kumar & Dr. Kavita Kumari** 44
- Amazing Facts : **Dr. Manorma Kumari** 47
- Antioxidants and our health : **Dr. Preety Sinha** 48
- Ethics and the state - An apraisal : **Dr. Abha Singh** 49
- राजभाषा नीति और हिन्दी की समासिक स्थिति : **डॉ. सोना सिंह** 54
- आग की लपटों को चिमटों से नहीं पकड़ा जा सकता : **डॉ. कृष्णा सिंह** 56
- A myth or a Reality Dalits and Rights of Education : **Dr. Priti Kashyap** 57
- कविता : कि भूल जावो/प्रजातंत्र की शान हूँ/निरुतर मैं : **डॉ. रमेश पाठक** 59
- काव्य में प्रकृति चित्रण : **डॉ. प्रतिभा सहाय** 60
- कविता : सुनो हे शेषनाग! : **डॉ. कलानाथ मिश्र** 63

- E-waste and its Management in India : **Dr. Sushil Kr. Singh** 65
- Bollywood, Bytes, Barbie and "Bharat" : **Dr. Anuradha Sen** 69
- The Secret of splendid Success : **Dr. (Prof.) Baban Kr. Singh** 74
- Water living water and wastewater : **Dr. Subhash Pd. Singh** 75
- A Born Bihari - George Orwell : **Dr. Hansa Gautam** 78
- An Approach to vedic mathematics : **Dr. S.K. Mishra** 79
- Higher education in global era and the emerging issues : **Dr. Kumari Veena** 80
- Effect of musical tones on planet life : **Dr. Shabana Karim** 81
- 'रामचरितमानस' की वर्तमान संदर्भगर्भिता : **डॉ. संजय कुमार सिंह** 83
- महिला सशक्तीकरण : **डॉ. वीणा कुमारी** 87
- An overview - Antioxidants & Free Radicals : **Navi Ranjana** 89
- समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर : **सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप** **राजेन्द्र कुमार** 92
- क्रीड़ा परिषद् – एक प्रस्तुति : **डॉ. अजय कुमार** 96
- A Report on NSS Activities : 2014-2015 **Dr. Purnima Shekhar | Dr. Subhash Pd. Singh** 98
- World Diabetes Day - Awareness Campaign : **Dr. Rekha Kumari** 102
- अनुग्रह साहित्य परिषद् (हिन्दी विभाग) : **वार्षिक प्रतिवेदन** **अध्यक्ष एंव प्राध्यापक हिन्दी विभाग** 103
- **तस्वीरों के आइने में** 106
- **खबरों की सूर्खियाँ** 110
- **कविता** : एहसास और सपने : **चुन्नन कुमारी** जीवन चक्र : **प्रीति प्रिया** 112
- शिक्षा : आधुनिक संदर्भ और ए.एन.कॉलेज :: **शिवनन्दन प्रसाद** 113
- **कविता** : एहसास : **अमरनाथ** सजग ही मानव : **विकास कुमार** 114
- **कविता** : श्रद्धांजलि : **डॉ. कृष्णा सिंह** *Shouting Silences :* ***Preety Priya*** 115
- **कविता** : इन्सानियत का वजूद : **खुशबू कुमारी** कवि : **अमित मिश्रा** 116

'अनुग्रह ज्योति' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका के संपादन से जुड़े सभी पद अवैतनिक हैं।

गांधी-युग के सच्चे जन-सेवक

डा. अनुग्रह नारायण सिंह

गांधी-युग में जितने सच्चे जन-सेवक भारत में हुए, उनमें बिहार के स्वर्गीय डा. अनुग्रह नारायण सिंह प्रथम कोटि में गिने जाते थे। इन्हें जन समाज में "बिहार विभूति" की जो उपाधिक मिली वह अक्षरशः सार्थक था। उनका व्यक्तित्व, उनकी सहृदयता, उनकी सादगी और उनकी लोकप्रियता, सचमुच बिहार की विभूति थी।

✍ डा.जगन्नाथ मिश्र
पूर्व मुख्यमंत्री, बिहार

बिहार विभूति के रूप में प्रसिद्ध तथा अपने प्रियजनों में 'बाबू साहेब' के नाम से विख्यात डॉ॰ अनुग्रह नारायण सिंह का जन्म 18 जून, 1887 को हुआ था। छात्र जीवन के दिनों से ही वे बहुत प्रतिभाशाली थे। 1914 में उन्होंने इतिहास विषय को लेकर एम॰ए॰ किया था और 1915 में भागलपुर के टी॰एन॰जे॰ कॉलेज में वे कुछ दिनों तक इतिहास के व्याख्याता भी रहे थे। 1916 में विधि की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर उन्होंने 1916 के नवम्बर माह से कुछ दिनों तक वकालत भी की थी। उन्होंने देश को आजाद कराने में पूरी शक्ति से अग्रणी भूमिका निभायी। वे स्वाधीनता आंदोलन के महान योद्धा थे। वे स्पष्ट वक्ता के रूप में सादा जीवन और उच्च विचार के लिए जनता में काफी लोकप्रिय थे। स्वाधीनता के बाद राष्ट्र निर्माण तथा जन कल्याण के कार्यों में निः स्वार्थभाव से सक्रिय योगदान करके बिहार के साथ-साथ देश में अपनी विशिष्ट पहचान बनायी। बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह की सरकार में अनेक मंत्रालयों के मंत्री के रूप में इन्होंने कुशल प्रशासक के रूप में ख्याति अर्जित की। वे शीर्ष राजनीतिज्ञ होने के बावजूद जन-साधारण के प्रिय नेता थे और जनता से सीधे जुड़े हुए थे। दीन-दुखियों, गरीबों और बेसहारा लोगों की मदद करना वे अपना धर्म समझते थे। अनुग्रह बाबू सही मायने में गरीबों के मसीहा थे। विधवाओं, अनाथों और निराश्रित लोगों की मदद करने में ही उन्हें सच्चा सुख मिलता था। शिक्षित और अशिक्षित बेरोजगार को रोजगार से लगाने को वे सर्वोच्च प्राथमिकता देते थे। चाहे वह गरीब विद्यार्थियों की शिक्षा का मामला हो अथवा रोगियों के इलाज की समस्या, सभी की मदद करने में वे सदैव आगे रहते थे। वे व्यस्तता के बावजूद जनता से जुड़े रहे और उनकी पहुँच से कभी दूर नहीं रहे। वे रात हो अथवा दिन हर समय जन-सेवा के लिए कटिबद्ध रहते थे तथा जनता को हर संभव सुविधा पहुँचाने का पूरा प्रयास करते थे। वे एक आदर्श व्यक्तित्व के धनी महापुरूष थे, जो अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता, धर्म-निरपेक्षता, प्रशासनिक दक्षता, राष्ट्र-भक्ति और निःस्वार्थ जन-सेवा के लिए जन-जन में बेहद मकबूल थे। आज जरूरत इस बात की है कि युवा पीढ़ी उनके आदर्श जीवन-दर्शन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र-निर्माण के कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाये।

उनकी महानता केवल बिहार-व्यापक नहीं थी, वह देश-व्यापक थी। बिहार सरकार के मंत्री पद ने नहीं, बल्कि राजनीति के द्वन्दपूर्ण जीवन ने उन्हें मानवता प्रदान की थी। यही कारण है कि मंत्री पद तो बहुतों को मिला है, पर वह महानता कहां मिली जो बाबू साहब को प्राप्त थी। मंत्री पद तो उनके लिये जनता

की सेवा का एक मात्र साधन माना था। हम राजा राधिका रमण प्रसाद सिंह के शब्द में कह सकते हैं– ''उन्हें पद तो मिला था पर उनमें मद नहीं आया था।'' बाबू साहब में काम करने की एक अजीब धून थी। वे विकट स्थितियों से घबड़ाते नहीं थे। परिस्थितियां जटिल चाहे जितनी हों, पर वे उन्हें परेशान नहीं कर सकती थीं। वे जटिल–से–जटिल समस्याओं का दृढ़ता के साथ समाधान करते थे।

बिहार में कोई ऐसी योजना नहीं चली थी, जिसे उन्होंने नहीं बनायी हो, बिहार में कोई नया संगठन नहीं हुआ, जिसे उन्होंने नहीं किया हो। सन् 1920 से लेकर मरने के दिन तक प्रांतीय कांग्रेस के वे सहारा थे। राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद ने एक बार यह स्वीकार किया था कि ''मेरे जानते बिहार में कोई भी ऐसा काम नहीं हुआ जिसमें बाबू साहब का हाथ न हो।'' मालूम पड़ता था कि वे शेषनाग की तरह कांग्रेस की शक्ति को अपने माथे पर लिये हुए थे। दिनकरजी के शब्दों में हम कह सकते हैं कि ''सभा, सम्मेलन, जलसा या किसी भी विशाल योजना में जब वे सम्मिलित होते थे, तो वे स्वभावतः उन्हीं कामों को अपने जिम्मे कर लेते थे, जो इंतजाम के काम थे और जिनके पूरे होने से महल की नींव मजबूत होती थी। दीवारों पर अनुग्रह बाबू के नाम नहीं चमकते थे। कंगूरों पर उनकी तस्वीरों नहीं दिखायी देती थीं, और इसलिये अखबारों में भी उनको लेकर शोर नहीं मचाया जाता था। लेकिन, महल बनाने वाले मजदूर जानते हैं कि नींव का गारा बराबर अनुग्रह बाबू के पसीनों से तैयार होता था।''

बिहार में कोई ऐसी योजना नहीं चली थी, जिसे उन्होंने नहीं बनायी हो, बिहार में कोई नया संगठन नहीं हुआ, जिसे उन्होंने नहीं किया हो। सन् 1920 से लेकर मरने के दिन तक प्रांतीय कांग्रेस के वे सहारा थे। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने एक बार यह स्वीकार किया था कि ''मेरे जानते बिहार में कोई भी ऐसा काम नहीं हुआ जिसमें बाबू साहब का हाथ न हो।''

गांधी–युग में जितने सच्चे जन–सेवक भारत में हुए, उनमें बिहार के स्वर्गीय डा॰ अनुग्रह नारायण सिंह प्रथम कोटि में गिने जाते थे। इन्हें जन समाज में ''बिहार विभूति'' की जो उपाधिक मिली वह अक्षरशः सार्थक था। उनका व्यक्तित्व, उनकी सहृदयता, उनकी सादगी और उनकी लोकप्रियता, सचमुच बिहार की विभूति थी। जो कोई एकबार भी उनसे मिल पाता था, वह उनके मधुर व्यक्तित्व से आकृष्ट और प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। सहृदय वे ऐसे थे कि अपने संपर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को कृतज्ञ बना लेते थे। सादगी उनकी ऐसी थी कि वे बिहार सरकार के प्रभावशाली मंत्री नहीं जान पड़ते थे। बिहार की जनता के प्रबल पक्षधर के रूप में उनकी लोकप्रियता की महत्ता वहीं आंक सकता था, जो उन्हें बिहार की जटिल समस्या का हल करने में व्यस्त, तत्पर और चिन्तित देख सका था। ❑

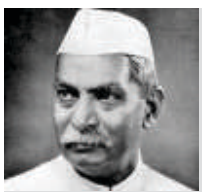

''मेरा परिचय अनुग्रह बाबू से बिहारी छात्र सम्मेलन में ही पहले हुआ था। मैं उनकी संगठन शक्ति और हाथ में आए हुए काम में उत्साह देखकर मुग्ध हो गया और वह भावना समय बीतने से कम न होकर अधिक गहरी होती गई।'' देशरत्न डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

बाबू साहब, जिनकी स्मृतियां अशेष हैं

पूर्ण समाज का विकास तभी संभव होगा जब समाज एकरूप हो, जब योग्यतम व्यक्ति को अवसर मिले भले ही वह किसी जाति का हो, जब प्रत्येक जाति स्वयं को अन्य जातियों की अनुपूरक माने न कि प्रतिद्वन्द्वी, और जब समाज जाति–जाति के खण्डों में बँटा न हो। इसीलिए अतीत के अनग्रह बाबू जैसे जन नेताओं को यादकर मन को सुख मिलता है।

✍ **राम उपदेश सिंह,** पूर्व भा.प्र.से.

बिहार विभूति डॉ॰ अनुग्रह नारायण सिन्हा का नाम बिहार केसरी डॉ॰ श्रीकृष्ण सिंह के साथ आधुनिक बिहार के निर्माता के रूप में आदर से लिया जाता रहा है। और ऐसा क्यों न हो जब इन दोनों शीर्षस्थ सपूतों के कार्यकाल के दौरान ही बिहार राज्य की शुरुवाती दौर में अनगिनत कल्पनाओं को मूर्त्तिमान किया गया?बरौनी में रिपफाइनरी, खाद कारखाना एवं थर्मल पावर प्लान्ट, पतरातू में थर्मल पावर प्लान्ट, बोकारो में स्टील प्लान्ट, राँची में हेवी इन्जिनियरिंग कॉरपोरेशन एवं धनबाद–कलकत्ता में दामोदर वैली कॉरपोरेशन जैसे विशाल परियोजनाओं की स्थापना उस समय के परिवेश की कहानी कहते हैं। जमशेदपुर में टिस्को, टेल्को, टाटा ट्यूब, टिन प्लेट के कारखानों को अगर छोड़ दें, तो प्रारम्भिक विकासोन्मुख परिवेश के बाद डिहरी में रोहतास इन्डस्ट्रीज, कटिहार में जूट की दो मिलें, उत्तर बिहार में चीनी के बहुत सारे कारखाने, इत्यादि कालान्तर में बन्द होते चले गये। इन दोनों नेताओं, जिनकी हम 125वीं वर्षगाँठ मना चुके हैं, उनके कार्यकाल के दौरान इंगलैंड से एप्पलबी टीम आयी थी जिसने विभिन्न राज्यों का दौरा किया था और अपनी रिपोर्ट में, देश के अन्य राज्यों की तुलना में, बिहार के प्रशासन को सर्वश्रेष्ठ बताया था।

बाबू साहब का जन्म औरंगाबाद के पोइयांवां गाँव में एक किसान परिवार में हुआ था और उनकी लोवर प्राइमरी की पढ़ाई वहीं हुई। उस समय के जमींदारों में बच्चों की पढ़ाई के प्रति उदासीनता के कारण, अनुग्रह बाबू की शिक्षा–दीक्षा का क्रम, सर गणेशदत्त की भाँति, विलंबित हुआ। बाबू साहब ने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से सन् 1908 में एन्ट्रेन्स (प्रवेशिका) परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास किया। बाद में, उन्होंने बी.ए. की पढ़ाई पटना में की और उसके बाद सन् 1915 में कलकत्ता यूनिवर्सिटी से ही इतिहास में एम.ए. एवं बी.एल. किया। भागलपुर के टी.एन.जे. कॉलेज में इतिहास के शिक्षक के रूप में जीवन का प्रारम्भ किया और 1916 में पटना आकर वकालत शुरू की। अगले वर्ष 1917 में राज कुमार शुक्ल के आह्वान पर चम्पारण आकर महात्मा गाँधी द्वारा नीलहों के ख़िलाफ़ आरम्भ किये गये सत्याग्रह में गाँधीजी को बिहार के जिन सात महानुभावों ने सहयोग दिया था उनमें ब्रज किशोर प्रसाद, राजेन्द्र बाबू, अनुग्रह बाबू एवं शम्भू बाबू शामिल थे, जिन सब की प्रशंसा बापू ने स्वयं अपनी आत्मकथा में मुक्त कंठ से की है। चम्पारण सत्याग्रह का महत्व इसलिए सुस्थापित हुआ क्योंकि गाँधीजी द्वारा शुरू की गयी

आज़ादी की लड़ाई का यह प्रथम चरण था, जिसकी इन्तिहा 15 अगस्त 1947 को हो गयी, ठीक उसी तरह जैसे सिपाही मंगल पाण्डे को अंग्रेजों द्वारा फाँसी दिये जाने के बाद सुलगे 1857 के विद्रोह को वीर सावरकर द्वारा स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध की संज्ञा दी गयी थी।

सन् 1920 की बात है। बाबू साहब आरा के अपने मित्र पारसनाथ त्रिपाठी के साथ गया जिले का परिभ्रमण करने के बाद 15 दिसंबर की रात को सड़क मार्ग से पटना लौट रहे थे कि अरवल के पास एक भीषण सड़क दुर्घटना घटी जिसमें त्रिपाठी जी की तो मौत हो गयी और बाबू साहब गम्भीर रूप से घायल हो गये। नाजुक स्थिति में सड़क से उन्हें पटना लाने में जो उनकी जान को ख़तरा था, उसे देखते हुए उन्हें सोन–गंगा के रास्ते स्टीमर से पटना मेडिकल अस्पताल लाया गया और सघन उपचार के बावजूद बहुत दिनों के बाद ही वे चंगे हो सके। स्त्री–रोग विशेषज्ञ, डॉ॰ शान्ति एस. बी. सिंह के पिता डॉ॰ महेश्वरी बाबू ने बाबू साहब की ख़ास देखभाल की थी, जिसकी याद अभी तक उनके परिजनों के हृदय में विद्यमान है। इस प्रकार ईश्वर की कृपा एवं समुचित उपचार से भविष्य की संभावनाओं से परिपूर्ण एक व्यक्तित्व की जान बचायी जा सकी थी।

बाबू साहब ने बिहार को ही अपनी कर्मभूमि बनाया और वे बिहार के बाहर यदा कदा ही जा सके। सन् 1935 के कानून के अधीन सम्पन्न चुनावों के बाद बिहार में कांग्रेस पार्टी की सरकार श्री बाबू के नेतृत्व में बनी जिसमें बाबू साहब ने वित्त सहित कई विभागों के मंत्री का दायित्व सँभाला। इसके पूर्व उन्होंने सन् 1934 के जनवरी में

आये भीषण भूकम्प के बाद लोगों को राहत पहुँचाने के काम में भी मुस्तैदी के साथ अपना हाथ बँटाया। सन् 1934 में राजेन्द्र बाबू अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये और इधर जब बिहार राज्य कांग्रेस कमिटी का गठन हुआ उसमें श्री बाबू अध्यक्ष और बाबू साहब महामंत्री बनाये गये थे। उसी दौरान बाबू साहब शाहाबाद–पटना चुनाव क्षेत्र से केन्द्रीय एसेम्बली के सदस्य चुने गये थे। बाद में वे संविधान सभा के सदस्य बने और कांग्रेस के कार्यकलापों से जुड़े रहे। पं॰ जवाहरलाल नेहरू ने एकाधिक बार बाबू साहब को अपने साथ कार्य करने का प्रस्ताव दिया लेकिन बाबू साहब ने नम्रतापूर्वक बिहार में ही जनसेवा करते रहना पसन्द किया। उन्होंने 'बोलिये कम और काम करिये ज़्यादा' की नीति के साथ–साथ संगठनात्मक कुशलता को अपने जीवन में उतारा। वे कांग्रेस पार्टी के सम्मेलनों में तन्मयता से भाग लेते रहे। गया में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में भी बाबू साहब का विशेष योगदान रहा था। रामगढ़ में कांग्रेस का अधिवेशन सन् 1940 में हुआ था जिसमें राजेन्द्र बाबू की अस्वस्थता के कारण बाबू साहब ने ही उसके सफल संगठन में अपना अपना दायित्व निभाया था। सन् 1946 में दूसरी बार कांग्रेस का मंत्रिमंडल बना जिसमें फिर से श्री बाबू प्रधान मंत्री एवं बाबू साहब वित्त मंत्री बनाये गये। आज़ादी के बाद आई.एल. ओ. के सम्मेलन में बाबू साहब भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में विदेश यात्रा में जेनेवा भी गये और प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। बिहार मंत्रिमंडल में श्रम मंत्री की हैसियत सें उन्होंने श्रमिकों की समस्यायों के निराकरण के लिए अनेक त्रिपक्षीय समितियों का गठन किया था साथ ही श्रम संबंधी कानून में अनुपलब्ध प्रावधानों की कमी दूर करने के लिए प्रक्रियायों का निर्धारण किया था जिनका सदुपयोग आज तक किया जा रहा है। सत्तर के दशक में बिहार के श्रम सचिव के रूप में मुझे ऐसी सारी व्यवस्थाओं से रूबरू होने और उनका लाभ उठाने का अवसर मिला था।

भारतीय संविधान के लागू होने के बाद 1952 में श्री बाबू के मुख्यमंत्रित्व में जो मंत्रिमंडल बना उसमें बाबू साहब वित्त विभाग के अलावा कुछ और विभागों के भी प्रभारी मंत्री रहे। दोनों नेताओं में प्रचुर वैयक्तिक घनिष्ठता थी और राज्य के प्रशासन में वे एक–दूसरे के सम्पूरक बने रहे। विधि के विधान के तहत इन दोनों नेताओं के बीच सन् 1957 में नेता पद के लिये चुनाव हुआ जिसमें श्री बाबू जीत गये। चुनाव–फल घोषित होने के बाद बाबू साहब श्री बाबू के निवास पर उनसे मिलने गये। दोनों मित्र सब कुछ भूल कर गले मिले और ऐसी अश्रु–धार बह चली कि अगर कोई शिकवा–शिकायत रही थी, वह पूर्णतः धुल गयी। उन दोनों नेताओं की महानता इतनी कि उनमें मनभेद कभी नहीं रहा। बिहार का हित चाहने के मायने में दोनों के बीच 'को बड़ छोट कहत अपराधू' की स्थिति थी। सन् 1957 में उसी मंत्रिपरिषद में जिसके लिये हुए नेता पद के चुनाव में उन्होंने भाग लिया था, बाबू साहब द्वारा वित्त मंत्री पद को स्वीकारना उनके सुपुत्र, छोटे साहब के साथ ही कुछ अन्य लोगों को पसन्द नहीं आया था। लेकिन बिहार के हित में बाबू साहब को जो करना था उन्होंने वही किया था।

उसी वर्ष 18 जून को बाबू साहब का 70वां जन्मदिन मनाने के बाद उनके निवास के कक्ष में एक नई दरी बिछायी गई जिसके ऊपर से कॉल–बेल का लम्बा तार गुज़रता था और इस प्रकार तार में पाँव पफँसने की आशंका थी। लोगों ने चाहा कि दरी में दो छेद करके तार को दरी के नीचे कर दिया जाय ताकि कोई ख़तरा न हो, लेकिन बाबू साहब ने इसका अनुमोदन इसलिए नहीं किया कि छेद करने से सरकारी दरी ख़राब हो जायेगी। जैसा कि बाद की घटनाओं से संपुष्ट हुआ, इस छोटी–सी घटना में ही आने वाले समय का वक्र रूप छिपा था। जून 1957 के अंत में, एक दिन जब बाबू साहब उस दरी को पार कर रहे थे कि उनका पाँव टेलिफोन के उसी तार में फँस गया, और वे गिर गये तथा गम्भीर रूप से घायल हो गये। उन्हें पटना मेडिकल कॉलेज अस्पताल पहुँचाया गया और उनके इलाज की हर व्यवस्था की गयी लेकिन उनकी हालत उत्तरोत्तर बिगड़ती ही गयी। 5 जुलाई, 1957 को रात साढ़े ग्यारह बजे उन्होंने अन्तिम सांस ली ओर कबीर के निम्नलिखित दोहे को पूर्णतः चरितार्थ करते हुए इस दुनिया से अपनी चिर यात्रा पर कूच कर गये –

कबिरा जब तुम पैदा हुए, जग हँसा, तुम रोये,
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो, जग रोये।

मैंने स्वयं देखा तो नहीं लेकिन कल्पना कर सकता हूँ और सुना भी हूँ कि सचमुच जब बाबू साहब की अर्थी अन्त्येष्टि क्रिया के लिए निकली तो हज़ारों शोकार्थियों की आँखें नम हो गयी थीं एवं बाबू साहब के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में उनके अमिश्रित अश्रुकण ही समर्पित हो रहे थे। कुछ तो फूट–फूटकर रोये थे। ऐसा सौभाग्य कितनों को मिलता है?जहाँ तक मुझे स्मरण होता है, कालान्तर में मैंने श्मशान घाट पर स्वयं कुछ इसी तरह के ग़मगीन माहौल में शोकार्थियों की आँखों में आंसू देखा, जब ललित बाबू, अम्बिका बाबू, चन्द्रशेखर बाबू, त्रिपुरारी बाबू, दारोगा बाबू, कर्पूरीजी, शंकरदयाल बाबू, डॉ॰ शिव नारायण सिंह एवं सत्येन्द्र बाबू को अन्तिम विदाई दी जा रही थी। ये सब ही ऐसे महनुभाव थे जिन्होंने अपने जीवन–काल में मुझपर स्नेह व विश्वास दर्शाते हुए मुझे एक पुष्प की तरह अपने हाथों पर रखा था। इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही मानता हूँ कि वे सभी असमय दिवंगत हो गये।

स्मरणीय है कि 5 जुलाई 1957 की सन्ध्या में बाबू साहब मृत्यु–शैया पर पड़े थे। शायद उन्हें मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था।

लोग अन्दर ही अन्दर रोने–धोने लगे थे। मैंने ब्लिट्ज के प्रसिद्ध पत्रकार और मेरे अग्रजसम, अरुण रॉयचौधुरी से यह सुना था कि किसी तांत्रिक ने कुछ प्रसाद यह कहते हुए दिया था कि अगर बाबू साहब उसे ग्रहण कर लें तो उनकी जान बच जायेगी। लेकिन परिस्थितियों का जाल या विधि का विधान ऐसा था कि अकारण या सकारण बाबू साहब उस प्रसाद को ग्रहण नहीं कर सके थे।

बाबू साहब बिहार के समादृत नेता, बीरू बाबू ;बीरचन्द पटेल को पुत्र की तरह स्नेह देते थे। नतीजतन, छोटे साहब का भी बीरू बाबू के साथ पारिवारिक संबंध था और वह बीरू बाबू को अपना बड़ा भाई मानकर सम्मान देते थे। उस काली रात, अपनी मृत्यु के कुछ पहले, बाबू साहब ने सत्येन्द्र बाबू को अपने पास बुलाकर कहा, 'छोटे, ज़रा बीरू को बुलाओ।' जब बीरू बाबू निकट आये तो बाबू साहब ने उनसे कहा, 'बीरू, अब मैं जा रहा हूँ, तुम पर सारी जिम्मेवारी छोड़कर। तुम सबका ख्याल रखना।' बाद में बाबू साहब ने छोटे साहब से भी कहा, 'छोटे, तुम किसी बात की चिन्ता मत करना, मैं तुम्हें अपनी सारी शक्ति दिये जा रहा हूँ। तुम्हें कभी कोई तकलीफ़ नहीं होगी।' इसी तरह से, बाबू साहब के विशेष स्नेह–पात्र रहे उनके पौत्र, निखिल कुमार रोते हुए जब अपने बाबा के पास गये थे तो उन्होंने कहा था, 'बउआ, तुम रोते क्यों हो?तुम अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करना। बड़ों का आदर करना। ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने की नीति अपने जीवन में अपनाना।' निखिलजी ने अपने बाबा की बात की गाँठ बाँध ली और उनके व्यवहार में यह प्रवृत्ति देखकर बाबू साहब से मिली सीख की छाप दिख जाती है। बाबू साहब के देहांत के बाद, श्री बाबू संतप्त परिवार को सान्त्वना देने आये और कहा था, 'अनुग्रह बाबू की जगह अब मैं हूँ।'

इसे विधि की विडंबना ही कहा जा सकता है कि 1963 में जब बिनोदा बाबू का इस्तीफ़ा कामराज योजना के तहत स्वीकार कर लिया गया और बिहार में नये नेता के चुनाव का समय आया तो छोटे साहब बीरू बाबू के विरोध में खड़े कृष्ण बल्लभ बाबू के पक्ष में हो गये। इस बात को लेकर कुछ लोग छोटे साहब की आलोचना करने में नहीं हिचकते। लेकिन अगर इस मामले की जड़ में जायें तो इसकी तह में बीरू बाबू एवं छोटे साहब की अपने–अपने सिद्धान्त के लिए प्रतिबद्धिता ही देखने को मिलेगी। उनका सिद्धान्त मित्रता पर भारी पड़ा था। हुआ यह था कि कुछ समय से शिक्षा मंत्री सत्येन्द्र बाबू एवं मुख्यमंत्री बिनोदा बाबू के बीच कुछ बातों को लेकर आपसी मतभेद गहराता गया था, यहाँ तक कि वे मंत्री पद से इस्तीफा तक देने की बात सोचने लगे थे। छोटे साहब ने अपने मन की व्यथा तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री, लालाबहादुर शास्त्री को बता दी जब वे एक भारतीय प्रतिनिधि के उपनेता के रूप में काबुल की यात्रा पर जा रहे थे। जब छोटे साहब काबुल में ही थे तभी उन्हें कामराज–योजनांतर्गत बिनोदा बाबू का इस्तीफा स्वीकार किये जाने का समाचार मिला। छोटे साहब तुरत दिल्ली होते हुए पटना वापस आ गये। इधर बिनोदा बाबू ने नेता पद के लिए बीरू बाबू को अपना नॉमिनी घोषित कर दिया था और कृष्णबल्लभ बाबू नेता पद के लिए दूसरे प्रतियोगी बन गये थे। पटना पहुँच कर छोटे साहब बीरू बाबू

से मिले और कहा, 'भैया, अगर आप बिनोदा बाबू के नॉमिनी के बदले स्वतंत्र रूप से लड़े तो मैं आपका अपनी पूर्ण शक्ति के साथ समर्थन करूँगा और आपको जिताऊँगा।' बीरू बाबू ने कहा कि वे ऐसा नहीं कर सकेंगे क्योंकि वे बिनोदा बाबू का विश्वास व भरोसा नहीं तोड़ सकते। ऐसी स्थिति में छोटे साहब ने अपनी पूरी शक्ति कृष्णबल्लभ बाबू के पक्ष में लगा दी, जो दो–तिहाई मतों से जीत गये। लेकिन छोटे साहब चुनाव स्थल पर बीरू बाबू को देखकर इतनी ग्लानि से भर गये कि वे घर आकर अपने को कमरे बन्द कर लिया। यहाँ तक कि चुनाव जीतने के बाद उनसे मिलने आये कृष्णबल्लभ बाबू से भी वे नहीं मिले। दूसरे दिन बीरू बाबू के घर जाकर उनसे माफी माँगी और अपना संबंध पूर्ववत् करने का प्रयास किया पर विरोध की टीस उन्हें आजीवन सताती रही। बीरू बाबू एवं छोटे साहब में अपने–अपने सद्धान्त के प्रति असीम प्रतिबद्धता थी। अगर छोटे साहब भी सिद्धान्त में अपनी प्रतिबद्धता त्याग कर कृष्णबल्लभ बाबू के विश्वास और भरोसे को तोड़ सकते तो 1966 में ही बिहार के मुख्यमंत्री बन सकते थे। हुआ यह था कि कांग्रेस हाई कमान, जो नेता पद के के लिए कृष्णबल्लभ बाबू के पक्ष में नहीं रहा था, बाद में इन्दिराजी से छोटे साहब को यह फीलर मिला था वे कृष्णबल्लभ सहाय का साथ छोड़कर स्वयं मुख्यमंत्री का भार सँभालें। लेकिन जिस तरह बीरू बाबू सिद्धान्त को त्याग कर स्वार्थवश बिनोदा बाबू के विरोध में नहीं जाना चाहे थे, उसी तरह छोटे साहब ने भी इस बार कृष्णबल्लभ बाबू की पीठ में छूरा भोंकने से परहेज किया। इस तरह बीरू बाबू और सत्येन्द्र बाबू, ये दोनों कद्दावर नेता आज हमें अपनी–अपनी नैतिकता पर आधारित कद की ऊँचाई का कयास लगाने को बाध्य करते हैं।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. एस. सी करने के बाद जुलाई 1958 में मेरा नाम इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के एम. एस. सी. गणित में लिखाया गया और एम. एस. सी. (प्रीवियस) के छात्र के रूप में मुझे वहाँ के मशहूर म्योर हॉस्टल (अमरनाथ झा छात्रावास) में कमरा मिल गया, जहाँ निखिल कुमार बी. ए. फाइनल के छात्र के रूप में पहले से ही रह रहे थे। वहीं उनसे मेरी पहली मुलाक़ात हुई और बाद के वर्षों में हमारी मित्रता परवान चढ़ती गयी। इसको लोकप्रिय निखिलजी के व्यक्तित्व का ही निरालापन कहिये कि हॉस्टल के दिनों में उन्होंने

स्वयं को अनुग्रह बाबू के पोता या सत्येन्द्र बाबू के पुत्र के रूप में कभी प्रोजेक्ट नहीं किया। जब जनवरी 1961 में मैं आई. ए. एस. के इन्टरव्यू के लिए दिल्ली गया तो अपने पितातुल्य अभिभावक ठाकुर जमुना प्रसाद सिंह के पंडारा रोड स्थित एबी–11 निवास के बदले, निखिलजी के कहने पर छोटे साहब, जो उस समय लोक सभा के सांसद थे, उनके 9 कैनिंग लेन स्थित आवास में ही ठहरा था।

बाबू साहब का दरबार हर स्तर के आगन्तुकों के लिए हमेशा खुला रहता था। व्यक्तित्व इतना सरल कि उनके आवास के कमरे आगन्तुकों से भरे रहते थे। वे अपनी फाइलें भी पूर्ण पारदर्शिता के साथ निबटाते थे। उनके कमरे में चपरासी से लेकर अफसर तक सभी एक साथ प्रतीक्षा करते पाये जाते थे। बाबू साहब को क्रोध से किसी पर ग़रजते हुए कभी नहीं पाया गया। जब वे किसी के व्यवहार से असन्तुष्ट होते तो स्वभावतः उसपर अपनी अनिच्छा व्यक्त करने के लिए कमरे से बाहर निकल जाया करते थे। उनकी निश्छल मुस्कुराहट में ग़ज़ब का माधुर्य तथा आकर्षण था। उनके प्रशंसकों में हर जाति व वर्ग के लोग रहते थे। सच ही कहा गया है कि जहाँ राजा प्रजा की तरह रहता है, वहाँ प्रजा को राजा की तरह रहने का अवसर प्राप्त हो जाता है। वस्तुतः 'राजा नहीं पफ़कीर है, देश की तक़दीर है' का नारा सर्वाधिक अनुग्रह बाबू पर ही चरितार्थ होता है। यदि बाबू साहब के क्रम में उनकी तीन पीढ़ियों पर दृष्टि घुमायी जाये, जिसमें सत्येन्द्र बाबू–किशोरी सिन्हाजी, तथा निखिल कुमार–श्यामा सिंह शामिल हैं, जो सभी पूर्व सांसद हैं, तो यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भारत के क्षितिज में जो स्थान नेहरू परिवार का है, बिहार के क्षितिज में वही स्थान अनुग्रह बाबू के परिवार का है।

. यहाँ बिहार में व्याप्त जातिवाद की व्यवस्था की पृष्ठभूमि में एक बात का उल्लेख करना समीचीन होगा। पूर्वकाल के सभी नेता समाज की प्रत्येक जाति, प्रत्येक वर्ग के हित को समेकित रूप से साधने के लिए प्रयासरत होते थे जब कि बाद के अधिकांश नेता, समाज को तो छोड़ ही दें, अपनी जाति विशेष का समेकित हित भी साधने में असफल पाये जाते रहे हैं। मेरी समझ से समाजवादी नेताओं में कर्पूरीजी के अलावा शायद ही कोई अन्य उच्च पदस्थ नेता आये हों जो जातिवाद से ऊपर उठकर समेकित समाज को एक मानकर चलने में सक्षम हुए हों। यदि जातिप्रथा अमृत है तो जातिवाद विष होता है। किसी जाति विशेष के चन्द लोगों को लाभ पहुँचाने मात्र से, पूरे समाज को तो छोड़ ही दें, उस जाति का समेकित हित भी सिद्ध नहीं होता बल्कि उसमें विषमता ही प्रबलतर होती जाती है। ठीक ही कहा गया है कि पहले बनती हैं तक़दीरें फिर बनते हैं शरीर, फिर भी उच्च पदस्थ लोग अपनी किस्मत को काबिलियत मान बैठते हैं। पूर्ण समाज का विकास तभी संभव होगा जब समाज एकरूप हो, जब योग्यतम व्यक्ति को अवसर मिले भले ही वह किसी जाति का हो, जब प्रत्येक जाति स्वयं को अन्य जातियों की अनुपूरक माने न कि प्रतिद्वन्द्वी, और जब समाज जाति–जाति के खण्डों में बँटा न हो। इसीलिए अतीत के अनग्रह बाबू जैसे जन नेताओं को यादकर मन को सुख मिलता है।

. वर्ष 2012 अनुग्रह बाबू की 125वीं जयन्ती का वर्ष था जिसे उत्त्साहपूर्वक मनाने के लिए बिहार सरकार में कोई सुगबुगाहट नहीं दिखी। बाबू साहब का शताब्दी वर्ष 1988 में मनाया गया था और उस समय उनकी जीवनी, 'मेरे संस्मरण' को पुनर्मुद्रित कराने के साथ ही उनपर अनेकानेक महवनुभावों के संस्मरण भी 'बिहार विभूति – व्यक्ति और कृति' के नाम से प्रकाशित कराये गये थे। यह हर्ष ही बात है कि शायद अभिलेखागार द्वारा 'मेरे संस्मरण' का तृतीय पुनर्मुद्रण कराया गया है। उपरोक्त दोनों पुस्तकों को दर्जनों महानुभावों को समुपलब्ध करने का अवसर मुझे मिला था क्योंकि उस समय सौभाग्यवश मंत्रिमंडल विभाग के आयुक्त–सह–सचिव के रूप में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में गठित राज्य स्तरीय समिति का मैं ही सदस्य–सचिव था।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की निम्नांकित पंक्तियां क्रमशः वीर कुँवरसिंह –बाल गंगाधर तिलक–श्री अरविन्दो–भगतसिंह–नेताजी सुभाषचन्द्र बोस–चन्द्रशेखर आज़ाद, नेहरूजी, गाँधीजी की स्मृतियों को ताज़ा करती ही हैं, साथ ही अन्तिम दो पंक्तियां बाबू साहब पर भी सटीक बैठती हैं –

कुछ आये शर–चाप उठाये, राग प्रलय का गाते,
मानवता पर पड़े हुए पर्वत की धूल उड़ाते,
कुछ आये आसीन अनल से भरे हुए झोंकों पर, गाँथे हुए
मुकुट–मुण्डों को बरछों की नोकों पर, कुछ आये तोलते कदम को
मणि–मुक्ता सोने से, कुछ आये बाँधते जगत का मन,
जादू टोने से, दान दक्ष अंजलि में सबके लिए, लिये कल्याण,
सहज धीर गति से आये बस एक तुन्हीं गुणवान।

अन्त में, बाबू साहब की पावन स्मृति के प्रति श्रद्धा–सुमन के रूप में अपनी समय–शिला शीर्षक की एक कविता की निम्नांकित कुछ पंक्तियों को उद्धरित करते हुए मैं अपनी लेखनी को विराम देता हूँ –

हुए कुछ ऐसे भी व्यक्तित्व, धरे जो जनसेवा की डोर, एक परमार्थ भाव में लीन, दूसरे रहे दूसरी छोर, प्रथम की आती है जब याद, शीश नमता, नम होते नेत्र, प्रफुल्लित है सन्तति, कर याद, धर्म श्रम त्याग कर्म के क्षेत्र। मिट्टी से ही निकले सब थे, जा मिट्टी में ही समा गये, जो कुछ पाया–खोया जग में, सब समय–शिला को थमा गये। ❑

Dr. Kamesh Kumar

REVIEW AND OPTIONS

GLOBAL TRENDS IN EDUCATION

Traditional educational institutions played a greater in this regard. The worst sufferers are the students receiving in regional languages in underdeveloped areas.The above issues need to be discussed and analysed in their various aspects to develop better understanding of the global trends and their desirability.

Education is now universally considered to be the next most important investment after healthcare in any society. There exists a direct relationship between sufficiency and suitability of educational institutions and economic development. Nations and states which have made adequate and focused investments in education for their citizen, today occupy a higher rank in the community of nations. However under the impact of globalisation, the educational system world over is undergoing continuous changes as a consequence of new international agreements, redefinition of the trade and intellectual property rights conditions, innovations in information and communication, application of new technologies and the structural changes in the labour market.

Now the question is whether we are prepared to reap the benefit of emerging opportunities arising out of far reaching changes in educational system? In the process of development it has been observed that educational systems whether formal or informal, undergo a swift shift in their course content as well as management structure. In the traditional societies education is largely concerned with transmission of received knowledge for maintenance of broad societal consensus and existing pattern of differentiations. In the modern societies which have achieved higher growth this pattern may not disappear completely but there is always a greater emphasis on using these institutions as agencies for dissemination of appropriate skill and knowledge to support the rapidly changing labour market .This becomes important in the context of socially, economically and geographically disadvantaged groups like Muslim minorities in traditional educational institutions like madarsas .Similarly the issue of gender equality in sharing opportunities also requires our attention.

With transplantation of the western educational system in the former colonies in the late 19th century the

vernacular or the indigenous form of education which laid greater emphasis on local need based knowledge, culture and religion started dying a slow death. This shift however proved to be an important element in transferring modern skill and knowledge along with organisational framework for creating environment and capacity for absorbing greater degree of scientific and technological innovations. In the modern world there has to be greater effort in redefining our educational needs and patterns.

On account of structural changes taking place in the world economy, dismantling of entry barriers and greater infusion information and communication technologies in educational institutions education has become invaluable to individuals as it provides better opportunities for understanding of business process, legal system, culture and languages which are so vital to their employment as well as social status.

"Internationalisation of education is now becoming a reality. This is seen as a threat to local culture, values and traditional & local knowledge"

Global trend in education is not uniform .It varies in coverage, content quality and access in different societies. Generally the developed nations follow a policy of inclusive education with a dominant role of the public authority up to high school level but private investment on non profit basis is dominant at the higher educational level. There is also a system of quality control through accreditation and monitoring. In most of the developing countries the States have taken upon themselves the responsibilities of providing low cost education at the school as well as at the higher level. This policy is influenced more by political rhetoric rather than reality. The result is that a very large number of children are outside the formal school system and the higher education institutions are in deep crisis. The huge unemployment among the educated persons in South Asia or elsewhere reflects the poor quality or suitability of education. These facts naturally raise a number of issues which contain the answers to desirability and sustainability of our educational system in the light of changing global trends. In this context the global trends of education can be examined in the following categories:

Expansion, Access and Inclusion :

Access generally refers to removal of entry barriers. Cost of education and location or distance is two important barriers especially for the socially, economically and geographically disadvantaged sections of society. The gross enrolment ratio reflects the inclusion of the different sections of population. Innovations have to to incorporated to include minorities or marginalised sections in the mainstream system of education. When adequate institutional coverage is available through proper planning it will lead to inclusion of the focused groups. Inclusion of religious and linguistic minorities is influenced by communities' perception regarding opportunities for preservation of their language and culture within any system. Although there has been considerable expansion and coverage of educational institutions in developing countries yet a large number of students remain outside the formal education system. This needs to be studied in details to help design policy for greater access and inclusion specially of disadvantaged groups like minorities, women and dalits.

Investment and financing:

Investment in education is key to the process of economic development. Traditionally in most of the countries investment in education came from State or philanthropists. But now there is greater instances of public-private partnership and private investment both at the national as well as international levels and there is now mixed motive of investment -- private non profit and private profit motive. Role of corporate sector in education is also increasing. Such investments raise issue of ethics and equity. Communities contribution to the development of suitable educational institutions specially in the educationally deficit areas is also an important issue which needs to be assessed.

Suitability, relevance and quality:

Educational institutions are established to achieve defined objectives. Mass based public or private institutions primarily aim at providing knowledge and skills for employment in different sectors of the national or

international market. They offer uniform pattern of education for diverse social and cultural groups. These institutions undergo constant changes to maintain their suitability and purpose- fullness. Indigenous or traditional institutions resist innovation or change in the content or the delivery system affecting the relevance of such institutions. As alternative system of education do they develop employable skill? Apart from the question of relevance, maintenance of quality of education is also an important issue. This demands identifying elements of quality assurance in education and analysing inter-institution or inter-system variations. This will be helpful in improving quality and excellence. All these must be examined in the context of formal, non formal and traditional religious schools which co exist in most south Asian countries.

Governance and ownership:

Educational institutions cater to different needs and accordingly they are organised and administered differently. These institutions can be categorised as formal, informal, traditional religious, public and private. This categorisation reflects the different patterns of governance and ownership .Generally the formal educational institutions at school levels are organised under centralised public authorities. These institutions have less local orientation or the scope of stakeholder's participation. On the other hand informal and traditional religious schools (such as madarsa or pathshalas in India) are community administered and play a greater role in preservation of culture and values. However these schools are also closely controlled by individuals or groups and they do not have much scope for innovation and reform. Any system that does not allow stakeholders participation or innovation needs to be redesigned and re defined.

Application of ICT and delivery methodology :

In developed economies educational methodology is undergoing a revolutionary change through extensive adoption of information and communication technologies. This has given them edge over others in developing a better teaching learning process. The educational institutions in developing countries on the other hand find it difficult to adopt ICT on account resource constraints, poor infrastructure and awareness level. Despite these severe limitations there is some effort in adopting new technologies in the institutions located primarily in urban areas. This is however creating rural-urban divide as well as divisions between haves and has not. Such divisions create a shadow over creation of an inclusive society.

Capacity building through Collaboration and Sharing :

There has been increasing trend of institutional capacity building through collaboration and sharing at local or international levels. While the developed nations are taking full advantage of this opportunity but the developing nations are finding it difficult to take advantage of inter institutional or international collaborations partly due to their regulatory system and fear of loosing the traditional system of teachinglearning methodologies. Under the new system emphasis shifts from transfer of received knowledge to options to acquire appropriate information and to process the same to covert knowledge and skill into applications. The issues of entry and regulation in the context of internationalisation of education also become important.

Role of culture and values in educational system :

Internationalisation of education is now becoming a reality. This is seen as a threat to local culture, values and traditional & local knowledge as increasing market oriented educational curriculum is gaining wider acceptability and at the same time creating urban-rural divide as well as marginalising the weaker sections who have failed to adapt these changes. There is now greater emphasis on preparing students to excel in 'urban future' rather than developing understanding of their local social and physical environment, inter personal relationship, their cultural heritage and values. Traditional educational institutions played a greater in this regard. The worst sufferers are the students receiving in regional languages in underdeveloped areas.The above issues need to be discussed and analysed in their various aspects to develop better understanding of the global trends and their desirability. ❑

❍ Prof. of Economics, A.N.college, Patna

Use of Constructed Waterland Based System for Waste Water Treatment

The main objective of the present research work is to provide a simple, feasible, practically sound, eco-friendly and cost effective technology which can handle the waste water treatment leading to use of treated water gainfully.

Dr. Bihari Singh

Constructed wetlands are artificial waste water treatment systems consisting of shallow experimental tanks, ponds or channels that are planted with locally available wetland plants. They work on natural capacity of plant to treat waste water from different sources.

Indian cities and their suburbs contribute immensely to the deterioration of water quality of nearby water bodies mainly because of the population explosion, industrialization and changing lifestyle of the urban people. Many of the cities have been provided with waste water treatment systems but municipalities have not been able to maintain and run the system properly leading to deterioration of nearby water bodies used as sink for waste water of the towns and cities.

In view of rising concern about pollution of water bodies due to discharge of aste water in them , it has been felt necessary to initiate the process of alternative thinking as the conventional methods have had limited success. The application of specifically designed wetland based technology for treatment of waste water municipal, industrial, urban and agriculturist is becoming widely acceptable in recent years. Numerous works by NEERI-CSIR (India) and a few Indian researchers are available now describing efficient functioning of constructed wetland systems. In past few years NEERI has constructed a number of artificial wetland based treatment plants in the government and university centers in the cities of Mumbai, Baroda and some other cities of Maharashtra and Gujarat states. However, such research works on artificial wetland based systems developed with locally available wetland plants have not yet been taken up in the state of Bihar.

The main objective of the present research work is to provide a simple, feasible, practically sound, eco-friendly and cost effective technology which can handle the waste water treatment leading to use of treated water gainfully.

ABOUT PHTORID TECHNOLOGY:

Phytorid Technology is re-engineered advanced wetland technology for sewage and waste water treatment with negligible maintenance cost. The system can be accommodated in any suitable place and design matching the landscape and garden. It can be used for secondary and tertiary treatment of Municipal waste water, sludge management, treatment of industrial or agricultural effluent and also for landfill leachates.

The system can be used in nodes to avoid pumping of waste water in case of uneven areas. The treated water from PHYTORID TECHNOLOGY complies with the regulation laid down by CPCB and MPCB (Table IV fresh water category).

The PHYTORID TECHNOLOGY effectively removes Suspended solids, BOD (Biochemical Oxygen Demand), COD (Chemical Oxygen Demand), Total Nitrogen, Phosphate and Fecal Coliform. The PHYTORID TECHNOLOGY qualifies for “GREEN RATING CREDITS” by IGBC under water efficiencies.

The PHYTORID TECHNOLOGY allows reuse of gray water up to 95%.

Salient Features -

- Included in National Environmental Policy
- No odor and mosquito nuisance
- Aesthetically Designed
- Easy to maintain
- Works without Electricity
- Self sustainable unit
- Scalable Design
- Combines Physical, Biological and chemical process

NEERI -CSIR has to its credit international patents noted below:

P.C.T. WO 2004/087584 A1, 2005

Australian Patent No. AV 2003 22.3110 A1, 2005

THE RESEARCH WORK UNDERTAKEN AT A. N. COLLEGE, PATNA

A team of researchers under the guidance of Dr. Bihari Singh and in collaboration with the scientists of NEERI-CSIR Mumbai including Dr. Rakesh Kumar, Chief Scientist & Head, CSIR NEERI, Mumbai has undertaken following components of the present research work: It is being carried out under a Memorandum Of Understanding (MOU) signed between CSIR-NEERI, Mumbai and A. N. College, Patna for collaboration in research activities in various areas in accordance with their respective needs and objectives.

i. Survey of literature to compile some common wetland plants found in wetlands of Bihari. The literature survey has revealed that most of the wetlands in Bihar show various types of floral and faunal diversity. The common aquatic plants to be found in Bihar are Eichhornia, Hydrilla, Azolla, Typha, Colacassia, Ipomoea aquatic, Lemna major, Marshilla, Pisia cerotophyllum etc. The characteristics of these plants with regard to the uptake of various types of pollutants are also being compiled for their efficiency to be ascertained by our team.

ii. With the financial support of M/S Alaknanda technologies Pvt. Ltd, K-3, Krishna Ganga, Din Dayal Road, Dombivli (W) Thane, Maharastra 421202, which is one of the agencies to which NEERI has transferred the technology for implantation and marketing, an artificial wetland system has been developed in the premises of A. N. College, Patna.

In the constructed wetland system following studies are being carried out.

a. To begin with the efficiency of the following three wetland plants Canna, Typha and Colacassia are being studied with regard to the removal from waste water the following physico-chemical and biological parameters Suspended Solid, BOD, COD, Total Nitrogen, Phosphate and Faecal Coliform.

b. Study on-

- Hydraulic profile design with varying retention time with the lowest volume requirement.
- Use of alternative material for physical and chemical process of the wastewater treatment such as stones of different origin with a view to assess their absorbing capability.
- Study of plants and their integration with the design of the wetland system.

- Flow mechanism and its impact on the roof system working of different plants.

The initial results of the study are encouraging.

iii. Once the continuous flow system is established following studied will be undertaken at regular time interval-

- Working of the system with different species of wetland plants for their efficiencies with regard to various pollutants parameters mentioned above.
- Monitoring of CH4 (a Green House Gas) emission at regular time interval.
- Assessment of the system with different sources of wastewater
- Operation requirement and harvesting system
- Delineation of maintenance related requirement

The success of the study will provide an alternative technology for waste water treatment and reuse, which is cheap, efficient, eco-friendly, and easy to adopt and operate.

The Team Member ::

DR. KAMAL KISHOR SINGH
Head, Dept. of Chemistry, A. N. College, Patna

DR. ARVIND KUMAR NAG
Associate Professor, Dept. of Chemistry, College of Commerce, Patna

DR. SUBHASH PRASAD SINGH
Dept. of Chemistry, A. N. College, Patna

CHIRANJEEV KUMAR
Ph. D. Scholar, P. G. Dept. of Env. Sci., A. N. College, Patna

TAHSEEN ANWAR
Ph. D. Scholar, P. G. Dept. of Env. Sci., A. N. College, Patna

❍ Professor of Chemistry. & Professor-Incharge,
P.G. Detp. of Environmental Sciences, A.N.college, Patna

Global Warming Climate Change

First one is that Climate Change is the **change in global weather patterns:** long-term alteration in global weather patterns, especially increases in temperature and storm activity, regarded as a potential consequence of the greenhouse effect.

Dr. Ashok Ghosh

Global warming is a very commonly used word nowadays. It is a hot topic of discussion for persons of all ages. What is Global warming and what are the causes for this changes in our climate need to be understood more clearly before we comment on the changes happening around us. Popular defination of climate change found in the dictionary are as follows:

First one is that Climate Change *is the* ***change in global weather patterns:*** *long-term alteration in global weather patterns, especially increases in temperature and storm activity, regarded as a potential consequence of the greenhouse effect.* ***The second defination is that, Climate change*** *is a change in the statistical distribution of weather over periods of time that range from decades to millions of years. It can be a change in the average weather or a change in the distribution of weather events around an average (for example, greater or fewer extreme weather events). Climate change may be limited to a specific region, or may occur across the whole Earth.*

To justify and authenticate our views we need to understand the basics with its positive as well as negative points. One needs to ask oneself few questions in order to present a balanced picture. But the answers do not lie entirely within the realm of science. Climate and human life are intricately linked and delicately balanced. Any climate change will not only affect the physical earth but also life on earth.

There are three different aspects of climate change:

1. Scientific aspect:

Here one has to consider the facts based on observation and understanding of the data collected with help of different instruments in the laboratories and based on these data fact sheets a prediction is made. These predictions are based on the probability factors of the frequency of occurrences of the unusual events in the course of earth's history. There is a strong evidential backing for these predictions.

2. Socio-economic aspect:

This is where it hits us i.e. 'The People' directly. The effects of the changes in the climatic patterns have an impact on our day-to-day lives. The rising temperatures, the unprecedented rainfall, the dry and moist spells that are much longer than before are all affect our lives. Whether we are in the rural or urban parts, or in North, South, East or West or rather any part of the globe, changing whether conditions have made all the life forms vulnerable. Adapting to these changes is not always possible History has shown us that huge animals like Dinosaurs had to face extinction due the huge changes that occurred a few thousand years ago which brought about a lot of changes in the earths climate. Mitigation measures surely should be first on our list of priorities in order to survive.

3. Political aspect ::

Here the government of a particular nation plays a pivotal role in taking decisions regarding the cost benefits of the economy and its human as well as natural resources.Personal gains short term self centered goals lead the nation and its people towards disaster while a leadership with a long term goal based broader vision can lead to prosperity and well being of the nation and its resources. The government has to decide whether it wants to use the exploitation of its resources or protection and conservation. We cannot deal with climate change in isolation that would be like reading just one chapter from the book of life. We need to know not just a part of the truth but the whole truth. We need to distinguish between “information” and “truth”. So let us delve into the details of these terms.Global Warming is a continuous warming

trend of the Earth's surface since 1976. In fact the 1990's have been the warmest decade while1998 has been the warmest year of this decade. 11 out of the last 12 years (1995-2006) rank among the 12 warmest years in the instrumental record of global surface temperature (since 1850). This global warming value is an average for the whole globe at the same time this warming is not uniform across the globe. It is more over land than over sea. This warming is different over different continents.

The causes of Global Warming are many, but the main amongst them is the heating up of the earths atmosphere.The earth's atmosphere is a mixture of gases namely Nitrogen (78 %), Oxygen (21 %), Argon (0.9%), Carbon dioxide, Water vapour, Methane, Ozone (0.1%) etc. It is this 0.1 % part of the atmosphere that participates in the transfer of heat and controls temperature. The most significant greenhouse gases are water vapor (H_2O), carbon dioxide (CO_2),methane (CH_4) and nitrous oxide (N_2O), according to the Environmental Protection Agency (EPA). With reference to our knowledge of the past climate records one has to realize that scientific meteorological records are very short compared to the climate time scale. We can find out about past climates from historical accounts, literature, and geological evidence or proxy indicators.Nature itself provides some evidence of how the climate might have been hundreds to thousands of years ago, through Tree rings, Sea corals, Lake and ocean sediments, Ice cores etc. However we can certainly predict the future climate with the available data base. There is a difference between weather and climate. Weather is a rapidly changing process in the atmosphere, while Climate is a slowly evolving process. The earth's climate is a complex system and the climate system has 5 components - Atmosphere (air), hydrosphere (water), cryosphere (ice), Land surface and biosphere (all living beings). The total climate system includes physical, chemical, biological and geophysical processes and their interactions. Based on these scientific models we can predict the future climate.Treating facts fairly in order to help adapt better and follow mitigation measures is expected from the people. The global, regional and local scenarios of climate change may be different It is not fair to highlight one scenario and leave out the others. What is of global dimensions should not be applied on the local scale. What is of purely local importance should not be extended across a larger region. We should be aware that over the Arabian Sea and parts of the Indian Ocean, the sea level has been falling. Widespread melting of snow and ice is an indicator of global warming. Retreating glaciers, decreasing land ice cover and decreasing sea ice extent In order to have Holistic view it is necessary to view climate change not in isolation but in a holistic manner. For example climate change is said to be the cause of unprecedented **floods**, but floods are not always due to heavy rainfall. They could be caused by release of water from reservoirs or due to inadequate drainage systems. Quite a lot is being said about the threat of **droughts** because of climate change, but we had major droughts in the past and great famines in 1918 and 1899. So we have to be prepared for drought anyway. Since monsoon rainfall comes only for 3-4 months in a year, we have to store and conserve water for the rest of the year. Not only is the climate changing, we **are also changing,** farmers are growing flowers and fruits in place of traditional crops, housing constructions are encroaching into flood-prone areas and also our lifestyle is changing.

We cannot deal with climate change in isolation that would be like reading just one chapter from the book of life. We need to know not just a part of the truth but the whole truth. We need to distinguish between "information" and "truth".

A few tips to working for a better future we need to think before we act,

Our carbon-based energy resources are not unlimited and they are going to be consumed over a finite period of time. So whether the climate changes or not, we have to exploit alternative energy sources like solar and wind power which our country has in abundance. Indian scientists need to be much more actively involved in climate change research in three key areas, Monsoon, Sea level rise, Himalayan snow. For that we need to have Indian data, Indian models and Indian perceptions. In the mean time, climate predictions must be carefully studied and not accepted blindly. Every unusual or extreme weather event should not be branded as an effect of global warming. ❑

❑ Dept. of Environment and Water Mangement, A.N.college, Patna

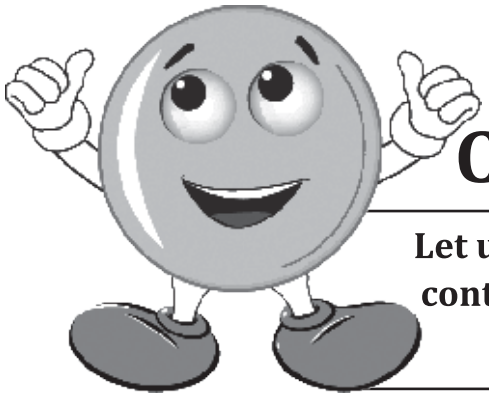

SMILING INSIDE OUR CONTRIBUTION TO LIFE

Let us give away the real wealth of peace, happiness, joy, contentment and security. As the real wealth increases, life becomes happy, healthy and prosperous.

Dr. Kamal Kishor Singh

It is not necessary to get lost in thought on any subject. The things that need to remain in our awareness now are :-) Who am 1 ? 2) Who is mine ? 3) What do I need to do now? The soul is very tiny. The soul is light. However, thinking a lot makes the soul heavy. We have to create such beautiful and subtle vibrations that they reach others. We are hearing the news of one soul or another leaving the body nearly every day. Even if someone is unconscious in hospital, my works is to create such vibrations that reach that soul.... Today one may be sitting in his or her body but tomorrow....? There is no guarantee for tomorrom. At present we are here, present on Godly service but tomorrow what happens, o one knows. The sister whom we called 'Queen Mother' (Mother of Didi Manmohini) left the body very quickly, without any pangs, without even changing her expression. So one must perform as many elevated actions as one wishes to. These have to be perform through one's thoughts, words and actions. Anyway, we have to perform activity in life so our focus should be to make those actions beneficial. I cannot live without seeing through these eyes, but how is my spiritual gaze (Drishti)? In what way am I seeing and thinking about people and situations? There should be love and peace in my thoughts. If I want to speak, what should I speak about? What I think and do, affects myself and all others. I have to become a swan, which only picks up what is good. I have to imbibe only what is good. Then only I will be spreading good vibrations.

> ***"we have to perform activity in life so our focus should be to make those actions beneficial. I cannot live without seeing through these eyes, but how is my spiritual gaze (Drishti)? In what way am I seeing and thinking about people and situations? There should be love and peace in my thoughts."***

Three types of awareness make us smile internally and revealed on the face. Firstly, It is a smile of the one who is soul-conscious, without a trace of body consciousness. Secondly, the smile that comes on one's face when thinking of Shiv Baba-knowing him as the supreme authority one belongs to. Third is smile that comes from inside when one uses the knowledge of drama - understanding that every thing is good and accurate and that no one is to be blamed. Blaming other wipes away one one's happiness in a second. One should a remember that there is no need to try to prove anything - truth is automatically revealed. So one needs to think of what one has to do now. Let's leave the support of human beings and take the true and constant support of GodShiva, That is Shiv Baba. We have three immortal thrones to sit on: The throne of the forehead on which the soul in sparkling, the heart-throne of God Shiva and also the throne of the future kingdom. All the knowledge we have been given is for us to use, not just to listen to or to speak on. Previously we were stumbling; now we have found the path. We are surrendered: we don't have any thing of our own. We have to simply lead out lives whilst remaining truthful, blissful, love-full and peaceful. In this way, we have to bring benefit to our own selves and to others. The essence of this knowledge is being Manmanabhav (attaining the state of being soul-conscious and God-conscius). So, one must ask oneself where one's mind is. Is it caught up in the body or bodily relationships? It has to be seen how much detached one has become from everything - from the body, material possessions, and relationships. It has to be checked: 'Is the

quality of my speech such that it reveals who I am?' 'Have I learned how to make mountain into a mustard seed or do I expand small things into big ones?' Many have this habit. Others may go into details of the situation people in front of me. My task at that time is to remain quiet. One must pay attention now to the thoughts one is creating in one's mind.

We need to understand that the hand which gives will never be empty. The hand which takes and takes remains empty at all times. To begin with, let us give away the real wealth of peace, happiness, joy, contentment and security. As the real wealth increases, life becomes happy, healthy and prosperous. ❑

❍ Head of the Deptt. of Chemistry, A.N.college, Patna

The first Asian and first non-White to get any Nobel Prize in Science

Sir Chandrasekhara Venkata Raman, (7 November 1888 – 21 November 1970) was an Indian physicist and Nobel laureate in physics recognised for his work on the molecular scattering of light and for the discovery of the Raman effect.

On February 28, 1928, through his experiments on the scattering of light, he discovered the Raman effect (the inelastic scattering of a photon). It was instantly clear that this discovery was an important one. It gave further proof of the quantum nature of light.

Raman was confident of winning the Nobel Prize in Physics, and was disappointed when the Nobel Prize went to Richardson in 1928 and to de Broglie in 1929.

He was so confident of winning the prize in 1930 that he booked tickets in July, even though the awards were to be announced in November, and would scan each day's newspaper for announcement of the prize, tossing it away if it did not carry the news. He did eventually win the 1930 Nobel Prize in Physics "for his work on the scattering of light and for the discovery of the effect named after him".

Raman scattering or the Raman effect is the inelastic scattering of a photon. When light is scattered from an atom or molecule, most photons are elastically scattered, such that the scattered photons have the same energy (frequency) and wavelength as the incident photons. However, a small fraction of the scattered light (approximately 1 in 10 million photons) is scattered by an excitation, with the scattered photons having a frequency different from, and usually lower than, the frequency of the incident photons. In a gas, Raman scattering can occur with a change in vibrational, rotational or electronic energy of a molecule. Chemists are concerned primarily with the vibrational Raman effect.

He was the first Asian and first non-White to get any Nobel Prize in Science. Before him Gurudev Rabindranath Tagore (also Indian) had rreceived the Nobel Prize for Literature ❍

(An Interview)

Shrilal Shukla and His Raag Darbari

Shukla stronghy felt that a modernist writer must adopt 'magic reality' or 'fantasy', as Gabriccel Garcia Marquez did, to deseribe the atmosphere of sullen silence and bitterness pervading our life.

✍ Dr. Shailendra Mishra

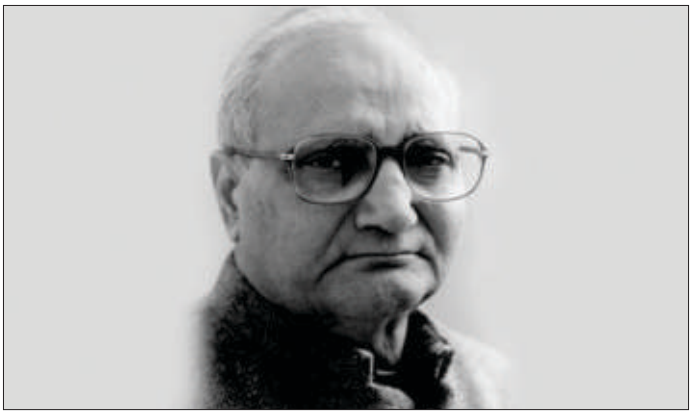

The author of modern classic in Hindi, Raag Darbari (1968). Shrilal Shukla (1925-2011) come to be regarded as one of the finest fiction writers of India. He received several prestigious awards like Sahitya Akademi Purshkar, Gyanpith, Padma Bhushan, Yash Bharti Samman, Vyas Samman and others.

Shukla wrote over a dozen books of fiction. Of course, satire made him what he was a literary celebrity. He belonged to the tradition of Hindi fiction pioneered by Premchand and Renu. Though interested in academic career, he could not complete the MA because of financial constrains and joined the state administrative service in Uttar Pradesh instead. He retired from the I.A.S. in 1983.

The constricting atmosphere of provincial buneaucracy could not stifle his creativity. A voracious reader, he kept on reading Sanskrit texts, the classics of Hindi and European languages. Gilian Wright, the famous translator of **Raag Darbari** says that Shukla was competent enough to write fiction in English as well.

Shrilal Shukla started writing in Hindi when he was posted in a remote place in the mid-1950s. His first work of fiction, **Sooni Ghati Ka Sooraj,** a novel, come out in 1957. His other works that brought him considerable fame, are **Makan, Pahla Padav, Aadmi Ka Zahar.**

Aangad Ka Paun and Umravnagar Mein Kuchh Din

The earthy smell of an ordinary north Indian village emerges from every page of Raag Darbari. It gives a vivid picture of rural politics and the functioning of local government machinery. According to Gilian Wright, Politics and government are the two main themes of the novel. Shukla describes how politics is U.P.'s main industry. Interestingly enough, **Raag Darbari** is one of the most difficult raags of Hindustani classical music, but the author emphasises here its literal meaning - the melody of the court.

Shukal strongly felt that a modernist writer must adopt 'magic reality' or 'fantasy', as Gabriccel Garcia Marquez did, to describe the atmosphere of sullen silence and bitterness pervading our life.

In his last visit to Patna sixteen years ago, I had the privilege of spending some time with Shrilal Shukla. He expressed his views quite candidly on his works.

Que. How did you manage to write such biting satire while being a senior bureaucrat ?

Ans. I did face certain hurdles when I wrote **Raag Darbari** in the sixtees. I could sense that the novel might be controversial. So I sent the manuseript of the novel to the government for its permission. But I did not hear anything from the government for over a year. Obviously I began to lose patience and had almost made up my mind to resign from the government service although the retirement was some fifteen years away.

Que. Did you seek any other job ?

Ans. Yes, I weighed the options. There was an offer. I was to be Agyey's understudy in the popular weekly **Dinman** with the assurance that I would succeed Agyey as editor once he took up the teaching assignment in Berkeley, U.S.A. The prospect was encouraging for me. So I wrote an angry letter to the government asking for explanation in the inordinate delay in giving permission for publication of

Raag Darbari. My tone was harsh. I was expecting an angry retort, the government's refusal. That would have paved the way for my leaving the government service. But to my utter surprise, I received the permission for the novel's publication. Anyway I was never inclined to leave the government service for a job in the private sector.

Que. Is Raag Darbari 'dated'?

Ans. That novel was written in the sixties. The impression I had presented there was gathered in the late fifties and early sixties. Naturally things have changed much. The social reality has undergone change. **Raag Darbari** is to be read in the social situation in which it took shape. In that sense, it is 'dated'.

Que. Are you satisfied with Gilian Wright's translation of Raag Darbari?

Ans. Of course, Gilian Wright worked very hard. She is herself a brilliant writer. But my feeling is that the work like **Raag Darbari** is not translatable in any European language. This is because of the limitation of the translation and not of the translator.

(The longer version of this interview was published in the ***Times of India,*** Patna 1 August 1999) ❑

प्रेरक प्रसंग

दरिद्र कौन?

महर्षि कणादि का नाम खाद्यान्नों के कण बीनने के कारण कणादि पड़ा था। खेतों में जो अन्न के कण गिर जाते उन्हें ही बीनकर महर्षि अपना गुजारा करते थे। उस देश के राजा को पता चला कि उसके राज्य में एक पहुँचे हुए महर्षि रहते हैं, किन्तु उन्हें दरिद्रता का जीवन व्यतीत करना पड़ा रहा है। कौन हो सकता है ऐसा दरिद्र? राजा को जब यह बताया गया तो उन्होंने अपने मंत्री को बहुमूल्य उपहार और धन–संपत्ति देकर महर्षि कणादि की सेवा में भेजा। मंत्री ने धन–संपत्ति उनके चरणों में रख दी। महर्षि ने कहा, ''मंत्रीवर! तुम जो कुछ लाए हो उसे दीन–दुःखी सुपात्रों में बाँट दो।'' सात बार राजा ने मंत्री को वहाँ भेजा। हर बार महर्षि ने उसे गरीबों में बँटवा दिया। अंत में राजा ने स्वयं महर्षि के पास जाने की ठानी। उसने और अधिक धन–संपत्ति महर्षि के चरणों में रखी, किंतु उन्होंने उत्तर दिया कि ''हे राजा! इसे जरूरतमंदों को दे दो। मेरे पास तो भगवान् का दिया सबकुछ है।'' राजा को आश्चर्य हुआ कि अनाज के कण बीनकर खानेवाला उनसे कह रहा है कि उसके पास तो सबकुछ है। राजा उदास होकर घर लौट आया। उसकी चतुर महारानी ने उससे उदासी का कारण पूछा। राजा ने बताया कि ''महर्षि कणादि ने किस प्रकार बारंबार धन–संपत्ति लेने से इनकार कर दिया जबकि वे स्वयं अनाज के कण बीनकर जीवन–यापन करते हैं। रानी बोली, ''आपने भारी भूल की है। साधु के पास लेने जाते हैं। उसे देने की धृष्टता नहीं करते। जिनके पास भीतर सबकुछ है वे बाहर का सबकुछ छोड़ने में समर्थ होते हैं।'' राजा पुनः महर्षि के पास गया। और महर्षि के सामने नतमस्तक होकर उनसे क्षमा माँगते हुए कहने लगा– ''मैं समझ गया कि दीन–हीन कौन है, मैं या आप? मैं ही गरीब हूँ मुझे राजा होकर भी और अधिक राज्य की आकांक्षा है।''

The God Particle

The Quest for the Ultimate Truth

In standard model, every particle has a partner or its own anti-particle. But supersymmetry is a theory that suggests every particle also has a supersymmetric partner particle. The existence of the other particles would help stabilize the universe.

Dr. Arun Kumar

Higgs Boson, popularity known as the "God Particle" was hypothesized by Peter Higgs of the University of Edinburgh in Scotland and Francois Englert of the University of Libre de Brixells in Belgium. They were awarded Nobel Prize in Physics in December 2013 for their hypothesis which stood a strong candidate to explain the complex structure of the Universe and the world, we live in. This particle was named after Peter Higgs, one of the six physicists, who in 1964, proposed the mechanism and suggested the existence of such particle. The name "God Particle" was given by Fermi lab director Leon Lederman from the title of his book "The God Particle: If universe is the answer, what is the question?" It was referred to as "God Particle" because it is believed to be the cause of "Big Bang" that created the Universe. A trillionth of a second after "Big Bang" an energy force described by physicists as the "Higg's Field" was turned on. As the universe grew, this field also grew and began to impart mass on its subjects. Higgs Boson is an elementary particle in the standard model of particle Physics. Higgs field, unlike electromagnetic field, cannot be turned off. It has a non-zero constant value almost everywhere.

Higgs field does not create mass out of nothing, nor is it responsible for mass of all particles. For instance, 99% of mass of baryon (composite particle such as proton and neutron) comes from kinetic energy of quarks and from the energies of massless gluons of the strong interaction inside baryons. Baryons and mesons are composed of three

fundamental units, which are called quarks. Mesons are composed of a quark and anti-quark, while baryons are composed of three quarks. Gluons hold the quarks together inside the meson and nucleon. Just as the electromagnetic force between charged particles can be regarded as an exchange of photons, the strong force between quarks is accomplished through exchange of gluons. In Higgs based theories, the property of mass is a manifestation of potential energy transferred to particles when they interact or couple with Higgs field, which had contained that mass in the form of energy [2].

Despite being present everywhere, the existence of the Higgs field is very hard to confirm. Although, it can be detected by excitation, yet these are extremely hard to produce and detect. In order to do this, the European Organization for Nuclear Research (CERN), spent $10 billion constructing a giant 27 km track called a "Hadron Collider" [Fig 1] buried below ground in Geneva, Switzerland and a part of it also runs through France.

Fig 1: Large Hadron Collider, CERN

In July, 2012, Large Hadron Collider (LHC) at CERN shot proton at each other. The protons crashed together to produce a flash of energy or a sub-atomic particle [3]. It resulted into discovery of new particle with a mass between 125 Gev/c^2 and 127 Gev/c^2. By March, 2013, the particle had been proven to behave, interact and decay in many of the ways predicted by standard model and was also tentatively confirmed to have positive parity, Zero spin, two fundamental attributes of Higgs Boson [1]. The particle detected had the following attributes:

Composition: elementary particle, Statistics: Bose Einstein Statistics, Status: Higgs Boson of mass 125 Gev/c^2 (tentatively confirmed), Spin: zero (tentatively confirmed), symbol: H°, Parity: Positive parity (tentatively confirmed), Decay Channel: Pair of photon, WW bosons, ZZ bosons (confirmed), bottom quarks, tau leptons (not confirmed). More data is further needed to know it fully.

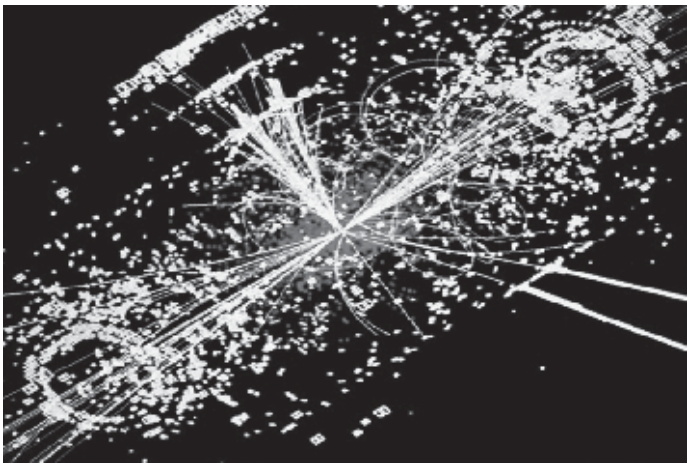

Fig 2: Higgs Boson, crashing of protons

This appears to be first elementary "scalar particle" discovered in nature. Rolf-Dieter Heuer, Director General of CERN stated in a 2011 talk on Higgs field

"All the matter particles are spin-½ fermion. All force carriers are spin-1 bosons. Higgs particles are spin-0 boson (scalar). The Higgs is neither matter nor force. The Higgs is different. This would be first fundamental scalar ever discovered.

The discovery confirms the validity of the standard model of Particle Physics and dictates how the basic pieces of matter act together and thereby form the basis for all visible matter that are molecularly formed and govern the structure of our universe. The door has been opened for new discoveries. It is also believed that it will shed light on dark matter, which is the mysterious stuff that accounts for 25% of the mass of the Universe.

In standard model of particle physics, the fundamental forces of nature arise from laws of nature called symmetries and are transmitted by the particles known as gauge bosons. The weak force's symmetry should cause its gauge bosons to have mass but experiments show that weak force's gauge bosons are actually very massive (W and Z bosons) and short ranging. In presence of the Higgs field, this symmetry is broken. The result is that particles of different types will have different masses. Now vacuum does not mean nothing but something different. It is just the lowest energy state that could possibly contain no particle around but there may be something around. And

something around can be a back ground field of some sort (Higg's field) which pervades the Universe [4].

FUNDAMENTAL FORCES IN NATURE

All the known forces in the universe can be grouped into four basic types. In order of increasing strength, these are: gravitation, the weak force, electromagnetism and the strong force.

Gravitational force: is cumulative and infinite in range.

The weak force : is responsible for nuclear beta decay and other similar decay processes involving fundamental particles. Tis force is short range force and it is important in the understanding of fundamental particles and also in understanding the evolution of universe.

Electromagnetic forces: are of infinite range but shielding generally diminishes their effect on ordinary objects. They play important role in structure and interaction of fundamental particles.

The strong force: It has short range of the order of 1 fm (10^{-15} m). It is responsible for binding of the nuclei.

Einstein spent most of his later years unsuccessfully searching for a unified field theory. Einstein sought a mathematically unified theory in which gravitational and electromagnetic field are interpreted only as different components or manifestation of the same uniform field [5].At the moment, we have a number of particle theories. We have general relativity, a partial theory of gravity [6] and particle theories that govern the weak, the strong and electromagnetic forces. Stephen Weinberg and Abdus Salam (1967) proposed partial theory of electro-weak interaction. They got Nobel Prize in 1979 [7]. At present there are several important candidates for a unified theory of fundamental interactions. These are: Grand Unification Theories (GUTs), Theory of Everything (TOE), String Theories and super symmetry. After electro-weak force, the next step was an attempt to combine the strong and electro-weak forces at new higher level of unification, which is known as "Grand Unification Theories" (GUTs). There are many candidates for GUTs but as yet none has emerged as correct one as the energy involved will be of the order of 10^{15} eV.

The final step in unification would be to include gravity in the scheme to create a Theory of Everything (TOE). But, there is not yet, quantum theory of gravity. General Relativity is a classical theory. In general Relativity, the gravitational force can be thought of as being carried by a particle of spin-2 called the graviton. In quantum field theories, force fields are pictured as being made of various elementary particles called bosons (8).

In string theory, particles are not points but patterns of vibrations that have length but no height or width like infinitely thin pieces of string. In standard model, every particle has a partner or its own anti-particle. But supersymmetry is a theory that suggests every particle also has a supersymmetric partner particle. The existence of the other particles would help stabilize the universe.

Is God Particle Capable of destroying the Universe?

A leading current model of origin of universe assumes that there was total vacuum in the beginning and the universe arose from quantum fluctuations. In this way, something came out of nothing. At that time it was totally dark since light had not emerged from vacuum yet.

In preface to a new collection of essays and lectures called "Starmus", the famous theoretical physicists Stephen Hawking remarked that "God particle could one day wipe out the universe".

Hawking is not only the scientists who think so. The theory of a "Higgs boson doomsday" where quantum fluctuations creates a vacuum "bubble" that expands through space and wipes out the universe, has existed for a while. However, many scientists do not think it could happen any time soon but they do not negate this proposition.

Single Unified Force Vis-à-vis Ancient Indian Philosophy Physicists engaged in the quest for the ultimate truth do not require divine intervention but the fundamental question pertaining to a single unified force (the essence) and the origin of the universe also touches the realm of philosophy, therefore, it will be pertinent to address it by invoking Ancient Indian Philosophy. Many physicists like kashyap vasvada, subhas kak, Amit Goswami and John Hagelin have written extensively on different aspects of physics and ancient Indian Philosophy.

In Mundaka Upanishad, knowledge is divided into two parts. Para Vidya which deals with eternal truth that can lead to self-realization and Apara Vidya which deals with knowledge about material world, physics come within Apara vidya but modern physics and particle physics come under para vidya. Fritz Capra book in seventies on "The Tao of physics" was deeply influenced by eastern mystical

ideas.

In Ancient Indian philosophy, Brahman (the divine essence) or paramatma is the supreme self and the source of all living entities while Maya (illusion) is cause of our faulty identification with material world. Vedanta teaches us that consciousness is singular, all happenings are played out in one universal consciousness and there is no multiplicity of selves. Aham Brahmasi (I am Brahman), Tat Tvam Asi (That thou art) clearly indicates that the essence (God particle) pervades the universe and the indestructible, transcendental living entity is called Brahman.

Vayupurana says that "in the beginning there was nothing in the universe. It had no origin, no end. The Brahman (the divine essence) alone was everywhere. The Brahman has neither colour, nor scent; it could not be felt or touched. The Brahman was constant and it was origin of everything [Theory of Everything (TOE)] that destined to be in the universe and the universe was shrouded in darkness.

In Srimad Bhagavad Gita, Lord Krishna says-

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।।

Be aware that everything living is manifested by these two energies of Mine. I am creator, the sustainer and destroyer of all the Worlds.

CONCLUSION

In stunning triumph of physics, many physicists believed that physics had reached near ultimate reality but later on realized that destination is still too far. Stephen W. Hawking remarked "We have had false dawns before. At the beginning of this century, for example, it was thought that everything could be explained in terms of properties of continuous matter, such as elasticity and heat conduction". Then again in 1928, Max born remarked "Physics as we know it, will be over in six months". His confidence was based on recent discovery by Dirac of equation that governed the electron. However, the discovery of the neutron and nuclear forces indicated that many more mysteries were yet to be unfolded. With cautious optimism, it may be believed that by detection of Higgs boson (God particle) Physics had laid a stepping stone in the quest for the ultimate truth. This truth is certainly alluring physicists to have the ultimate triumph but at the same time eluding them to reach their destination.

References

1. O'Luanaigh, C "New results indicate, new particle is a Higgs boson" CERN, 14 March,2013
2. Max Jammer, "concepts of Mass in contemporary physics and philosophy" pp 162-163, Princeton NJ; Princeton university press, 2000
3. Chios Greece, "The large hadron collider; Shedding light on early universe," CERN, 20 september, 2011
4. M.S. Turner, F. wilczeck "Is our vacuum metastable?" Nature 298(5875), p633-634, 1982
5. Walter Issacson "Einstein: His life and universe" Limited signature Edition, Simon and Schuster, Newyork, 2000.
6. Stephen W. Hawking "The theory of everything" special Anniversary Edition, Jaico Books, 2009
7. Graham Farmelo: "The strangest Man: The hidden life of Paul Dirac, Quantum Genius, p 398, Faber and Faber, London 2009
8. Stephen W. Hawking, Leonard Mlodinow "The Grand Design" p 104-112, Bantam Press, London ❑

❍ HOD Electronics, A.N.college, Patna

TIME TO COMBAT EMPTY NEST SYNDROME

Parents who have given their so many precious years in rearing up their children are now left alone at home which can result in depression and a loss of purpose for parents, since the departure of their children from "the nest" leads to adjustments in parents' lives.

✍ Dr. (Mrs.) Vijaya Lakshmi

I am not son minded, and I treat both my son and daughter equally, but the fact that there will be a time when my daughter will be married off and leave us back cannot be denied. My son will be there to take care of us in our old age."

These were the common expectations of parents until two decades back. Today has come a time where children, be it a son or a daughter, from small cities are migrating to all places especially metros even before marriage, for education, jobs etc. in search of better oppurtunities leaving behind their parents and caregivers back at home. Be it having a single child or having four children, everyone is experiencing this situation. This phase of the adult life cycle when the children are grown and no longer living at home is commonly termed the empty nest and less commonly known, the postparental period.

Empty nest syndrome is a term used to describe the psychological condition of parents when their children leave home for education, after marriage or for work or no longer require them in the same manner on a day-to-day basis. It refers to feelings of sadness, and/or grief experienced by parents and caregivers after children come of age and leave their childhood homes. It is a maladaptive response to the postparental transition, which is stimulated by reactions of loss. This happens particularly in the case of parents, who have a very strong bond with the child or if the mother has been a full-time parent, ignoring her work and hobbies in the bargain. The syndrome takes its name from young birds flying out of their nests once they are old enough to fly, leaving their parents behind.

Parents who have given their so many precious years in rearing up their children are now left alone at home which can result in depression and a loss of purpose for parents, since the departure of their children from "the nest" leads to adjustments in parents' lives. They often question whether they have adequately prepared their child to live

independently. This may be a cause of anxiety and stress for them.

Research reviews suggests that some parents are more susceptible than others in adjusting to empty-nest syndrome and tend to have things in common. They face challenges such as establishing a new kind of relationship with their adult children, becoming a couple again, after years of sharing the home with children, filling the void in the daily routine created by absent children, lack of sympathy or understanding from others who consider children moving out to be a healthy and normal event. The grief of empty-nest syndrome may be compounded by other life events such as retirement, redundancy and menopause. How they choose to adjust to empty-nest syndrome depends on the individual and it differs across gender. It is commonly associated with mothers because it conicides with menopause, which wreaks its own special havoc on the women's emotional state. If a woman has largely shaped her personal identify as that of mother then an end to the reproductive years accompained by a child leaving home can be traumatic. Women who place a high value on a traditional materials role experience it also.

Parents, especially mothers, may experience overwhelming grief, sadness, dysphoria, and depression

(Kahana & Kahana, 1982). Mothers, especially homemakers, have been full time caregivers in any family so they may be experiencing this sense of emptines generating anxiety, depression, and stress in them much more than their counterparts when their children move out of their homes. Borland (1982) identified role loss as a significant precipitator of this syndrome. Since they have devoted a large number of years to the parenting role, women, in particular, may be left with a major void in their daily lives. Studies have also shown that women who are over involved in the mother role and who have subjugated their needs to those of their children appear to be most susceptible to this syndrome (Black & Hill, 1984: Borland, 1982; Cooper & Gutmann, 1987). Working females score better on this part, as they are engrossed in their work lives.

The findings of Liu and Wang (2006) concluded that the empty-nest elderly not only experience the restructuration of life cycle, but also undergo the transformation of family-cycle, meanwhile, the organizational structure of individual and brain function changes with aging, the functional activities of the systems significantly decreased, which lead to many psychological problems and barriers. Studies of Borland, (1982), Harkins (1970), Junge and Maya, (1985), Mbaeze and Ukwandu (2011), Myers and Raup (1989) Li et al (2010) Narain and Lakshmi (2013) have reported similar findings.

Although social media like facebook and what's app have proved to be very helpful in bridging the geographical distance between parents and children, it is suggested that promoting successful aging focussing on cognitive and emotional health is required. For eg. Social engagements, intellectual stimulation, focussing on the positive side of the departure of their children, physical activity, joining hobby courses, etc. can be helpful in coping with this major life event. In nutshell, keeping yourself busy is the most powerful measure to combat this empty nest syndrome and make the world around again a happy place to live in. ❑

❍ Professor & Former Head P.G. Dept. of Psychology, A.N.college, Patna

गांधी जी उन दिनों सेवाग्राम आश्रम में रह रहे थे। दूर–दूर से लोग उनसे मिलने आते और अपने मन की बात उनके सामने रखकर उनसे उसका समाधान ले जाते। एक बार गांधी जी का एक परिचित धनी व्यक्ति उनसे मिलने पहुंचा। उसने दुखी मन से कहा, श्महात्मा जी, आज समय बेईमानों का ही रह गया है। आप तो जानते ही हैं कि मैंने अमुक नगर में कितने प्रयत्नों के बाद लाखों रुपये खर्च कर धर्मशाला का निर्माण कराया था। अब कुछ गुटबाजों ने मुझे प्रबंध समिति से ही हटा दिया है। आप देखिए, इन दिनों ऐसे लोग समिति में आ गए हैं जिनका धन की ष्टि से तो योगदान नगण्य ही है। मुझे तो समझ ही नहीं आ रहा है कि मैं करूं तो क्या करूं ?इस संबंध में क्या न्यायालय में मामला दर्ज कराना उचित नहीं होगा ?

उसकी बात सुनकर गांधी जी ने कहा, श्तुमने धर्मशाला धर्मार्थ बनवाई थी या उसे व्यक्तिगत संपत्ति बनाए रखने के लोभ में ऐसा किया था ? देखो, असली धार्मिक कर्म तो वह होता है, जो बिना लोभ–लाभ की इच्छा के किया गया हो। लेकिन मुझे लगता है कि तुम अभी तक नाम और प्रसिद्धि का लालच नहीं त्याग पाए हो। इसलिए तुम धर्मशाला में प्रबंध समिति के पद से हटाए जाने से दुखी हो। मेरी बात मानो तो अब तुम धर्मशाला की प्रबंध समिति में पद और नाम की प्रसिद्धि के मोह को त्याग दो। इससे तुम्हारे मन को अपार शांति प्राप्त हो सकेगी। मनुष्य को जीवन में सदा निष्काम कर्म की ओर बढ़ना चाहिए।

गांधी जी की बात सुनकर उस व्यक्ति ने संकल्प लिया कि वह भविष्य में किसी भी पद अथवा नाम के लालच में नहीं पड़ेगा। ❑

कबीर का परमतत्व

वास्तव में कबीर न तो निर्गुणवादी थे, न सगुणवादी। उनका परम तत्व निर्गुण सगुण से परे है और अनुभूति गम्य होने पर भी अनिवर्चनीय है। वह अलख है जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। किंतु बिना रूप रंग के होकर भी वह सर्वत्र विद्यमान है।

✍ डॉ. बद्रीनारायण सिंह

हिन्दी के संत कवि कबीरदास के सिद्धान्त, साधना तथा काव्य वैशिष्ट्य के साथ– साथ उनकी जाति, धर्म और जन्म – मरण पर अनेक शोध कार्य सम्पन्न हुए हैं। जितने शोध हुए उतने ही पाठ–भेद के अतिरिक्त मत–मतांतर भी उपस्थापित किये गये हैं। कहा जाता है कि कबीर साधुओं के साथ सत्संग भी करते और जुलाहे का कार्य भी भलीभॉति करते थे। रामानुज की शिष्य परम्परा के आचार्य रामानन्द जी के चरण तले दबने से उन्हें राम – राम कह का उपदेश प्राप्त हुआ और बाद में सूफी फकीर शेख तकी से उन्होंने दीक्षा ली। कबीर ने इसी सूफी फकीर को अपना गुरु माना। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि "उन्होंने भारतीय ब्रह्मवाद के साथ सूफियों के भावात्मक रहस्यवाद, हठयोगियों के साधनात्मक रहस्यवाद और वैष्णवों के अहिंसावाद तथा प्रपत्तिवाद का मेल करके अपना पंथ खड़ा किया। उनकी बानी में ये सब अवयव स्पश्ट लक्षित होते हैं।" किंतु यह कथन आंशिक रुप से ही सही है। कबीर किसी मत विशेष के अनुयायी नहीं थे। वे किसी सम्प्रदाय के सिद्धान्त या धर्म विशेष को लेकर चले भी न थे। बल्कि वह तो समय–समय पर उनकी त्रुटियों की आलोचना भी करते थे। वे न तो दार्शनिक होने का कभी दावा करते थे और न तो उन्होंने किसी सिद्धान्त विशेश का प्रतिपादन ही किया। उनका सगुणवाद में कभी विश्वास ही नहीं था। 'राम', 'हरि', 'मुकुन्द' आदि शब्दों से यह भ्रम अवश्य होता है। किन्तु उनका इष्टदेव तो सदा 'अगम', 'अगोचर' और 'अकथ' ही रहा। उनकी योग साधना की चर्चा के आधार पर कुछ आलोचकों ने उन्हें नाथपंथी योगियों से जोड़ा तो कुछ ने उनकी बानियों में तंत्रवाद की झलक भी देखी। कबीर के द्वारा प्रयुक्त 'शून्य', 'मधि' और 'निरंजन' जैसे शब्दों का आश्रय लेकर उनपर बौद्ध धर्म के प्रभाव का भी उल्लेख किया गया है।

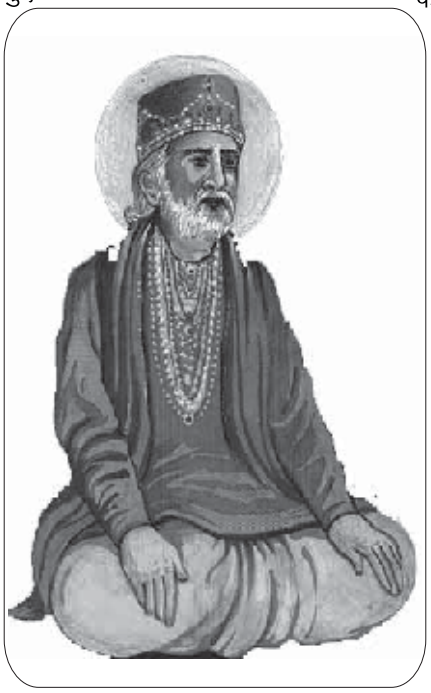

कबीर तो राम को गुणातीत का एक अकथ रुप मानते हैं। रमैणी में उन्होंने लिखा है:–

अलख निरंजन लखै न कोई।
निरभै निरकार है सोई।
सुनि असुथूल रुप नही रेखा।
द्रिश्टि अद्रिश्टि छिप्यौ नही पेखा।

वे तो ब्रह्म का अलख, निरंजन, निरभै, निराकार, शून्य तथ स्थूल से भिन्न अथवा भय और अभय से भी विलक्षण मानते थे। 'गुणबिहून' का परिचय क्या हो सकता है? उसका क्या नाम दिया जा सकता है?

कबीर तो उसका नाम 'परम तत', अनूप तत, निज तत, आप, सबद, परमपद, अभैपद, अनन्त; उनमन, गगन, सीव, ब्रह्म आदि देना चाहते हैं । फिर भी वह अकथ व्याख्यायित नहीं हो पाता है। तब ब्रहम के उसी विराट रूप को कबीर ने करोड़ों सूर्य जहॉ प्रकाश करते हैं, करोड़ों महादेव कैलाश के साथ विद्यमान हैं, करोड़ों दुर्गाएँ उसकी सेवा करती हैं, करोड़ों ब्रह्मा वेद का उच्चारण करते हैं, नवग्रह के करोड़ों समूह उसके समक्ष हाथ जोड़े खड़े हैं, फिर भी उसका अंत नहीं मिलता है। यदि सातों समुद्रों के जल को स्याही बना लें, जंगलों की समग्र लकड़ी की लेखनी बना डालें और सम्पूर्ण पृथ्वी को ही कागज बनाकर लिख डालें फिर भी, हम उसकी गुणावली पूरी नहीं कर सकते। वास्तव में कबीर न तो निर्गुणवादी थे, न सगुणवादी। उनका परम तत्व निर्गुण सगुण से परे है और अनुभूति गम्य होने पर भी अनिवर्चनीय है। वह अलख है जिसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। किंतु बिना रूप रंग के होकर भी वह सर्वत्र विद्यमान है। उसका आदि अंत कुछ भी नहीं। उसे पिंड अथवा ब्रहमाण्ड कहना भी व्यर्थ है:–

संतो, धोखा का सूं कहिये ।
गुण में निरगुण, निरगुण में गुण है ।
बाट छाडि क्यों बहिये ।।
अजरा अमर कथै सब कोई, अलख न कथणां जाई।
नाति सरूप मरण नहीं जाकै, घटि घटि रहियो समाई।

कबीर ने परम तत्व के लिए कुछेक नाम केवल समझाने की सुविधा के लिए ही लिया है। जिन नामों का प्रयोग तत्कालीन हिन्दू समाज, इस्लाम मतावलम्बी, बौद्व, जैन तथा तंत्रवादी किया करते थे उनका उपयोग कबीर ने उनके व्युत्पतिपरक अर्थ छोड़ कर किया है:–

सुर–नर मुनि जन–औलिया, ए सब वेलैं तीर
अलह – राम का गम नहीं, तहँ घर किया कबीर ।

❑

❍ उपाचार्य, हिन्दी विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

बिहार में नक्सलवादी आन्दोलन

आज नक्सलवाद एक कैंसर जैसे बिमारी के रूप में हो गया है, इस रोग को खत्म करने के लिए सामाजिक तथा आर्थिक विकास पर ध्यान देना होगा।जब तक जमीनी परिस्थिति नहीं बदलेगी तब तक नक्सलवाद पैदा होते रहेगा, समाप्त नहीं होगा।

✍ डा. रामावतार सिंह

बिहार में पहला नक्सलवादी आन्दोलन मुजफ्फरपुर जिले के मुसहरी प्रखंड के 12 गाँवों से आरम्भ हुआ। इस आन्दोलन के आधार वही निम्न जातीय काश्तकार थे। जो यहाँ किसान आंदोलन में शुरू से ही प्रमुख भूमिका निभा रहे थे। सन् 1968 ई0 में ग्रीष्म ऋतु में गंगापुर गाँव में काश्तकारों ने जमीनों पर अधिकार कर लिया और खेतों में खड़ी अरहर की फसल काट ली। भू–स्वामियों ने काश्तकारों के खिलाफ फौजदारी मुकदमा दर्ज कराये। परन्तु कार्यकर्त्ता गिरफ्तारी से बचने के लिए गाँव–गाँव घूमकर किसान संग्राम समिति संगठित करने लगे। अगस्त 1968 ई0 में काश्तकारों ने मदई फसल पर कब्जा करने के लिए आंदोलन प्रारंभ किया। 23 अगस्त 1968 को पुलिस और किसानों के दल में मूठभेड़ हो गयी। इस स्थान पर आकर नेतृत्व ने छापामार संघर्ष के पक्ष में निर्णय लिया जो कि 1969 में मुसहरी संघर्ष का मुख्य स्वरूप बना। सरकारी दमन सर्वोदयी नेता जय प्रकाश नारायण के समाज सुधार और आर्थिक अनुदान के हथियार ने इस मुसहरी आन्दोलन को 1970 ई0 में समाप्त कर दिया।

नक्सलपंथी 1971 ई0 तक विध्वंसक अभियान के बल पर उत्तर बिहार में सक्रिय रहे। नक्सलियों से निपटने को पुलिस अधिकारी डी0आई0जी0 वी0एन0 सिन्हा को तैनात किया गया। उन्होंने लिखा है कि 1972 ई0 के बाद यह हिंसा पूरा उत्तर बिहार से हटकर मध्य बिहार तथा दक्षिण बिहार के भोजपुर, पटना नालंदा, गिरिडीह तथा झारखण्ड के हजारीबाग तथा धनवाद के जिलों में आ गयी थी। नक्सलियों ने औद्योगिक श्रमिकों, विशेष तथा जमशेदपुर, धनबाद और राँची के श्रमिकों को संगठित करने का प्रयास किया। मध्यबिहार में नक्सली संगठनों के नेतृत्व में जो किसान खेत मजदूरों का आंदोलन चल रहा था उसकी शुरूआत भोजपुर से होती है। इसकी पहली चिन्गारी फूटी सहार थाने के सोन के किनारे बसे एक गाँव एकबारी से और देखते–देखते ही न सिर्फ भोजपुर बल्कि सोन नदी को पार कर पटना, गया, जहानाबाद और औरंगाबाद पहुँच गयी।

भोजपुर का नक्सली आंदोलन जमीनी परिस्थितियों से पैदा हुआ था जिसके सूत्रधार थे मास्टर जगदीश महतो। सहार के एकबारी गाँव में नक्सलवादी गतिविधियाँ बड़ी तेजी से बढ़ी। यह आंदोलन ऐसे समय में शुरू हुआ जब बंगाल में नक्सली आंदोलन सरकारी दमन और आलसी फूट के कारण समाप्त हो चुका था। भोजपुर में इस आंदोलन की शुरूआत नक्सली संगठन के नेतृत्व में नहीं हुई थी बल्कि स्थानीय लोगों के नेतृत्व में हुई थी जिसके असली किरदार भूमिहीन खेतीहर मजदूर थे। जो आर्थिक तथा सामाजिक कारणों से प्रेरित थे। डी0आई0जी0 वी0के0 सिन्हा के कथनानुसार एक निर्धन कृषक परिवार से आने वाले विज्ञान शिक्षक जगदीश महतो 1967 ई0 के चुनावों में साम्यवादी दल का प्रचार कर रहे थे तो भूस्वामियों के आदमियों ने उनकी पिटाई कर दी। यही जगदीश महतो बाढ़ में

नक्सली नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए। वे 'हरिजनिस्तान' के नाम ले एक पत्रिका प्रकाशित करते थे तथा 'विध्वंसक अभियान' के लिए निर्धन ग्रामीणों को संगठित करते थे। उनका नारा था 'हरिजनिस्तान' लेकर रहेंगे। 1969 के बाद एकवारी गांव में हिंसक घटनाएँ प्रारम्भ हो गयी। वहीं के रामेश्वर अहीर जो डैकतियाँ डालता था महतो के सेना में आ गया। 1971 में भूस्वामियों का दलाल शिवपूजन सिंह मारा गया। 1972 में एक ठाकुर भूस्वामी को गोली मार दी गयी। 10 दिसम्बर 1972 को गाँव छोड़कर भागते हुए जगदीश महतो को हरिजनों ने डाकू समझकर मार डाला।

एकवारी की घटना को देखकर आस–पास के गाँवों के हरिजनों ने भू पतियों के अत्याचारों के खिलाफ सर उठाना शुरू कर दिया। एकवारी के साथ–साथ अन्य गाँवों जैसे अगिआंव, वेरथु, वरूही तथा चंवरी में नक्सल गति विधियाँ शुरू हो गयी। 26 जनवरी 1973 को नक्सलियों के अगुवायी में 100 भूमिहीन किसान मजदूरों ने चंवरी गांव के एक व्यापारी का चावल जब्त कर लिया। न्यूनतम मजदूरी के लिए इस गांव में दो साल से आंदोलन चल रहा था जिसके मुखिया गणेशी दुसाध थे। नक्सलवादी बनने के पहले गणेशी दुसाध साधुओं के शरण में रह चुके थे। लेकिन एकवारी की घटना ने उन्हें नक्सलवाद के तरफ खींच लाया। 30 नवम्बर 1972 को महाजन रामनाथ को मौत के घट उतार दिया गया। 9 अप्रैल 1973 को एकवारी के मुनीनाथ राय के चार बिगहा जमीन जब्त कर वहाँ लाल झंडा लगा दिया गया। 19 अप्रैल को नक्सलियों ने कारू राय को खलिहान में ही मार दिया।

मई 1973 को पुलिस और नक्सलियों के बीच जबर्दश्त संघर्ष हुआ। इस दिन सुबह छः बजे पुलिस दल चंवरी पहुँचकर खंडेरा दुसाध के घर की तलाशी लेना चाहती थी लेकिन भूमिहीन ग्रामीण उन्हें घर में घुसने नहीं दिया। यह संघर्ष दिन के एक बजे से तीन बजे तक चलता रहा। इस संघर्ष में लाल मोहर दुसाध, गणेशी दुसाध, वालकेश्वर दुसाध और दीनानाथ तेली पुलिस के हाथों मारे गये। इसके अलावे 36 लोगों को गिरफ्तार किया गया। इसमें 19 पुलिस वाले भी घायल हुए। बिहार सरकार ने भोजपुर के नक्सली आंदोलन को दबाने का पूरा प्रयास किया। 1970 ई0 में तत्कालीन मुख्यमंत्री दरोगा प्रसाद राय ने नक्सली विद्रोह की समीक्षा के लिए मंत्रिमंडल की एक विशेष बैठक बुलायी जिसमें भोजपुर के ग्रामीण इलाकों में पुलिस को विशेष अधिकार देने का फैसला किया गया तथा नक्सली समस्या से निपटने के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ बनाया गया। लेकिन परिणाम उल्टा हुआ। पुलिस की दमनात्मक कारवाईयों के बावजूद नक्सली आंदोलन हरिजनों, मुसहरों, दुसाधों एवं बिछड़ी जातियों के गरीब किसानों में लगातार लोकप्रिय होता गया। नक्सलवादी विचार धारा के प्रसार का अंदाजा भोजपुर में इसी से लगाया जा सकता है कि 1989 के आम चुनाव में आई0 पी0 एफ0 के उम्मीदवार रामेश्वर प्रसाद वहाँ से विजयी हुए और उन्होंने आरा संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया।

भोजपुर से लेकर मध्य बिहार के अन्य सभी जिलों सन् 1977 से 1989 के दौरान पार्टी द्वारा विभिन्न ग्रामीण अंचलों में स्थानीय स्तर पर किसान संघ, संघर्ष समिति जन कल्याण समिति जैसे संगठनों, समाएँ और जूलूस को संगठित किया गया। नक्सलवादियों ने पुलिस के साथ कई जगहों पर जबर्दस्त संघर्ष किये। जिससे यह साबित हो गया कि दमन के बल पर नक्सलवादियों को नहीं दबाया जा सकता। लेकिन पुलिस के साथ संघर्ष में नक्सलशक्ति का नुकसान हुआ और जौहर दत्त, रामेश्वर प्रसाद डॉ0 निर्मल जैसे अनेक अग्रिम पंक्ति के नेता पुलिस संघर्ष में मारे गये। नक्सलवादियों ने लाल सेना, एम0सी0सी0, पी0 डब्लू0जी0, आई0पी0एफ0, एम0के0एस0 जैसे संगठन का निर्माण किया। वहीं नक्सलवादियों के विरूद्ध भूस्वामि, धनी किसान उच्च तथा मध्यवर्ग के लोगों में राजपूतों ने भोजपुर में कुंवर सेना, मसौढ़ी में कुर्मियों ने भूमिसेना सी0पी0आई0 नेता रामाश्रय सिंह यादव द्वारा यादव सेना जहानाबाद में भूमिहारों द्वारा ब्रह्मर्सि सेना का को संगठित किया। ब्रह्महर्सि सेना का नेतृत्व किंग महेन्द्र तथा सरदार कृष्णा सिंह ने किया।

28 जुलाई 1974 को प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद लिवरेशन जुट अस्तित्व में आया और जल्द ही अनेक जिलों के ग्रामीण अंचलों में दस्तक देने लगा। पटना के पुनपुन, नौबतपुर, मसौढ़ी, विक्रम, पाली, नालंदा के हिलसा एकंगरसराय, गया, जहानाबाद के काको, घोसी, कुर्था, मखदुमपुर, अरवल और औरंगाबाद के ओबरा, दाउदनगर, हसनपुरा आदि के इलाके गरीब किसान और भूमिहिन दलित खेतीहर मजदूर आंदोलन के केन्द्र बनकर उभरने लगे। 1987 तक बिहार के 27 जिलों में नक्सली आंदोलन फैल गया जिसमें 17 जिले आंदोलन के सशक्त केन्द्र थे।

आज नक्सलवाद एक कैंसर जैसे बिमारी के रूप में हो गया है जो घटने के बजाय बढ़ता ही जा रहा है। इसके लिए सरकार में कमी है जो समग्र विकास के लिए कोई रणनीति नहीं बना रही है। कुछ राजनीतिक दल इसे बढ़ावा भी दे रहे हैं। इसके समाधान के लिए बहुस्तरीय प्रयास की जरूरत है। इस रोग को खत्म करने के लिए सामाजिक तथा आर्थिक विकास पर ध्यान देना होगा। विकास की रोशनी सभी के पास पहुँचाना होगा। चंद लोगों के पास विकस की रोशनी पहुँचाने से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता है। उन्हें भी जिविका चलाने तथा अधिकारों को पाने का हक मिलना चाहिए। उपेक्षा के कारण उनमें निराशा बढ़ेगी तथा वे और उग्र होकर आंदोलन करने का प्रयास कर सकते हैं। प्रशासन को उनके दुख दर्द को समझना होगा। जब तक जमिनी परिस्थिति नहीं बदलेगी तब तक नक्सलवाद पैदा होते रहेगा समाप्त नहीं होगा।

This aspect of Nexalite movement in Bihar reminds us of Philosophers, Kautilya, Aristotel and Machiavelli who had already warned even the ruling class not to lower the dignity of women as it whould be responsible for serious trouble and violent changes in the political system. ❑

❍ विभागाध्यक्ष, लोक प्रशासन विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

FEDERAL

NATIONAL INTERFACE OF INDIA

The ideal of federal nation-building is best captured in terms like "federalsim without a centre", a matriz, or cybernetics. India's federal successes and stability sociologically owes more to its multicultural and multinational matrix and politically to consociation and federal politics than to the staatsvolk.

✍ **Bimal Prasad Singh**

Federalism and nationalism are closely related phenomena as federative processes below the levels of supranational integration presuppose or require a certain degree of nationalism. This precondition is necessary both for formation and maintenance of a federal union. Modern federalization is also a close kin of liberalism and democracy. The first modern colonial federal constitution for India was drafted by the British North America (now Canada Constitution) Act, 1867, also framed by the imperial Parliament in London. The continuation of India as a federal national state is, moreover, largely attributable to the successful practice of electroal democracy and parliamentary federal governance. Some of our neighbors in South Asia have faced more serious problems in maintaining national unity due to the absence of democracy or federalism or both (Pakistan, Sri Lanka, and Nepal). Both federalism and nationalism straddle the state as well as the civil society, yet the former is primarily a state-centre development whereas the latter is a society-centered affair.

Arguably, three important forces or factors impinge on the interface between Indian nationalism and federalism. These are (1) the pre-modern fluid structures and identities tied to religions, languages, castes and tribes, on the one hand, and the shifting territories and boundaries of centralized bureaucratic or feudal states in history and territorial reorganizations in democratic and federal India, on the other; (2) democracy, or more accurately, parliamentary democracy increasingly growing more federal; and (3) capitalism and globalization. We will elaborate these points in turn.

To take up the tack of electoral democracy based on universal adult suffrage and parliamentary-federal governance, independent India began its political life as a typical majoritarian democracy albeit tempered by consociation power-sharing among the major communities and a nominal federalism buttressed by an one-party dominant system under the aegis of the Indian National Congress and a centralized bureaucratic apparatus dominated by the All India Services in both union and state governments. The early majoritarian tenor of the political system was also evident in the executive-dominated parliamentary component in the nominally federal system to curtail the power of the federally integrated judiciary to exercise its power of judicial review of the actions of the parliament (1951) which made the laws of the Parliament and state legislatures parked there immune from judicial scrutiny. reacting to the Supreme Court's ruling in Golaknath v. State of Punjab (1967) putting Part - III of the constitution beyond the amending power of the Parliament, the 24th amendment (1971) declared that the Parliament could amend any part of the constitution and the courts could not invalidate such amendments on the ground that they contravened the fundamental rights. The 25th amendment (1971) made the laws giving effect to directive principles of state policy aimed at equitable distribution of material resources of the community and concentration of wealth and means of production to the detriment of common good beyond the purview of courts of law. The 38th amendment (1975) barred the courts from sitting in judgment over the union executive's power to promulgate ordinances and declare constitutional emergencies. The 39th amendment (1975) terminated the jurisdiction of courts in matters concerning the election of the President, Vice-President, Prime Minister, and the Speaker of the Lok Sabha. Finally, the 42nd amendment (1976) fought hammer and tongs to establish parliamentary and legislative supremacy as they "embody

the will of the people and the essence of democracy is that the will of the people should prevail". It also empowered the union government to unilaterally depoly and direct armed forces or para-military forces in a state "for dealing with any grave situation of law and order". Moreover, it sought "to strengthen the presumption in favour of the constitutionality of legislation enacted by Parliament and state Legislatures by providing for a requirement as to the minimum number of judges for determining questions as to the constitutionality of laws and for a special majority of not less than two-thirds for declaring any law to be constitutionally invalid."

The foregoing political centralization under Prime Minister Jawaharlal Nehru, pushed to the authoritarian extent by the Emergency regime of Prime Minister Indira Gandhi (1975-1977) powers by the Prime Minister. This amendment also tried to introduce a majoritarian participatory democratic feature of referendum prior to a constitutional amendment proposing to tinker with the democratic and secular nature of the constitution and independence of judiciary, 19 but this aspect of the amendment was negatedby the Congress majority in the Rajya Sabha as against the Janata Party Government majority in the Lok Sabha.

"The end of the Congress Party's dominance and the advent of a federal multiparty system and coalition and minority governments on the heels of the 1989 parliamentary elections heralded the phase of so far (writing in the Fall of 2011) irreversible federalization of the political system clearing the way for federal power-sharing by smaller national and regional parties and marginal ideologies and social groups."

The end of the Congress Party's dominance and the advent of a federal multiparty system and coalition and minority governments on the heels of the 1989 parliamentary elections heralded the phase of so far (writing in the Fall of 2011) irreversible federalization of the political system clearing the way for federal power-sharing by smaller national and regional parties and marginal ideologies and social groups. There emerged a new model of divided and therefore consensual federal governance. This is a byproduct of accentuated separation of powers between the legislature, executive and judiciary; sharpened federal division of powers between the union and states, discordant bicameralism with the Lok Sabha under a coalitional governmental majority and the Rajya Sabha under the oppositional coalitional majority; and an extremely variegated configuration of party systems in the states and local political system. This complex development has made the task of legislation and constitutional amendments a highly difficult proposition, this is further complicated by an enormous expainsion of the power of judicial review and activism. Add to this scenario the growing power of the mass media and civil society organizations, to say nothing of the heightened incidence of the social and political movements in the country, and we can easily understand the emergent phenomenon of divided government and a model of consensual federal governance, occasionally verging on immobilisme and political paralysis.

Both federalism and nationalism are post-medieval developments. They also developed partly concomitantly and partly causally with early capitalism, though not necessarily industrial capitalism. In India these entities were born in the context of colonial capitalism seeking to supplant a feudal society and economy. Independent India set out to establish a "socialistic pattern of society" and a state-dominated, import-substituting nationally-reliant industrial economy. When this economy came to grief due to a severe balance of payment crisis in international trade and fiscal overload on the incipient welfarist state, the Congress minority government led by P.V. Narasimha Rao accelerated the process of bureaucratic deregulation, in reaction to the extra-parliamentary mass movement led by Jayaprakash Narayan, proved to be unsustainable. The pendulum began to swing in the opposite direction, following especially the 1977 and 1989 general elections. Three factors contributed to this new trend : (a) judicial decisions, (b) constitutional amendments, and (c) party system transformation. The Supreme Court, which had gone along with the anomalous ninth schedule i the constitution by the first amendment, insamuch as it made some legislations impliedly higher than the constitution itself, began to assert its power of

judicial review not only on parliamentary and executive actions but also on constitutional amendments by the late 1960s. When its ruling that fundamental rights were beyond the amending power of the Parliament in the Golaknath judgement was sought to be negated by the 24th amendment, the Supreme Court in its judgement in Keshavananda Bharati v. State of Kerala (1973), conceded the Parliament's power to amend any part of the constitution, but bounced with the ingenious legal theory of the unamendability of the "basic structure" of the constitution as the constituent power of the Parliament was limited to amendment, and did not amount to complete replacement, which only a new constituent Assembly could do. This judicial doctrine was propounded in the Keshavananda Bharati judgement by a 7:6 majority (and subsequently buttressed by a unanimous judgement in I.R. Coelho v State of Tamil Nadu, 2007. The laws put in the ninth schedule were also made open to judicial review following April 24, 1973, the date of delivery of the Keshavananda judgement. Another constitutional amendment, the 53rd amendment, 1986 - granted asymmetrical autonomy to the state of Mizoram comparable to Nagaland under article 371A. This followed the formal renunciation of insurgency is pursuit of secession by the previously separatist Mizo National Front in 1985. These authoritative case laws and amendments strengthened separation of powers and constitutionalism as well as asymmetrical federal autonomy of peripheral tribal community.

> ***"India's federal successes and stability sociologically owes more to its multicultural and multinational matrix and politically to consociation and federal politics than to the staatsvolk."***

The 44th constitutional amendment (1978) brought about by the Janata Party Government, the first non-Congress government in New Delhi voted to power in the post Emergency 1977 elections, repealed the authoritarian features introduced into the constitution by the Emergency Congress regime by a series of amendments including the 42nd amendment. The effect of the 44th amendment was to restore the representative democratic character of the constitution, not so much to enhance the federal autonomy of state governments, excepting some institutional constraints of the cabinet and Parliament on the exercise of the emergency gradual disinvestment of the public sector and privatization, and globalization. Using the short-hand term neoliberal economic reforms or globalization for this policy paradigm, we hypothesize that this shift has reinforced the process of federalization, though it has adversely affected the dimensions of democracy and welfare.

Conclusion

The ideal of federal nation-building is best captured in terms like "federalsim without a centre", a matriz, or cybernetics. India's federal successes and stability sociologically owes more to its multicultural and multinational matrix and politically to consociation and federal politics than to the staatsvolk. Beyond the "Mainstream" states of the North and South, where federalism has worked well, the troubled states of the "peripheries" in the Northwest, Northeast, and the Deep South that have in several instances gone to the extreme of secessionism and / or insurgencies have subsequently returned to the federal democratic "mainstrem". I venture to suggest that the rise of the "peripheries" and their protests in some cases to the extent of insurgencies may in fact be seen as a struggle to make India a federalism with a multiplicties of regional centres culminating into a matrix or cybernetic model of federalism.

REFERENCES :

1. John Stuart Mill, Representative Government, part of an anthology of Mill's selected works edited by H.B. Action and published by J.M. Dent & Sons Ltd., London, 1972. First published as Considerations on Representative Government in 1861. The quote and discussion here draws on the 1972 text, pp. 359-60 and chapter XVI, "Of Nationality, as Connected with Representative Government" and Chapter XVII "Of Federal Representative Government."
2. Ernest Gellner, Conditions of Liberty : Civil Society and its Rivals, London : Hamish Hamilton, 1994, p. 108.
3. See the Contributions by Stepan and O'Leary to J.A. Hall, ed., The State of the Nation : Ernest Gellner and The Theory of Nationalism, New York : Cambridge University Press, 1998.

❑

❍ Professor & Head P.G. Deptt. of Pol. Science., A.N.college, Patna

ENROLLED IN SCHOOLS BUT NOT EDUCATED

Government surveys may report good news in education, pointing to figures such as rising enrollment numbers, but these numbers need a closer look because being enrolled is no guarantee of actually educated.

Dr. Ajay Kumar
HOD Sociology
Dr. Kavita Kumari
Faculty, Arwachin International School

Some dramatic changes have taken place in India's education system in the past couple of decades of which only a few are reflected in statistics. Enrollment has increased tremendously in the government schools situated in rural and semi urban areas but actual attendance rate is abysmally. According to 2013 Annual Status of Education Report (ASER)[1] survey, the average rural attendance rate on any given day is a mere 71.8 per cent, declining from 73.4 per cent in 2010. Though some of this can be attributed to mundane day-to-day factors such as illness, a lot of it isn't. The worldwide average attendance rate in schools is 91 per cent, as per the UNICEF suggesting other factors are at work here.

This means although the vast majority of children are nominally enrolled in school, a huge number do not actually attend school regularly. Many of them are working. Attendance has already been drawn to the 50 lakh or so child labourers in India, as well as the estimated 60 lakh out of school; but far less attendance has been paid to the millions of children who are technically "in" school, but are effectively short-changed out of education because they miss school to work.[2]

In Bhootnath Road, a colony of Patna district, Usha Devi does not send her daughter and sons to the government school nearby. Her children go to a private school which is quite far (about 5 km) from her house. Illiterate herself, worked as a maid moving from house to house, Usha is keenly aware of the importance of education. "They hardly teach anything in the (government) school. My neighbour's daughter who studies there can not tell the table of 4 whereas my daughter knows all the tables up to 10", she says. How will students learn if there's no one to teach them? Government figures routinely show 95 per cent teacher attendance. But educationist Gita Kington, who

studied teacher absenteeism in 180 schools of UP and Bihar, found that 25 per cent teachers are not present in school on a given day. That translates into a whopping 87,500 missing teachers.[3]

Kington attributes the problem to a "systemic flaw which is poor accountability", Para teachers locally appointed instructors called shiksha mitras are more regular than permanent teachers despite high pay disparity, she says. "A para teacher gets Rs. 3,500 a month while a government teacher's pay packet is around Rs 23,000. Accountability is a crucial factor. Para teachers are usually local and there's more social pressure on them. Though there are provisions like holding back salary and even suspension to check government teachers, for villagers it is difficult to go to a tehsil office and lodge a complaint," she explains.[4]

The future of our children is at stake. They are attending schools, government and private, but not learning enough. For a country known as a software power, it's a shock to learn that large numbers of children in India don't know the basics. Is it possible that they are just average learners? Or should we squarely blame the quality of teachings? "It's a cumulative set of issue but I think the lack of accountability of teachers is the real problem," says Vimala Ramachandran, managing director of ERU Consultants, a research and consulting group that works on education and child development. "They are not accountable whether children are learning or not. Some of my studies have shown that most government primary school children study less than half-an-hour at school." Many government teachers come to school, mark attendance, do some administrative work and leave. "Where there are three teachers in one school, only one would be present; they take turns in coming to school."[5]

"The future of our children is at stake. They are attending schools, government and private, but not learning enough. For a country known as a software power, it's a shock to learn that large numbers of children in India don't know the basics"

The proportion of students enrolled for class 1 to 5 in the total number of children in the 6 11 years age group, called the Gross Enrollment Ratio (GER) for that age group, is about 107 per cent. That means virtually all children in this age group and some who are older but in these classes are enrolled in schools. However, for class 6 to 8, this proportion, for the age group 11 -14 years, falls to about 70 per cent. It continues falling in the next stage of class 9 to 12 also just about touching 40 per cent. By the time we reach higher education, the proportion of students has fallen to an abysmal 10 per cent. This unfortunate reality is reflected also in the drop-out rates. By class 5, about one-third of the students have dropped out, by class 8, about half have quit, and by class 8 nearly two-thirds of them are no longer in school.[6]

Lack of basic facilities also hampers the attendance of students in the school. School without roofs, buildings without toilets, drinking water facility and poor infrastructure are the major impediment to education. According to data from the National University (NUEPA), nearly one-third of schools do not have pucca building and classes are held in tents or under the trees. This is not just true of schools in remote areas. Even in the state capital, an astonishing 43 per cent of primary and middle schools do not have pucca structure. Classrooms are not in good conditions. On an average there are 36 students per classroom in India, which is not bad.[7] Bihar has worst condition with 91 students crammed into each classroom on average. The situation is much worse as far as toilets are concerned. About 42 per cent of schools in India don't have even a common toilet for boys and girls. In Jharkhand, Assam and Chhattisgarh, nearly three out of four schools have no toilet. In Orissa and MP, more than half make do without toilets. Provision of separate toilets for girls was stressed to encourage girls and their parents to enroll in schools. However, only 43 per cent of schools have them. In Chhattisgarh, Jharkhand and Bihar, over 80 per cent of schools have no separate toilets for girls.

On the problems of students-teachers absenteeism, eight primary and middle school of Phulwari block of Patna was studied in 2014 with a tool of interview schedule. Observation method was also used to verify the statements given by the respondents. It had been found that vast majority of children were nominally enrolled in these schools, a huge number did not actually attend

school regularly. Many of them were working, some of them made their presence at the time of mid-day meal. Thus technically they were enrolled in schools but effectively out of education. "Once enrolled a child cannot be taken off from the attendance register even if he/she does not come to school", says a teacher. "When the parents of the child migrate looking for temporary jobs; they get pulled out of school for months. When they come back, they are hopelessly behind and difficult to teach. There are nearly half a dozen of such kids in the school."

Collected data regarding the merits of the children classwise is shocking. Half of the children in class IV can not read simple sentences that are taught in class II. Forty per cent of the children of class IV can not do basic three digit subtraction which is taught in class II. Sixty per cent children of class VII can not do simple division that is taught in class IV. So what are we doing in our rural schools, and what kind of talent are we creating? Are we simply going to celebrate enrolment and mid-day meal figures, and forget about the school's core job to educate? What is literacy anyway? Is it just being able to write one's name, or is it at a minimum being able to read and solve basic arithmetic problems?

Government surveys may report good news in education, pointing to figures such as rising enrolment numbers, but these numbers need a closer look because being enrolled is no guarantee of actually educated.

REFERENCES

1. Chetan Bhagat, We The Half Educated People, The Times of India, New Delhi, 26 January 2015
2. Anahita Mukherji, Fill in The Blanks. The Times of India, New Delhi, 22January 2012
3. Shailvee Sharda, Absent Ma'am, Sunday Times 0f India, New Delhi, 22 January 2012)
4. Ibid
5. Dake Kang, Enrolled But Not Educated, The Times of India, New Delhi, 9 December 2014
6. 9 Out of 10 In Class I Won't Get To College, an article published in The Sunday Times of India, New Delhi, July 6, 2008
7. Lessons In Neglect, an article published in The Sunday Times of India, New Delhi, July 6, 2008 ❑

प्रेरक प्रसंग

सन 1947 की बात है। हर रोज की तरह गांधी जी एक शाम प्रार्थना करने के बाद घूमने जा रहे थे। इस दौरान उनके कई शिष्य भी साथ थे, लेकिन उन्होंने राममनोहर लोहिया के कंधे पर हाथ रखा और बाकी लोगों से थोड़ा हटकर टहलने निकल गए। जल्द ही बातों का सिलसिला शुरु हो गया। गांधी जी एक के बाद एक सवाल लोहिया जी से करते चले गए। जैसे– तुम सिगरेट पीते हो ?तुम बहुत चाय व कॉफी भी पीते हो ?इस तरह गांधी जी ने इस बातचीत को फिर समाजवाद से जोड़ दिया और बोले, एक समाजवादी की हैसियत से तुम्हें एकरूप होना चाहिए। जो सिगरेट तुम्हें भारत में जनता से एकरूप और प्रतिनिधि नहीं बनने देगी, फिर तुम इसका समर्थन कैसे करोगे ?

गांधी जी प्रश्न किए जा रहे थे और लोहिया संकोचवश बस सुनते जा रहे थे। गांधी जी का हाथ लोहिया जी के कंधे पर था इसलिए इन सवालों से बच भी नहीं सकते थे। लोहिया गांधी जी की बातों को ध्यान से सुनते रहे। काफी समय तक लगातार बोलने के बाद जब लोहिया ने किसी सवाल का जवाब गांधी जी को नहीं दिया तो गांधी जी बोले, क्या तुम कुछ नहीं कहोगे ? लोहिया चुप रहे, कुछ नहीं बोले। बस गंभीरता से सुनते रहे। अपने किसी भी प्रश्न का जवाब न पाकर गांधी जी ने लोहिया से कहा, क्या तुम मुझे बोलने से रोकना चाहते हो ?

इस प्रश्न पर लोहिया जी ने अपना मौन तोड़ा और कहा, ऐसी बात नहीं है किंतु मैं आज आपको कोई जवाब नहीं दे सकता। लेकिन जल्दी ही दूंगा। लगभग दो महीने बाद लोहिया जी ने सिगरेट पीना छोड़ दिया। खबर गांधी जी तक पहुंची तो वे मुस्करा दिए। ❑

AMAZING FACTS
ABOUT PLANT KINGDOM

✍ Dr. Manorma Kumari

- Apple pips contain cyanide. There once was a man who really liked the taste of apple pips, so he saved up a cupful of them and ate them in one go, and promptly died of cyanide poisoning.
- There is a flower called the Scarlet Pimpernel that can forecast the weather. If the flower is closed up, rain is coming and if it is opened up, the day will be sunny. It is also called 'the poor man's weatherglass'.

Potatoes are safe to eat when cooked, but the stems and leaves of the plants contain a poison called solanine. If potatoes turn green, they may also contain solanine.

- Ricin is extracted from the seeds of the castor oil plant and is more poisonous than cyanide or snake venom. Even minute doses of ricin can be fatal.

The flower of the Rafflesia measures almost 1m across and weights 11 kg. It is also one of the world's smelliest flowers, with an odour like rotting flesh. The smell attracts flies, which pollinate the plant.

- In one year, the average tree gives off enough oxygen to allow four people to breathe for a year. You breathe 6 liters of air per minute.

The strawberry is technically not a fruit at all. In botanical terms, fruits are seed-bearing structures which grow from a flower's ovaries, and a strawberry is merely the swollen base of the strawberry flower.

- One tree can filter up to 27 kg of pollutants from the air each year.
- The seeds of the coco-de-mer palm are up to 30 cm long and weigh an amazing 20kg.
- In a day, a mature oak tree can draw approximately 190 liters of water.

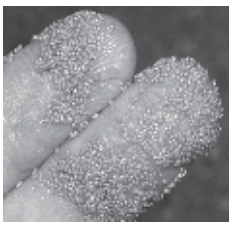

Wolffia, a smallest flowering plant, is just 0.6mm long and weighs about as much as two grains of salt. Its seeds are also the tiniest known they weigh only 70 micrograms, as much as a single grain of salt.

- Research indicates that plants grow healthier when they are stroked.
- Bamboo plants can grow up to 90 cm in one day.
- Ingredients in pineapples might cause an abortion if eaten during pregnancy.
- Apples, not caffeine, are more efficient at waking you up in the morning. *(Collected from different sources)* ❑

❍ Associate Professor, Department of Botany, A.N.college, Patna

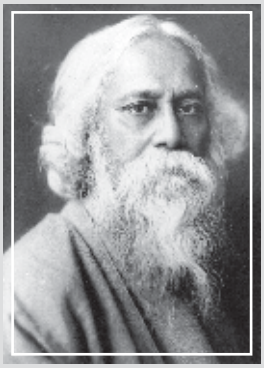

अंग्रेजी सीखकर जिन्होंने विशिष्टता प्राप्त की है, सर्वसाधारण के साथ उनके मत का मेल नहीं होता। हमारे देश में सबसे बढ़कर जातिभेद वही है, श्रेणियों में परस्पर अस्पृश्यता इसी का नाम है।

– रवीन्द्रनाथ ठाकुर।

Antioxidants and Our Health

Anti oxidants are chemicals that block the activity of free radicals. Dietary antioxidants include selenium, vitamin A and related carotenoids, vitamins C and E, plus various phytochemicals such as lycopene, lutein, and quercetin.

Dr. Preety Sinha

Free radicals are formed naturally in the body. The modern lifestyle and unhealthy food habits contribute to formation of free radicals a lot. Environmental factors such as pollution, radiation, cigarette smoke and herbicides can also spawn free radicals. Free radicals are highly reactive and have the potential to cause damage to cells, including damage that may lead to cancer.

Anti oxidants are chemicals that block the activity of free radicals. Dietary antioxidants include selenium, vitamin A and related carotenoids, vitamins C and E, plus various phytochemicals such as lycopene, lutein, and quercetin. Hence it is necessary for us to incorporate anti-oxidants into our food habits. By eating more antioxidant-rich foods, you can boost the amount of the disease-fighting chemicals floating in your bloodstream.

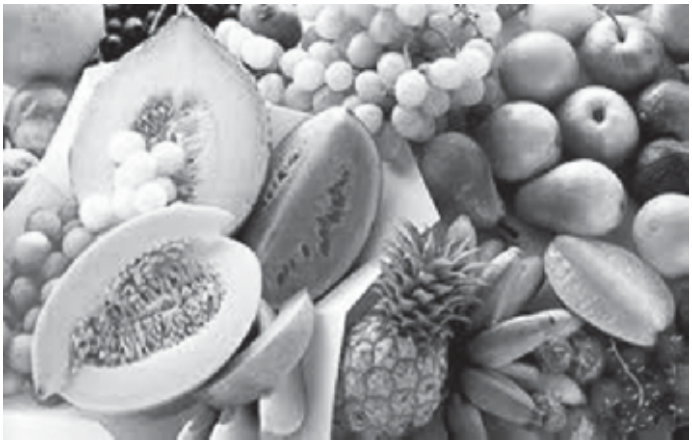

The list of different types of antioxidants with their sources in our food is given below:

- **Allium sulphur compounds:** Leeks, onions, garlic
- **Anthocyanins** : Eggplant, grapes, berries
- **Beta carotene:** Pumpkin, Mangoes, Apricots, Carrots, Spinach, Parsley
- **Catechins** : Tea
- **Copper** : Seafood, Lean meat, Milk, Nuts, Legumes

- **Cryptoxanthins:** Red peppers, Pumpkin, Mangoes
- **Flavonoids** : Tea, Green tea, Citrus fruits, Onion, Apples
- **Indoles** : Cruciferous vegetables such as Broccoli, Cabbage, Cauliflower
- **Lignans** : Sesame seeds, Bran, Whole grains, Vegetables
- **Lutein** : Corn, Leafy greens (such as spinach)
- **Lycopene** : Tomatoes, Pink grapefruit, watermelon
- **Manganese** : Seafood, lean meat, milk, nuts
- **Polyphenols** : Thyme, oregano
- **Selenium** : Seafood, offal, lean meat, whole grains
- **Vitamin C** : Oranges, Berries, Kiwi fruit, Mangoes, Broccoli, Spinach, Peppers
- **Vitamin E** : Vegetable oils, Nuts, Avocados, Seeds, Whole grains
- **Zinc** : Seafood, Lean meat, Milk, nuts
- **Zoochemicals:** Red meat, Offal, Fish

Consuming foods rich in antioxidants are good for our health and may also help to lower our risk of infections and some forms of cancer. So, increase your antioxidant intake by eating more nuts, seeds, legumes, fruits and vegetables. ❑

❍ Associate Professor, Deptt. of Zoology, A.N.college, Patna

ETHICS AND THE STATE

AN APPRAISAL

Various proposals have been made for codes of ethics for legislators and administrators or other special groups of public officials. These codes are comparable to the codes which have been adopted by various professional and business groups. Good will alone is not enough.

✍ Dr. Abha Singh

After independence when the Indian constitution was framed and our governmental machinery was set-up, the conditions were quite different from what we find today. Men lived and thought amid the simple surroundings of an agricultural society. In this pre-industrial and post-colonial surrounding there was no corporations to be regulated, nor such diverse interests to be reconciled as we face today in our society with its specialization and its concentration of wealth. In those days we used to think more in terms of static and fixed institutions. We hoped that our country would remain agricultural and that factories to supply our other needs would keep on production. Hence the main function of the government was to keep order and to help individuals to get a fair chance in the world.

However, today the situation is appalling. In the present age of information technology, government as well as public is exposed to difficulties at various levels. The population explosion has led to scarcity of food and other materials which are essential for a qualitative life. Apropos to it the government has failed miserably in adopting policies which could keep a balance between personal and social needs of man. Among the social needs development and infrastructure, which are controlled by the government, are pivotal. As we all know, on the one hand, India is lagging far behind in these areas and, on the other scams resulting in squandering of billions of rupees are taking place off and on. All this has led Indian public to question the authority of government and politicians as well. A hurried inference is drawn that the ethical level of persons concerned with politics and administration has nose dived. This paper intends to examine the aforesaid allegation and to find a way out of the quagmire. While scanning the issue we shall be confining ourselves to the politics or politicians and government officials of a democratic setup only.

The pathetic condition of the government has prompted a section of the society to think that politicians are unnecessary classes; that they create litigation, are responsible for all the difficulties in life, and prevent people from behaving according to their own likes and dislikes. Such complaints are found in every section of the society. Firstly, there is the ordinary man who dislikes politicians because he thinks that, if politicians were eliminated, there would be no litigation. But he never inquires as to what would be the ruling principle in the society in which there was no governance. These people forget that there is only one choice either the rule of force or the rule of law; according to their logic, the rule of force is superior to the rule of law. They fail to understand that if the rule of law, for which the politician stands, were eliminated, we might revert to barbarism.

There is another class which does not seem to have any use for the politician, the exuberant intellectual. The view of this class is that the politician with the support of majority in office plays a mockery of even the fundamental principles of law. In some cases, this criticism is even carried to the extent of condemning the constitution because it invests abundant power to the executive.

However both the attitudes, stated above, ignore the very nature of society. If there were no constitution and no one to govern properly then it would tend to be guided by passion, prejudice and even vindictiveness. Where legislators have a well drilled majority, it is apt to mistake the will of the ruling group for the will of the people; but human nature being what it is, that will is not often guided

by foresight or detachment.

It is therefore of the highest importance that, in a well governed state, stability and equality should be guaranteed by the rule of law. This rule is not arbitrary regulation of majority decision. It is the rule of law enacted with due deliberation and after due consideration of the opposite view and interpreted by the courts in the fundamental law. It is only guarantee against complete autocracy or irresponsible majority rule on the part of the government.

The term government refers to the persons who have the function of political control for the time. The members of government are distinguished from the ordinary citizens, who are members of the state but not a part of the governmental body. The conceptions of the goal of the democratic state as power and the tendency to separate politics from ethical considerations have had far-reaching and occasionally unfortunate effects.

> ***"Laws may be arbitrary and tyrannical and they may represent powerful minority and self-interest groups. Consequently, we are led to a fourth principle, the principle of consent. Democracy is based on the supposition of the desirability of popular control over major issues of policy."***

Before we delve any further, let us scrutiny the concept of democracy[1]. Democracy is not just a theory of government or statecraft; it is also a theory of man and of human society. It is the way of life which rests essentially on moral foundations, diametrically opposite to the totalitarian conception which is a denial of some of the basic postulates of morality. In the first place democracy is based on the conviction of the worth and dignity of man. Right is based on good and the good is that which has value for persons. Man, just because he is a person or a self with self-consciousness, intelligence, ethical discrimination, aesthetic appreciation, and other unique characteristics, is an end in himself. Man has a degree of transcendence in that he lives at the point where nature and spirit somehow meet.

In the backdrop of the nature and worth of persons, the second presupposition of democracy is the concept of human freedom. Persons must be free to think and express their thoughts and feelings. Freedom is not a privilege granted by the state or any group in society. To accept this view is to accept the totalitarian outlook. Freedom is based on the nature of man and the conditions necessary for his moral, intellectual and spiritual development. Freedom while central in our way of life is not an absolute. Freedom unrestrained by responsibility and self-control may lead to excesses and to conflict.

The third assumption of democracy is the rule of law. Democracy implies the rule of law or the life of freedom under law. Man can rigidly demand only that amount of freedom which does not impair the freedom and rights of others. Democracy strives for the middle or reasonable course between anarchy and tyranny. The aim is justice, or giving every man his due. Though complete justice is seldom if ever actually achieved, if laws are clear and reasonable and enforcement is fair and humane, most persons will support the laws and desires to see them enforced. Laws give a definition of the situation which makes conduct uniform and dependable. The rule of law helps to eliminate passion, prejudice and privilege; persons can appeal from the decisions of officials to this rule of law administered by the courts.

Laws may be arbitrary and tyrannical and they may represent powerful minority and self-interest groups. Consequently, we are led to a fourth principle, the principle of consent. Democracy is based on the supposition of the desirability of popular control over major issues of policy. Government must rest on some power or authority. Power in itself is not evil; it is the abuse of power that is the evil. Irresponsible power tends to be used in the interest of the group that exercises the power. Ideally or in a perfect society each man would appreciate and support each law. But since the perfect society never exists the next best thing is the majority rule with the right of the minority to protest or to become the majority if it is able to do so through persuasion and change. The principle of consent implies a readiness to debate issues

and to settle them through discussion and deliberation. As Amartya Sen puts it:

"What is more important to note is that the totality of these new contributions has helped to bring about the general recognition that the central issue in a broader understanding of democracy are political participation, dialogue and public interaction".[2]

A couple of additional principles or postulates of democracy may be mentioned briefly. Both are related to the concept of general welfare explicitly affirmed in the constitutions of some states and implied or assumed in others. As a fifth principle, democracy entails that this is the kind of world that can be made better and that persons have a responsibility to work in an attempt to achieve that end. This is the principle of betterment and progress. This is not a superficial optimism, a belief in automatic and continuous progress. On the other hand, it is not pessimism, which refuses to hope and work for better men and conditions. Democracy looks forward from what is to what ought to be. As gains and improvements are made possible, there is the conviction that they ought to be widely distributed among the people.

> ***"A leading Indian daily writes: 'The stench of corruption spreads quickly from Delhi. With the news that Tamil Nadu chief minister's daughter, Kanomozi, is soon to be charged by the CBI, the money trail in Raja's 2G scam seems to be established, the noose appears to be tightening and the DMK's PR machine is working overtime to spread "sincere lies" before the state election...'"***

This brings us to the sixth principle, the notion of equality. The drive toward equality or toward the elimination of artificial inequality has eliminated the barriers of property, religion, class, colour, sex, race in civil and political affairs. The belief in equality arises from the conviction that, in spite of physical, intellectual and other differences, men possess in their common humanity a quality which is worth cultivating. Laws and institutions may be arranged either to emphasize or magnify the differences which divide men or to stress the common humanity which unites them.

However, the gist of democracy lies in the general understanding as 'one man one vote'. "The *niti-oriented* institutional understanding of democracy, seen in terms just of ballots and elections, is not only traditional but it has been championed by many contemporary political commentators, including Samuel Huntington: 'Elections, open, free and fair, are the essence of democracy, the inescapable sine qua non'."[3]

Nevertheless, the lower nature of man, the evil or the beast within him, urges him to take every advantage of his fellows, to get and to hold the most for himself and to exclude others. The higher nature of man strives for right based on human welfare and for the right of both the weak and the strong to live and help live. The democratic task is to give all men an opportunity to grow and to mature. A state is more or less democratic depending upon whether the people have more or less opportunity to share in controlling their government and the conditions under which they live.

The present scenario of Indian politics and bureaucrats is that a few politicians as well as government officials are honest and desire to serve the public interest. Such persons give effective and efficient service and deserve better recognition than they are receiving. Still it is sad to note that standards of public morality have been progressively going to the dogs, with no sign of improvement as needed for the higher standards of demand. Though there are occasional slumps or dips in the long time trend, our standards in political life, is not higher than those in colonial days. One may arguably say that today public office is quite generally viewed as a means to wealth.

A good number of government officials and politicians have carried on practices which have lowered the prestige of government and its officials. Today anyone who scans the newspaper headlines will find numerous accounts of tax scandals, voting frauds, political decisions influenced by means of "gifts", protection for underworld characters, shady business deals involving some public agency and so on and so for. Some officials do not see clearly the issues involved and fall into unethical practices through ignorance. A small number may consciously use political office to promote their private interests. A leading Indian daily writes: 'The stench of corruption spreads quickly from Delhi. With the news that

Tamil Nadu chief minister's daughter, Kanomozi, is soon to be charged by the CBI, the money trail in Raja's 2G scam seems to be established, the noose appears to be tightening and the DMK's PR machine is working overtime to spread "sincere lies" before the state election...' [4]

Apropos to such deliberations of the intelligentsia of our country, general public cynically believe that politics is the art of sincere lie and cite the example of Dhritarashtra in the Mahabharata who flourished through hypocrisy and nepotism. Modern India is not so different from Hastinapur and it appears that even Indian voters appear to be bribed. "Populist giveaways have always been a great temptation. Roman politicians devised a plan in 140 BC to win the votes of the poor by giving away cheap food and entertainment they called it 'bread and circusses'. Punjab's politicians gave away free power and water to farmers, which destroyed the state's finances and also the soil (as farmers over pumped water)."[5] Notably, an election is supposed to enforce accountability in competitive politics. A voter should vote on the basis of performance and not on the basis of free gifts. The fact latent in the free gifts that less money would be available to invest in the future in roads, ports and schools i.e. development.

All this is due to the lack of good values. When we think of Indian values, we normally think of personal values such as family, religion and respect for elders. These things are notably Indian. "However ask someone to articulate Indian community values, and there won't be a clear answer. Do we value health or education? Do we value democracy where people have a greater say in how they are governed, or do we believe in power in the hands of a select few to whom the laws don't apply? Do we value honesty, or do we value getting a job done anyhow? Do we believe in frugality, or do we want to show off our wealth? Do we value our local communities, or do we value being part of India?...There are conflicting response to any of these questions in the India we see around us today" [6] Owing to deficiency in having a clearcut understanding of core values, which are vital to any society and human being, in our state scams happen, nepotism exists and the government doesn't care about its people.

Standards of public morality influence and are influenced by standards of private morality. If there is a double standard in this area it appears to favour the governmental officials, since the public expects a higher standard of officials than of private citizens. We condemn public servants for behaviour which is a fairly normal part of business and private life. We condemn and turn from office the official who takes a bribe. On the other hand, the public tends to overlook and usually fails to punish the one who offers the bribe.

Simultaneously, it is arguably said that the pressure upon administrators or other public officials to lower their standards or to engage in corrupt practices comes from many directions and may be very strong. Moreover, in the federal government, the forces that would drive public servants from the straight and narrow path of virtue center chiefly upon a limited area, the area in which government is heavily "action-laden." This is the area in which there are big economic stakes, where the decision of legislators and administrators directly affect the business, or the property, or the income of particular groups or individuals. The abuses of discretion or the exploitation of power are most serious chiefly where the government is dispensing valuable rights and privileges, constructing extensive public works, spending vast sums for military supplies and equipment, making loans, granting direct or indirect subsidies, levying taxes, and regulating the activities of privileged monopolies or economic practices in which there is a public interest.

There are some special problems which legislatures face. One problem which often has serious implications is the very high cost of running for elective offices, especially in national and state governments and sometimes in county, municipal or other areas of local government. Campaign funds and workers have to be secured, and many of the large donors want some favors in return of their helps. These favors may be jobs for themselves or friends, special legislation, contracts, subsidies, loans, insurance, or other privileges. The pressure to grant such favors explains in part why gambling and other antisocial practices are occasionally tolerated by officials in large cities.

Other moral problems facing the legislator include the following: shall the legislator vote according to his best judgment of the public interest at stake or in line with party policy or with popular sentiment in his constituency? How shall the legislator conduct himself in dealing with congressional investigations? Party interests may be involved. There have been many demands for a fair code

and for reforms in this field. Again, how shall the legislator deal with administrative agencies or bureaus when his constituents ask for aid in obtaining favorable decisions on issues in which they have an interest?

A number of high officials in government have recommended that legislators and administrators make a public disclosure of private incomes. Such publicity, it is believed, would be a deterrent to improper conduct. In order to free themselves from private economic interests, some officials have voluntarily sold their stocks and bonds and have invested the money in investment trusts or have used it for other purposes. Some officials have voluntarily disclosed the nature and amounts of their income.

Various proposals have been made for codes of ethics for legislators and administrators or other special groups of public officials. These codes are comparable to the codes which have been adopted by various professional and business groups. Good will alone is not enough. Men who face special or unique problems need to know "the rules of the game" that is, just what is considered right and what wrong. Such codes, if kept up-to-date, made fairly specific and used as the basis of disciplinary action, can be useful guides for conduct and powerful means for maintaining high moral standards in administration as well as politics. In this backdrop, some of the following acts of administrators should be declared unethical:

1. Involving in any personal business transaction or private arrangements for personal gain that was based upon the official position or confidential information of the official.
2. Receiving any valuable gift, favour, or service either directly or indirectly from any individual or organization with which the official did business on behalf of the government.
3. Deliberating on future employment outside the government with an individual or organization with which there was pending official business.
4. Revealing valuable economic or commercial information of a confidential character to unauthorized persons or disclosing such information in advance of it's authorized date of release.
5. Getting unduly involved (such as, through frequent luncheons, dinners, parties or other expensive social engagements) with the individuals outside the government with whom the official transacted business on behalf of the government.

Likewise, some of the suggestive rules that should be adhered by the legislators in order to maintain ethical codes are as follows:

1. Akin to a judge debarring himself from decisions in which he has a direct personal financial stake, so shall a legislator debar himself from legislative decisions respectively, or, if he takes action he shall fully disclose the nature of his interest.
2. A legislature shall never use his office to exert legal pressure over the decisions of executive or administrative agencies.
3. He should treat witnesses who testify before committees on which he sits with utmost courtesy and fairness, following self-imposed limitations.
4. He should not misuse his privilege of Congressional immunity; he should not say anything on the floors of the Congress which he would not have guts to declare outside, nor should he betray the official confidence of Congress, or of any committee thereof.
5. He should not indulge in personal vilification of any kind, but he shouldn't hesitate in criticizing public figures and public policies with firmness and courage whenever facts of the public justify such criticism.
6. He should not vote on any issue without any attempt to consider the voiceless interest of the unorganized in the society.
7. He should endeavor constantly to interpret interests of his constituents in the perspective of total national interest.
8. He should try to be loyal to the promises of his political party, and thus to strengthen party teamwork and party responsibility in the Congress.
9. He should not waste his own or his colleagues' time with irrelevant and inconsequential talks in committee or on the floor.
10. Whether as a member of the majority or minority, he should attempt in his actions and words to educate and clarify, never to obscure or confuse.

References:

1. Harold H. Titus, ***Ethics For Today***, Eusaria Publishing House (Pvt.) Ltd., New Delhi,1966, pp.432-435.
2. Amartya Sen, ***The Idea Of Justice***, Penguin Books, 2010, p.326.
3. Sen, p.326
4. Gurcharan Das, "Politics of freebies promise a bleak future", ***Times of India***, Patna ed., 04th April, p.8.
5. Das, 04th April, p.8
6. Chetan Bhagat, 'Adding Values to Life', ***The Times Of India***, Patna ed., January 1, 2011.

❑

❍ Professor & Head, P.G.Dept. of Philosophy, A.N.college, Patna

राजभाषा नीति और हिन्दी की समासिक स्थिति

हिन्दी के महत्व को रेखांकित करते हुए महात्मा गाँधी ने 10 अप्रैल 1935 को हिन्दी साहित्य के इन्दौर सम्मेलन में कहा था कि 'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनाना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को नहीं मिल सकता'।

✍ सोना सिंह

'राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन' मात्र राजनीतिक स्वतंत्रता की लड़ई नहीं थी। बापू और उनके समालीन राजनेताओं ने आजादी से पूर्व यह सोच रखा था कि राष्ट्रीयता, देश–भक्ति की भाषिक अभिव्यक्ति बहुभाषी राष्ट्र भारतवर्ष में केवल हिन्दी करेगी। देश की सम्पूर्ण जनचेतना को एक सूत्र में बाँधने में यदि भारत की अपनी कोई भाषा सर्मथवान है तो वह केवल हिन्दी है। इसलिए संविधान निर्माताओं ने गम्भीर विचार–विमर्श के उपरान्त यह निर्णय किया कि देवनागरी लिपि में हिन्दी ही संघ की राजभाषा होगी। किन्तु संविधान सम्मत प्रावधान इतने लचीले बनाये गये कि विषय अनुसार उसकी भिन्न–भिन्न व्याख्याएँ स्वीकृत कर दी गयी। प्रथम, संसद में कार्य–संचालन के लिए प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा। द्वितीय, संघ की राजभाषा। तृतीय, कानून निर्माण के लिए और उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के उपयोग में लायी जानेवाली भाषा। चतुर्थ, एक राज्य और संघ के बीच सम्पर्क हेतु पत्राचार के लिए राजभाषा, तथा पंचम, हिन्दी भाषा के विकास के लिए कतिपय निर्देश। इन्हीं पॉच मानकों को आधार बनाते हुए संविधान निर्माताओं ने संविधान के अनुच्छेद 120(भाग – 5), अनुच्छेद 210 (भाग – 6) और अनुच्छेद 343 से 351 (भाग – 17) भारतीय संघ की राजभाषा नीति का नियमन किया। इन्हीं प्रावधानों के द्वारा संघ और राज्यों की राजभाषा का विस्तार पूर्वक निर्धारण किया गया।

> **"महात्मा गाँधी ने 10 अप्रैल 1935 को हिन्दी साहित्य के इन्दौर सम्मेलन में कहा था कि 'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को नहीं मिल सकता'।"**

हमारे संविधान के अनुच्छेद 120 में प्रावधान किया गया है कि संसद में सदस्यों द्वारा हिन्दी अथवा अँग्रेजी भाषा प्रयुक्त होगी। तथापि यदि कोई सदस्य यदि चाहे तो सदन के सभापति अथवा अध्यक्ष की अनुमति से अपनी मातृभाषा में भी सदन को संबोधित कर सकता है। ऐसे हीं प्रावधान के फलस्वरूप संसद में दुभाषियों की व्यवस्था भी की गयी है। इसी अनुच्छेद में व्याख्यायित किया गया कि जबतक संसद विधि द्वारा अन्य उपबंध न करे तबतक संसद में अँग्रेजी का प्रयोग पन्द्रह वर्षों तक चलता रहेगा तथा 26 जनवरी 1965 को स्वतः समाप्त माना जाएगा। किन्तु राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 के अर्न्तगत प्रावधान कर दिया गया कि 1965 के बाद भी हिन्दी के साथ–साथ अँग्रेजी का प्रयोग चलता रहेगा। संविधान के अनुच्छेद 344 में एक व्यवस्था यह की गयी थी कि संविधान लागू होने के पाँच वर्ष बाद और फिर दस वर्ष बाद एक आयोग का गठन किया जाय जो एक अध्यक्ष और अष्टम अनुसूची की विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले ऐसे दूसर सदस्यों से मिलकर बनेगा, जिन्हें राष्ट्रपति नियुक्त करे। 1955 में स्व0 बी0 जी0 खेर की अध्यक्षता में एक आयोग संगठित किया गया जिसने 31.07.1956 को अपना प्रतिवेदन राष्ट्रपति को सौंपा। सितम्बर 1957 में संविधान की धारा 344(2) के अनुसार इसपर विचार करने के लिए एक तीस सदस्यीय संसदीय समिति तत्कालीन गृहमंत्री स्व0 गोविन्द वल्लभ पंत की अध्यक्षता में गठित की गयी, जिसने 1959 में राष्ट्रपति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समिति की अनुशंसा थी कि 1965 के बाद भी सह–भाषा के रूप में अँग्रेजी का प्रयोग चलता रहे। अनुच्छेद 345 में प्रावधान किया गया था कि यदि राज्य का विधान मंडल हिन्दी या राज्य की अन्य भाषाओं को अंगीकार नहीं करता है तो ऐसी स्थिति में राजकीय प्रयोजनों के लिए अँग्रेजी का प्रयोग जारी रह सकता है।

वर्ष 1976 राजभाषा नीति के इतिहास में मील का पत्थर है क्योंकि इसी वर्ष राजभाषा विभाग और राजभाषा समिति का गठन हुआ जिसमें भारत सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए हिन्दी पढ़ना अनिवार्य है। 1976 तक यह स्थिति थी कि केन्द्रीय कार्यालयों में सारा कार्य अँग्रेजी में हीं होता था।

जबतक की हमारी राजभाषा नीति विशेषतः प्रेरणा और

प्रोत्साहन की नीति रही है और इसके लिए समय–समय पर अनेक प्रयत्न भी किये गये हैं। गृहमंत्रालाय, राजभाषा विभाग तथा सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फिल्म प्रभाग आदि के माध्यम से अनेक वृतचित्रों, सूचनाओं और भावनात्मक दृश्य, मधुर संगीत और मनोहारी दृश्यों के आकर्षक रूप प्रदर्शित किये गये यथा अरूणांजलि, मेघांजलि, नागांजलि, मणिपुर गाथा, केरलांजलि, उत्कलांजलि आदि। इन फिल्मों के द्वारा कर्मचारी बंधुओं को हिन्दी में कार्य करने के लिए अनुप्रेरित किया गया। राजभाषा हिन्दी के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह तथा हिन्दी पखवाड़ा मनाने का कार्यक्रम आयोजित किया जाता रहा। किन्तु, अँग्रेजी में कार्यक्रम करनेवाले कर्मचारियों को मान–सम्मान तथा हिन्दी में कार्य करने की कोशिश करने वालों को हेय दृष्टि से देखा जाता रहा है। प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति राजभाषा के परिप्रेक्ष्य में उपयोगी साबित नहीं हो पा रही है।

हिन्दी के महत्व को रेखांकित करते हुए महात्मा गॉधी ने 10 अप्रैल 1935 को हिन्दी साहित्य के इन्दौर सम्मेलन में कहा था कि 'अगर हिन्दुस्तान को सचमुच एक राष्ट्र बनना है तो चाहे कोई माने या न माने राष्ट्रभाषा तो हिन्दी ही बन सकती है, क्योंकि जो स्थान हिन्दी को प्राप्त है, वह किसी दूसरी भाषा को नहीं मिल सकता'। इसी से मिलता जुलता विचार 20वीं शती के महाकवि कवीन्द्र रवीन्द्र ठाकुर का था – ''आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल–कमल के समान है, जिसका एक–एक दल, एक–एक प्रान्त, भाषा और उसका साहित्य–संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रान्तीय बोलियॉ, जिनमें सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने–अपने घर में रानी बनकर रहें, ... और आधुनिक भाषाओं के हार की तरह मध्यमणि हिन्दी भारत–भारती होकर विराजती रहे। सुब्रह्मण्य भारती ने भी दक्षिण वालों को हिन्दी सीखने का परामर्श दिया था।

उपर्युक्त तथ्यों से यह सर्वसिद्ध होता है कि सैकड़ों वर्षों में देश की समासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति की माध्यम रही। हिन्दी को उचित हक देने की जिम्मेवारी केन्द्र की मजबूत मोदी सरकार की बन गयी है। लौह पुरूष की भूमिका में देश के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह को इस संदर्भ में नयी पहल करनी चाहिए जिससे सदा के लिए इस समस्या का समाधान हो जाय। हिन्दी भाषी न होते हुए भी अमीर खुसरो, जायसी, नानक, रहीम, दारा, गुरूगोविन्द सिंह, स्वामी दयानन्द, महात्मा गॉधी, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, सुब्रह्मण्य भारती और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के हिन्दी–प्रेम से हिन्दी समाहत होती रही है। ❑

❍ एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

प्रेरक कथा

अधूरी कहानी

बिल्ली के गले में घंटी बॉधने की कहानी सबने सुनी है। दरअसल, वह कहानी आधी है। लंबे समय से इनसान की सैकड़ों पीढ़ियॉ वही आधी कहानी सुनती आ रही हैं। पूरी कहानी अब आ पाई है। लेकिन पूरी कहानी सुनाने के पहले परंपरागत आधी दोहराना जरूरी है। वह यों है- एक राजमहल के चूहे बहुत परेशान थे, क्योंकि राजा ने बिल्ली पाल रखी थी। एक दिन चूहों की संसद् का आपातकालीन सत्र आयोजित किया गया। सभी चूहे डरे-सहमे थे। बुजुर्ग चूहों ने एक सर्वसम्मत प्रस्ताव रखा कि ''बिल्ली के गले में घंटी बॉध दो।'' प्रस्ताव सदन में पास हो गया। सवाल उठा कि ''बिल्ली के गले में घंटी कौन बॉधे''? चूहों के पुराण में बिल्ली के गले में घंटी बॉधने का गुरूमंत्र दर्ज है। लेकिन सहस्त्राब्दियॉ बीत गई, कोई माई का लाल चूहा यह कमाल कर नहीं पाया। यह हुई बीसवीं सदी के चूहों की बात, जो यह कहानी सुनते आए हैं। इक्कीसवीं सदी के चूहें एकदम अलग हैं। उन्हें बुजुर्ग बता रहे थे कि विडाल समस्या का समाधान हमारे ग्रंथों में है। लेकिन सवाल यह है कि अब लोग वेद-वाक्यों पर चलते ही नहीं तब इक्कीसवीं सदी के दो जवान चूहे आगे आए और बोले कि ''घंटी हम बॉधेंगे।'' बुजुर्गों ने कहा कि '' तुम बॉधोगे!'' लेकिन दूसरे दिन सवेरे-सवेरे सारे चूहों ने वह काम कर दिखाया था। बुजुर्गों ने पूछा, ''यह कैसे किया?'' युवा चूहे बोले, '' आपने पुराणों में लिखा पढ़ लिया और हाथ-पर-हाथ धरकर बैठ गए। चिंतन के द्वार बंद कर लिये। हमारा केमिस्टों की दुकान पर आना-जाना है। वहॉ से नींद की गोली ले उड़े। बिल्ली के दूध में उसे मिला दिया। बिल्ली बेहोश हो गई। हमने आगे बढ़कर उसके गले में घंटी बॉध दी।'' ❑

आग की लपटों को चिमटों से नहीं पकड़ा जा सकता

डॉ. कृष्णा सिंह

अज्ञेय का महत्व साहित्य की दुनियाँ में हमेशा बना रहेगा। इसलिए कि उनका लेखन जिन मूल्य स्तरों को खोजता है उसका महत्व कभी कम होने वाला नहीं है। उनके साहित्य को पढ़कर बराबर यह लगा कि जो बाहर का उद्वेग है– महत्व उसका नहीं है। महत्व उसका है, जो हमारे भीतर साक्षात्कृत होता है। बकौल धर्मवीर भारती 'चरम तन्मयता का क्षण जो एक स्तर पर सारे बाह्य इतिहास की प्रक्रिया से ज्यादा मूल्यवान सिद्ध हुआ है, जो क्षण हमें सीपी की तरह खोल गया है– इस तरह कि समस्त बाह्य अतीत, वर्तमान और भविष्य सिमटकर उस क्षण में पूंजीभूत हो गया है, और हम हम नहीं रहें।

अज्ञेय लिखते हैं– 'जीवन की बात जब मैं कहता हूँ, तब अपने से बड़े एक संयुक्त व्यापक समिष्टगत जीवन की बात सोचता हूँ– उसी के साथ एक होना चाहता हूँ– अगर वह बहुत बड़ा प्रवाह है तो उसकी धारा को बांहों से घेर लेना चाहता हूँ– या वह छोटे मुंह बड़ी बात न लगे तो कहूं उस पर एक पुल बांधना चाहता हूं चाहे क्षण भर के लिए।'

आग की लपटों को चिमटे से नहीं पकड़ा जा सकता। रिवायतों, संस्कारों या वादों के चिमटे से साहित्य को पकड़ कर रखने वाले समीक्षक अज्ञेय का विरोध करते रहे और अज्ञेय थे कि बिना इन सबकी चिंता किये लिखते रहे। उनकी बेहद कटु आलोचना भी हुई किन्तु इससे इंकार करने की गुंजाइश नहीं थी कि उन्होंने संवेदना की छोटी–छोटी नदियों को वैचारिक और कलागत सत्य की नदियों से जोड़ दिया, पूरे देश की कला और चिंतन की महानदी से। अदीब को सतही और सिमटे हुए दायरों से निकाल कर गहरे और रूहानी अर्थों तक उठा लेने की जद्दोजहद में वह शामिल रहे। उनका विशाल साहित्य जिंदगी के व्यापक अर्थों को पहचानने की एक संभावना पैदा करता है। उसका महत्व इस दृष्टि से भी है कि वह जीवन शक्ति का आभास देता है। निराशा की चरम धड़ी में भी वह स्थिति को अतिक्रमित करने के लिए प्रयत्नशील होता है। मानव संबंधों के व्यवस्था क्रम और उसमें होने वाले बदलावों के बारे में अज्ञेय की समझदारी हमें प्रभावित करती हैं।

अज्ञेय का सांस्कृतिक दृष्टिकोण इस लिहाज से महत्वूपर्ण है कि वह व्यक्तित्व का विस्तार और प्रसार मांगता है, संकोच या छटाव नहीं। संस्कारी व्यक्ति बराबर नयी उपलब्धियों को आत्मसात करता चलता है। अज्ञेय अहं पर बल नहीं देकर वैयक्तिकता के प्रति आग्रहशील होते हैं। इस वैयक्तिकता के कारण स्वतंत्रता के सदुपयोग की इच्छा को जागृत करणे वाली वेदना का अनुभव भी उन्हें होता है। इसी का परिणाम है उनके साहित्य में रूढ़ सामाजिक नैतिकता के प्रति विद्रोह। जो रूढ़ व्यवस्था व्यक्तित्व को कुंठित करती हो उसे संस्कृति सम्मत नहीं कह सकते। कुंठित व्यक्ति संस्कृति की गिरावट का सूचक है।

अज्ञेय बतलाते हैं कि सांस्कृतिक मूल्यों का वर्तमान अनिश्चय, सत्य के प्रच्छन्न, तिरोहित, विकृत रूप को स्वच्छ, स्पष्ट और प्रकृत बनाकर हीं दूर किया जा सकता है। यह भी सम्भव है, जब मनुष्य के व्यक्तित्व और स्वाभिमान को केन्द्र में रखकर आस्थापूर्ण दृष्टिकोण से सारी स्थिति पर विचार किया जाय। उनका मानना है कि उच्चकोटि का नैतिक बोध और उच्च कोटि का सौंदर्य बोध कम से कम कृतिकार में प्रायः साथ चलते हैं। इसलिए कि दोनों बोध, मूलतः बुद्धि के व्यापार हैं, मानव का विवेक ही दोनों मूल्यों का श्रोत है।

किसी कलाकृति के सही मूल्याकंन के लिए वादी होने से अधिक आवश्यक है विवकेशील और संवेदनशील होना। विभिन्न जीवन दृष्टियों और मूल्यों की टकराहट के कारण जो अंतर्द्वन्द आज के लेखक को उद्विग्न कर रहा है उसकी पहचान और परख अज्ञेय को बहुत अधिक थी। हमारे बीच वे नहीं रहे, पर उनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। मैं इस विराट कवि, चिंतक, मनीषी को शत–शत नमन करती हूँ।

❑

एक सन्नाटा बुनता हूँ

पहले मैं एक सन्नाटा बुनता हूँ।
उसी के लिए स्वर तार चुनता हूँ।
तानाः मजबूत चाहिएः कहाँ से मिलेगा?
पर कोई है जो उसे बदल देगा,
जो उसे रसों में बोर कर रंजित करेगा,
तभी तो वह खिलेगा।
मैं एक गाढ़े का तार उठाता हूँ
मैं तो मरण से बंधा हूँ, पर किसी के और
इसी तार के सहारे
काल से पार जाता हूँ।
फिर बानाः पर रंग क्या मेरी पंसद के हैं?
अभिप्रायः भी क्या मेरे छंद के हैं?
पाता हूँ कि मेरा मन ही तो गिर्री है, डोरा है,
उधर से उधर, उधर से इधर,
हाथ मेरा काम करता है।
नक्सा किसी और का उभरता है।
यों बुन जाता है जाल सन्नाटे का
और मुझ में कुछ है कि उससे घिर जाता हूँ।
सच मानिए, मैं नहीं है वह
क्योंकि मैं जब पहचानता हूँ तब
अपने को उस जाल से बाहर पाता हूँ।
फिर कुछ बंधता है जो मैं न हूँ पर मेरा है,
वही कल्पक है।
जिसका कहा भीतर कहीं सुनता हूँ:
तो तू क्या कवि है? क्यों और शब्द
जोड़ना चाहता है?
कविता तो यह रखी है
हाँ तो वही मेरी सखी है,
मेरी सगी है।
जिसके लिए फिर
दूसरा सन्नाटा बुनता हूँ। - अज्ञेय

❍ एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

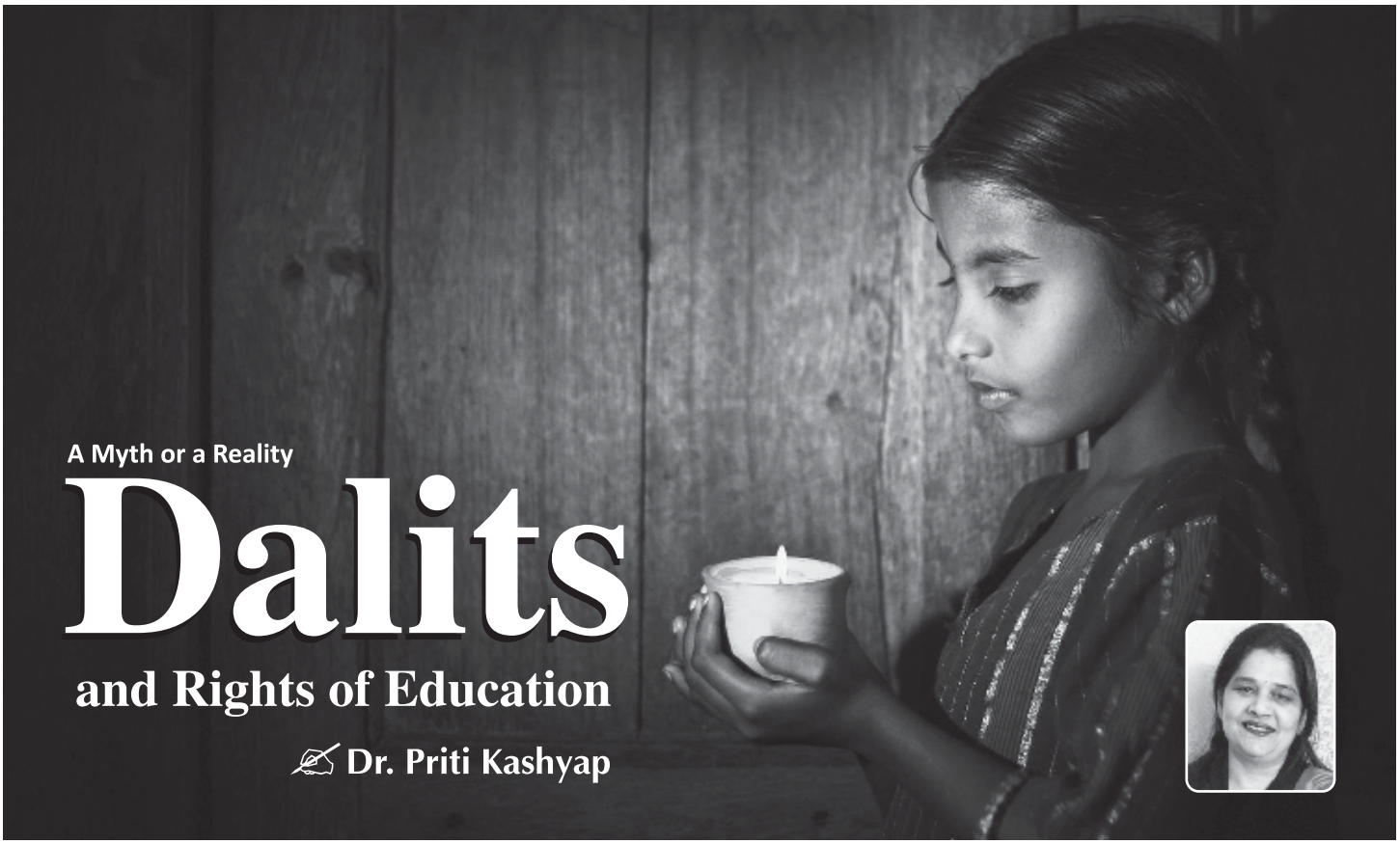

A Myth or a Reality

Dalits

and Rights of Education

Dr. Priti Kashyap

Education is one of the important means of reducing ignorance and inequality in society. It helps the individual to raise one's social status in various ways. Knowledge, skills, values, and attitudes acquired through education help one to lead a desired quality of life. Knowledge and education must be made available to all, as Dr. Ambedkar, the great Dalit leader and chief architect of the Indian Constitution has said.

The roots of educational deprivation of Dalit communities must be traced back to their position as untouchables in the caste structure of traditional Hindu society. These were the most polluted of castes that were hereditarily assigned the most defiling of occupations. As per 2011 census, India's Dalits numbered 167.2 million. There is a sizeable population among the Muslims and Christians who are known as Dalit Muslims (roughly estimated at forty two million) and Dalit Christians (roughly estimated at sixteen million). Dalit Muslims and Dalit Christians are not treated as Scheduled Castes by the government, through they experience untouchability from their coreligionists, are therefore not entitled to positive discrimination policies. On the other hand, Dalits who are converted to Sikhism and Buddhism do not face such deprivation.

ACCESS TO SCHOOLS

A Study by National Council of Educational Research and Training (NCERT) reveals that schooling is available within a significantly smaller number of predominantly Dalit habitations (37.03 percent) as compared to general rural habitations (49.79 percent). With regard to upper primary schools, access within Dalit habitations is lower (6.51 percent) as compared to general rural habitations (13.87 percent). (NCERT 1998, cited in Nambissan and Sedwal 2002).

Discrimination by teachers towards Dalit children is commonly found in many schools. Teachers have been found to maintain discriminatory attitudes and practices that underline caste relations in society.

NCERT study reveals that Dalits comprise only around eleven percent of teachers at primary stage, nine percent at upper primary stage and five to six percent at secondary stages of education. This implies that non-Dalit teachers, usually higher castes, by and large teach Dalit children. If fifteen percent of the teachers at all stages of primary and secondary education are Dalit teachers the situation of biased attitudes of teachers of high castes will be minimized. Moreover, their presence can act as deterrence to the incidents of discrimination and segregation.

LOW ENROLMENT AND HIGH DROPOUT RATES OF DALITS

As a result of discriminatory treatment, large number of Dalit children drop out of school, especially in the early primary stages. According to the 2002 India Education Report, school attendance in rural areas in 2000-2001 was 64.3 percent for Dalit boys and 46.2 percent for Dalit girls, compared to 74.9 percent among boys and 61 percent for girls from other social groups.

MID-DAY MEAL SCHEME AND CASTE DISCRIMINATION

As an incentive to increase the enrolment of children from marginalized communities various policies/schemes were initiated, such as free distribution of textbooks and uniform and the Mid-Day Scheme (MMS).

The incentive scheme of free distribution of textbooks and uniforms has no doubt improved school attendance and enrolment, as textbooks and uniforms are a major component of school costs. Mid-day meals were reported to cover 13.9 percent of schools, and barely 3.9 percent of the Dalits benefited. Many studies have also pointed out that children do not receive incentives in time, and often do not receive them at all, Irregularities and delays in distributing textbooks and uniforms and other incentives as well as corruption have left little impact on these marginalized communities. (Jabbi and Rajyalaksmi 2001).

DALITS AND CURRICULUM

The treatment of the caste system in textbook and curriculums suggest that the official curriculum barely acknowledges the existence of Dalit and tribal communities, despite the fact that they from nearly a quarter of India's population especially at the district and local levels in many States in the country. Recounting his own experiences of schooling, Illaiah also reveals that Dalit and lower caste children are alienated from the language and course content as both the content of education and the medium through which it is transacted do not relate to their own cultural experience.

The treatment of caste discrimination in textbooks and curriculums can strengthen caste division and prejudice. For instance, a report by the Mumbai-based non-governmental organization KHOJ found that ever progressive curriculums either exclude any mention of caste discrimina-tion or discuss the caste system in a way that suggest that caste inequities and discrimination no longer exist.

School processes and experience of education in Indian schools for Dalit students have produced good results. Their performance and achievement is relatively poorer in competencies such as mathematics and language when compared to children in general.

CONCLUDING OBSERVATION AND THE WAY FORWARD

The foregoing discussion on the problem of schooling of Dalit children in India reveals that the student from these communities have been facing discrimination of various kinds, despite the fact that such forms of discrimination are outlawed both in national law and the international law of human rights. They experience discrimination and restrictions in accessing schools, and getting mid-day meals, free textbooks and uniforms. They are segregated in classrooms and during mid-day meals. Their teachers curse themselves that in this life they are made to teach the most polluted people, the Untouchables. The school curriculum does not include topics of caste discrimination and human right education. Now the question is how to remove these caste biases and prejudices toward Dalit students. What can be done to bring an end to the apartheid-kind of system that prevails in India?

One way of bringing an egalitarian system and an end to caste discrimination is to dismantle the caste system. The Constitution has provided a framework. On the one hand, it abolishes the practice of untouchablity, and on the other hand, it introduces the positive discrimination measures to achieve integration of Dalit communities into the mainstream society. If the laws prohibiting untouchability, such as Untouchability Offences Act, 1955 (amended and renamed as Protection of Civil Rights Act, 1976 [1976 PCR Act] and the Prevention of Atrocities Act, 1989 (1989 POA) are implemented in their letter and spirit and the perpetrators of atrocities against Dalits are punished, the practices of discrimination in school also will gradually come to an end.

References ::

Ambedkar, B.R. 1987. Writing and speeches, vol. 3. Mumbai : Government of Maharastra.

Centre of Human Right and Global Justice (CHRGJ) and Human Rights Watch (HRW). 2007. Caste Discrimination Against Dalits or So-Called untouchables in India, Report submitted to CERD, Available at www.ohchr.org/english / bodies/cerd/docs/ngos/chrgj_hrw.pdf

Derez, Jean and Haris and Amartya Sen, Editors India Development. Delhi Oxford University, Press

Illaiah Kancha, 1996. Why I am not Hindu. Calcutta : Samya Publications.

Jabbi, Mona and C.Rajyalashmi, 2001. "Education of Marginalised social Group in Bihar", in Vaidyanayhan, A. and P.R. Gopinath Nair.

❑

❍ Associate Professor of Economics, A.N.college, Patna

कि भूल जावो

जिन्दगी के शोर में इतना न डूबो तुम
कि भूल जावो स्नेह–सहज–प्रेम यहाँ तुम

इन रोटियों के संग में इतना न नाचो तुम
कि भूल जावो स्नेह–सहज–प्रेम यहाँ तुम

नफरतों की आग में इतना न जलो तुम
कि भूल जावो स्नेह–सहज–प्रेम यहा तुम

टेढ़ी–मेढ़ी चाल में इतना न चलो तुम
कि भूल जावो स्नेह–सहज–प्रेम यहाँ तुम

निन्द में भी इतना गहरी न सोवो तुम
कि भूल जावो स्नेह–सहज–प्रेम यहाँ तुम।

निरूत्तर मैं

सिमट जाती है
जिंदगी मेरी
कभी–कभी
मेरी तस्वीर में
पूछती है हजारों प्रश्न
और अन्त करती है
यह पूछ कर–
यह तेरी मुस्कान अपनी है
या तेरा दर्द
मैं समझ–बुझ कर भी
रह जाता हूँ
निरूत्तर, मौन ।

डा. रमेश पाठक

प्रजातंत्र की शान हूँ

प्रजातंत्र की शान हूँ
मैं ही हिंदुस्तान हूँ

जहाँ भूख से जलते पेट
सड़ता अन्न गोदाम में
आशा पर उपवास है जिता
रोता हूँ ,नादान हूँ

सूख रहीं जहाँ पर नदियाँ
वन होते विरान हैं
बगुलों की जमात खड़ी
नेताओं की जान हूँ

भ्रष्टाचार का जहाँ समंदर
गंगा रोती कलकल कर
हिमवान का सिर झुकता नित
खादी की पहचान हूँ ।

भ्रूण में मरती हैं कन्यायें
न्याय की जगह अन्याय है
मतिभ्रम में है युवावर्ग
काले धन की मान हूँ ।

काव्य में प्रकृति चित्रण

प्रकृति से विच्युत काव्य अथवा साहित्य की परिकल्पना ही कठिन है। प्रकृति और मानव तथा प्रकृति और साहित्य का सम्बंध अत्यंत प्राचीन, अत्यंत आत्मीय और अपरिहार्य है।

डा. प्रतिभा सहाय

आदिकाल से ही प्रकृति कवियों के मनप्राणों में अपनी मनोमुग्धकारी माधुरी उड़ेलती रही है। वह समस्त विश्व वाड़.मय में प्रेरणा–प्रणोदय, विस्मय, सम्मोहन और आह्लाद औत्सुक्य का कार्य करती रही है। कवि–कल्पना ने प्रकृति को मानवी, सहचरी, सौंदर्यमयी, सुषमामयी और भावनामयी के रूप में देखा है। वैदिक काल में आप्तकाय ऋषियों के मानस को प्रकृति की उषा और संध्या ने अनंतज्ञान, अनंतआनंद और अनंतसौंदर्य की रहस्यमय अनुभूति करायी। प्राची के सुदूर क्षितिज पर लालिमामण्डित उषःबाला को प्रेरणा और प्रकाश की देवी के रूप में हमारे ऋषियों ने अनन्य श्रद्धा और स्नेह से परिप्लुत शब्दों में स्मरण किया है। संध्या की ढ़लती हुई किरणों में वैदिक ऋषियों ने अनंत शान्ति, अनंत विश्राम और अनंत नैसर्गिक सुषमा का रहस्योद्घाटन किया है। कहना नहीं होगा कि प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूपों ने, उसकी रंग–बिरंगी परिवर्त्तनशील छटाओं ने मंद–मंद समीरन, हरित वन–राजी, हिम मण्डित शैलशिखर और निर्झर, भूमिखण्डों में कुलाँचे भरती हिरणों और कुरंगबाल, मयूर तथा नाना पशुपक्षियों के किलोल और आनंद भरे वातावरण ने हमारे कवियों को और तत्कालीन वाड़मय को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

संस्कृत के आदिकवि महर्षि बाल्मीकि के कण्ठ से जब काव्य की सुमधुर धारा फूटी तो उसमें निःसर्गतः वनकान्तर में निवास करने वाले पशुपक्षियों के जीवन की करूणा ही विगलित थी। 'बाल्मीकि रामायण', जो संस्कृत वाड़मय का आदिमहाकाव्य परिगणित होता है उसके किष्किंधा काण्ड में तो प्रकृति की मनोरम दृश्यावलियों का और उससे प्रभावित काव्य के पात्रों के भावों का जितना सुन्दर वर्णन बाल्मीकि ने प्रस्तुत किया है वह इस बात का परिचायक है कि प्रकृति आदिकवि की प्रेरणा और जिज्ञासा का अधिष्ठान रही है। महाकवि कालिदास की रचनाओं में प्रकृति का जो महिमामण्डित सौंदर्यवर्णन मिलता है और प्रकृति को मानव भावनाओं की अभिव्यक्ति में जितने सुन्दर ढंग से पिरोया गया है, वह इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि इस कवि के मनप्राण में उसकी वाग्धारा के अणु–परमाणु में, सलिल में रस या पुष्प में सुरभि की भाँति समायी हुई है। 'कुमार सम्भवम्' के प्रथम सर्ग में कवि प्रकृति–वर्णन से ही अपनी काव्य रचना प्रारंभ करता है–

''अस्त्युतरस्यां दिशि देवतात्मा, हिमालयो नाम नागधिराजः
पूर्वापरौ तोयनिधीः वगाह्य स्थितः पृथिव्याइव मानदण्डः''

'मेघदूत' में कवि ने प्रकृति के तत्वों को अपनी भावनाओं के संवहन और सम्प्रेषण का अभूतपूर्व माध्यम बनाया है। अलकापुरी से निर्वासित यक्ष प्रियावियोग से अभिशप्त होकर रामगिरि की शिला पर जब एकाकी ''आषाढ़स्य प्रथमदिवसे.....'' की उद्भावना करता है तो धूम्रकण, जलकण आदि तत्वों से निर्मित पवन–तड़ित–जड़मेघ भी मानवीय रूपधारण कर यख की संवेदना के प्रति सहानुभूति दर्शाता

हुआ अलकापुरी की ओर गमन करता है। प्रकृति में मानवीय भावों का समावेश तथा प्रकृति और मानव के बीच आत्मीयता की भावना के प्रदर्शन का जो अपूर्व और अनन्य उदाहरण ''मेघदूत'' में मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है।

महाकवि जयदेव और वैराग्यानुरक्त कवि भर्तृहरि ने प्रकृति को अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का अनोखा माध्यम बनाया। दोनों ने षड्ऋतुओं का वर्णन जिस भावप्रवणता, सहजता और मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है, वह सहृदय पाठकों द्वारा अवश्य ही पठनीय है।''

''ललित लवंगलता परिशीलन कोमल मलय समीर'' (जयदेव) भर्तृहरि ने भी षड्ऋतु वर्णन में कमाल कर दिया है। इन दोनों कवियों ने प्रकृति को मानव का अंतरंग और मानव के प्रति अत्यंत आत्मीय और सहानुभूतिपूर्ण दर्शाया है। यों भी उनके वर्णन में प्रकृति की रश्मि छटा अवलोकनीय है।

अपभ्रंशकाल के कवियों ने भी प्रकृति को अपनी भावधारा के संवहन का माध्यम बनाया। संतकाल में कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास आदि महान कवियों ने प्रकृति को नाना रूपों, रंगों, भावों और अवस्थाओं में चित्रित कर इस बात का परिचय दिया है कि प्रकृति मानव औश्र मानवीय साहित्य से सर्वथा अभिन्न है। कोई भी श्रेष्ठ साहित्य, कोई भी अमर काव्य–कृति प्रकृति से प्रेरणा, सम्मोहन, संवेदना आदि का भाव ग्रहण किए बिना सफल नहीं हो सकते। महाकवि तुलसीदास ने कई स्थलों पर प्रकृति के माध्यम से मानव की सूक्ष्म से सूक्ष्म भावधारा तथा गूढ़ से गूढ़ संकेतों को बड़ी ही सफलता से अभिव्यक्त किया है। प्रियाहीन निर्वासित राम जब वर्षाऋतु की भयावह काली रात में मेघाच्छन्न मन्द्र ध्वनि पूरित आकाश की ओर दृष्टिपात करते हैं तो सहसा कह उठते हैं–

''घनघमंड नभ गरजत घोरा। प्रियाहीन डरपत मनमोरा।''

अथवा –

''हे खग मृग हे मधुकर श्रेणी। तुम देखी सीता मृगनैनी।''

यों भी तुलीसीदास जी ने प्रकृति के बाह्यरूप का वर्णन बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। शरत्काल में जब तुलसीदास लिखते हैं– ''बरसा विगत शरद ऋतु आई। लक्ष्मन देखहु परम सुहाई।।'' तो ऐसा लगता है जैसे तुलसीदास शरद्ऋतु के अंग–अंग को निहारते हुए भावविभोर होकर गा उठते हैं। सूरदास की अतिप्रसिद्ध पंक्ति–

''निशिदिन बरसत नैन हमारे।
कंचुकी पट सूखत नहि कबिहु, उरबिच बहत पनारे।''

कहकर कवि ने एक ऐसे रूपक की उद्भावना की है जिसमें मानव मन की समस्त अवस्था के साथ प्रकृति का पूर्ण तादात्मय स्थापित कर दिया गया है। इस प्रकार के अविस्मरणीय सांग रूपक में हम प्रकृति को सर्वतोभावेन मानव भावना में समाहित पाते हैं।

मलिक मुहम्मद जायसी के ''पद्मावत'' में षड्ऋतु वर्णन और बारहमासा का जो सुन्दर प्रयोग किया गया है और इस प्रकार भारतीय लोकगीतों की परम्परा का जो समन्वय उन्होंने प्रस्तुत किया

है वह प्रकृति के प्रति कवि के विशेष आग्रह का ही परिचायक है।

रीतिकालीन हिन्दी कवियों ने भी, जिनमें रसखान, बिहारी, पद्माकर आदि के नाम उल्लेखनीय है, प्रकृति का बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित किया है। पद्माकर ने तो कहीं–कहीं प्रकृति वर्णन में इतनी उत्कृष्टता दिखायी है कि सहज ही उनका आकलन करना कठिन जान पड़ता है। बिहारी आदि कवियों ने रीति परम्परा का निर्वाह करते हुए भी प्रकृति के शरद्, बसन्त, वर्षाकालीन दृश्यों को अपनी अभिव्यंजना का आश्रय बनाया है।

खड़ी बोली हिन्दी काव्य के जन्मदाता और हिन्दी वाड़मय को समुन्नति के पथ पर अग्रसर करने वाले प्रथम महारथी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी प्रकृति के प्रति अपने आग्रह से जी नहीं मोड़ा है। यमुना वर्णन में–

''तरणि तनुजा तट तमाल तरूवर बहु छाए।
झुके फूल सों जल परसनहित मनहुँ सुहाए।''

आदि पंक्तियों में भारतेंदु ने एक सप्राण और मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण सचेतन प्रकृति का दर्शन किया है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने ''कामायनी'' महाकाव्य तथा ''लहर'' आदि कृतियों के द्वारा प्रकृति रम्यता, भावप्रवणता, नैसर्गिक सुषमा और संवेदनशीलता का जो अद्भुत परिचय दिया है वह हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। अवश्य ही उन्होंने महाकवि रवीन्द्र और अंग्रेजी के कवि वड्र्सवर्थ, शेली, कीट्स आदि से प्रेरणा ग्रहण की थी। किन्तु प्रकृति–वर्णन में उनकी अपनी मौलिकता ही सहज ग्राह्य और प्रशंसनीय है। ''कामायनी'' में– ''हिमगिरि के उतुड़ शिखर पर बैठ शिला की शीतल छौह'' से प्रारम्भ कर सम्पूर्ण महाकाव्य में प्रसाद जी ने प्रकृति को जितना सजाया, सँवारा और प्राणवंत सत्ता के रूप में निहारा है वह उनकी प्रकृति के प्रति आत्मीयता का अपूर्व प्रमाण है। ''लहर'' में ''उठ–उठ री लघु–लघु लोल लहर'' अथवा ''बीती विभावरी जाग री!'' आदि रचनाओं में कवि ने तो प्रकृति चित्रण में आश्चर्यजनक सफलता पायी है। उनकी ऐसी ही कुछ रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अमर निधियाँ हैं।

महाकवि सुमित्रानन्दन पंत तो प्रकृति और सौंदर्य के कवि ही

रीतिकालीन हिन्दी कवियों ने भी, जिनमें रसखान, बिहारी, पद्माकर आदि के नाम उल्लेखनीय है, प्रकृति का बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित किया है। पद्माकर ने तो कहीं–कहीं प्रकृति वर्णन में इतनी उत्कृष्टता दिखायी है कि सहज ही उनका आकलन करना कठिन जान पड़ता है।

माने जाते हैं। उनके अपने ही शब्दों में उनकी समस्त काव्य–प्रेरणा की पृष्ठभूमि में प्रकृति का ही प्रधान हाथ रहा है। द्रष्टव्य है निम्न पंक्तियाँ–''पर्वत प्रदेश की दिगंत व्यापी प्राकृतिक शोभा ही ने मुझे छुटपन से ही अपने रूपहले एकांत में एकाग्र तन्मयता के रश्मिदोल में झुलाया–रिझाया तथा कोमल कंठ वन–पाँखियों के साथ बोलना कुहुकना सिखलाया।''

खड़ी बोली हिन्दी की मीरा महादेवी जी ने भी प्रकृति को काव्य का आश्रय बनाया है। ''धीरे–धीरे उतर क्षितिज से, आबसंत रजनी'' अथवा ''मैं नीरभरी दुःखभरी बदली'' आदि पंक्तियों में प्रकृति के भिन्न–भिन्न रूप कहीं आलम्बन, कहीं उद्दीपन और कहीं संवेदना से युक्त दर्शाये गए हैं। महाकवि निराला ने–

'दिवसावसान का समय, मेघमय आसमान से उतर रही है वह सन्ध्या सुन्दरी, परी सी धीरे–धीरे धीरे।''

आदि रचनाओं में मानवी और मानवीय भावनाओं का जो सहज निखार प्रस्तुत किया है वह उनकी सूक्ष्म कल्पनाशीलता और अदम्य भावोद्रेक का संकेत करता है। निराला जी की इन पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए यदि हम श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध'' की निम्न पंक्तियों–

'दिवस का अवसान समीप था, गगन था कुछ लोहित होचला तरूशिखा पर थी अवराजती, कमलिनी कुल बल्लभ की प्रभा।''

को निहारते हैं तो ऐसा लगता है कि युग प्रवाह के साथ वाड़मय की धारा में भी प्रकृति के रूपों और उसकी अभिव्यंजना शैली में बहुत बड़ा अंतराय उपस्थित हो गया है। पूर्व के कवियों में जहाँ प्रकृति का वर्णनात्मक और वस्तुनिष्ठ तथा बाह्य रूपात्मक स्वरूप ही अभीष्ट था वहाँ छायावादी कवियों में प्रकृति के प्रति अंतरंगता, सूक्ष्मता, आत्मीयता और मानीवयता का अधिकाधिक समावेश हुआ है। यदि हम छायावाद की अधिकांश रचनाओं को प्रकृति का श्वासोच्छवास कहें तो अत्युक्ति न होगी।

परवर्ती कवियों ने भी अपनी नवीनतम विधाओं में स्फुट रूप से ही सही प्रकृति के दृश्यो और भावों को छूने का प्रयास किया है। किन्तु ऐसा लगता है कि इन कवियों की रचनाओं में प्रकृति मस्तिष्क के कोर को छूकर ही संतुष्ट हो जाती है, हृदय की गहराई और भावना के अतल–तल में प्रवेश नहीं कर पाती है।

जो भी हो, यह कहना अनुचित न होगा कि प्रत्येक युग और प्रत्येक रचनाशैली में प्रकृति आलम्बन उद्दीपन, संवेदन अथवा सम्प्रेषण आदि का कार्य करती रही है और कती रहेगी। प्रकृति से विच्युत काव्य अथवा साहित्य की परिकल्पना ही कठिन है। प्रकृति और मानव तथा प्रकृति और साहित्य का सम्बंध अत्यंत प्राचीन, अत्यंत आत्मीय और अपरिहार्य है। वस्तुतः सफल काव्य रचनाएँ प्रकृति के मनोरम उद्यान में ही फलवती हुई है। हमारा हिन्दी साहित्य भी इस सामान्य चेतना से वियुक्त नहीं है।

संक्षेप में, प्रकृति जिन–जिन रूपों में काव्य में अवतरित हुई है वे इस प्रकार हैं– आलम्बन, उद्दीपन, आश्रय, उपमा, रूपक, सौजन्यता, सौहार्द्र, संवेदनशीलता, मानवी, चेतना भाव रूप, कल्पना रूप आदि। कहना नहीं होगा कि किस रूप में और किस भाव में प्रकृति काव्य अथवा साहित्य में समाहित नहीं है। ❑

प्रेरक कथा

संगत का असर

एक अजनबी मुसाफिर किसी गाँव में पहुँचा। गाँव में दाखिल होते ही उसे कुछ लोग मिल गए। एक बुजुर्ग को संबोधित करते हुए उसने पूछा, ''इस गाँव के लोग कैसे हैं? क्या वे अच्दे और मददगार हैं?'' बुजुर्ग ने अजनबी के सवाल का सीधे जवाब नहीं दिया, उल्टे एक सवाल कर दिया, ''मेरे भाई! तुम जहाँ से आए हो, वहाँ के लोग कैसे हैं? क्या वे अच्छे और मददगार हैं?'' वह अजनबी अत्यंत रूष्ट और दुःखी होकर बोला, ''मैं क्या बताऊँ? मुझे तो बताते हुए भी दुःख होता है कि मेरे गाँव के लोग अत्यंत दुष्ट हैं। इसीलिए मैं वह गाँव छोड़कर आया हूँ। लेकिन आप यह सब पूछकर मेरा मन क्यों दुखा रहे हैं?'' बुजुर्ग बोला, ''मैं भी बहुत दुःखी हूँ। इस गाँव के लोग भी वैसे ही हैं। तुम उन्हें उनसे भी बुरा पाओगे।'' तभी एक और राहगीर आ गया। उसने भी बुजुर्ग से वही सवाल किया, ''इस गाँव के लोग कैसे हैं?'' बुजुर्ग ने भी पूर्ववत् उलटा सवाल दाग दिया, ''पहले तुम बताओ कि जहाँ से तुम आए हो, वहाँ के लोग कैसे हैं? राहगीर यह सुनकर मुसकरा दिया। उसके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। उसने कहा कि मेरे गाँव के लोग इतने अच्छे हैं कि उनकी स्मृति–मात्र से सुख की अनुभूति होती है। वह गाँव छोड़ते हुए मुझे दुःख हैं, लेकिन रोजगार की तलाश यहाँ तक मुझे ले आई है। इसलिए पूछ रहा हूँ कि यह गाँव कैसा है? बुजुर्ग बोल कि दोस्त! यह गाँव भी वैसा ही है। यहाँ के लोग भी उतने ही अच्छे हैं। वास्तव में इनसानों में भेद नहीं होता। जिनके संपर्क में हम आते हैं, वे हमारी ही तरह हो जाते हैं– अच्छे के लिए अच्छे और बुरे के लिए बुरे। ❍

सुनो हे शेषनाग

(विगत 25 अप्रैल को आए भयानक भूकम्प पर)

सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...
बहुत हुआ
अब हिलो डूलो मत
चंचल मन को शांत करो
वसुधा को स्थिर रहने दो
रहने दो
जीवन को गतिशील धरा पर
सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...

समय था गतिमान 'भू' पर
सब चल रहा यंत्र चालित
नियति निर्धारित गंतव्य पथ पर..
उगते ज्यों सूर्य चंद्र
होता दिन–रात साँझ सबेरा
निसिदिन।
बहती है हवा,
नदियाँ मिलती समुद्र में
उठते ज्यों तरंग सागर में।
किन्तु हिल उठे तुम
हिल उठी वसुधा
सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...

अचानक ही
प्रकृति ने किया
चित्कार सा गर्जन
भयानक भूकम्प का नर्तन
सब उथल–पुथल
मची भगदर,
नगाधिराज हुए चकित, प्रकंपित
अनिष्ट की आशंका से
भयाक्रांत हुए सब
विह्वल, विकल, व्याकुल,,
आशंकाओ से भर उठा मन
प्रलय ने पसार लिया
नरभक्षी पक्षी सा विशाल पंख
काढ़ लिया हो जैसे तुमने ही
हे शेष!
अपने सहस्त्र विकराल फन

अब धैर्य धरो...
सुनो हे शेषनाग
चंचल मन को शांत करो
अब धैर्य धरो...

हाहाकार मचा विश्वंभरा के वक्ष पर
धरा शायी हुई ईमारतें, अट्टालिकाएँ

वृक्ष, घर, पर्वत, सड़क,
मंदिर मकान, स्मारक, घरोहर
प्रकंपित हुए सब
तिलमिला कर
एक–एक कर ढहने लगे
ज्यों तास के पत्तों का घर
वृक्ष की सूखी पत्तियाँ ज्यों
झहरने लगी हों पवन के वेग से
तार–तार हुई धरणी
छिन्न–भिन्न सुसज्जित राजमार्ग
उठा भयंकर गुबार
आकाश आछन्न हुआ
धूल की धूसरिता से
दिन ही में दिखा रात का मंज़र
चहुओर कोलाहल, करुण क्रंदन।
जिस धरित्री पर भरोसा कर
कल्पनाओं ने, संकल्पों ने
सृजन को रूप दिया
श्रमिक–स्वेद ने बनाया आशियान
सृष्टि ने बिखेरे रंग
वही अवणी हिल उठी,
खिसक गयी
पाँव के नीचे की जमीन
एक निमिष में सब हुआ नश्वर...
अब सुनो हे धराधर!
जीवन की चित्कार,
करुण क्रंदन।

हे शेषनाग अब
ब्रह्मा का वरदान सहेजो
धारण किया है भू को
मन को चंचला मत होने दो
अब धैर्य धरो
सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...

देखो अपनी ऑखें फार
महाविनाश की परिणति
भवन, अट्टालिकाएँ, गेह,
कुटिया ही नहीं हुई धराशायी
लील गए तुम
कई परंपराओं को,
इतिहास को,
संस्कृति की प्रतीकों को
चढ़गए तुम्हारे अधैर्य की बलि

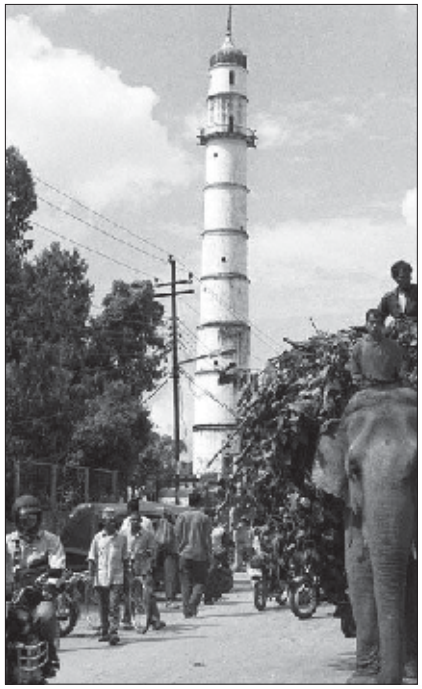

घर आँगन परिवार
अनाथ सुकुमार सा बचपन
सूना अनगिन ऑचल
कर अंग–भंग
मनुज को, उसकी आस्था को।

सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...

सहन नहीं होता तुमसे
भार मही का, आवादी का
बोझ अधर्म का,
असंतुलित जलवायु का
आसमान छूती इमारतों की
कंकड़ी के जंगलों की
प्रकृति के विनाश की
प्रदूषित सांस की
नहीं सह पाए तुम बोझ...।

फिर भी
सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...

जानता हूँ
नव सृजन का बीज
निहित है हर विनास मे,
जानता हूँ
सृष्टि के इस चक्र को भी
सीख लिया है खेल–खेल में
माँ की ही गोद से ही
सृजन संहार की
तुम्हारी यह कहानी
अभी–अभी गुंजित हुआ है कान मे
'नव घर उठे पूरण घर खसे'
किन्तु फिर भी हे शेष नाग
चंचल मन को शांत करो
वसुधा को स्थिर रहने दो
पढ़ा नहीं तुमने
कवि दुष्यंत को,
जिन्दगी गुजड़ जाती है
एक आशियाँ बनाने में
तुम्हें वक्त नहीं लगता
बस्तियाँ जलाने(उजाडने में) में... ।

सुनो हे शेषनाग
अब धैर्य धरो...

कलानाथ मिश्र

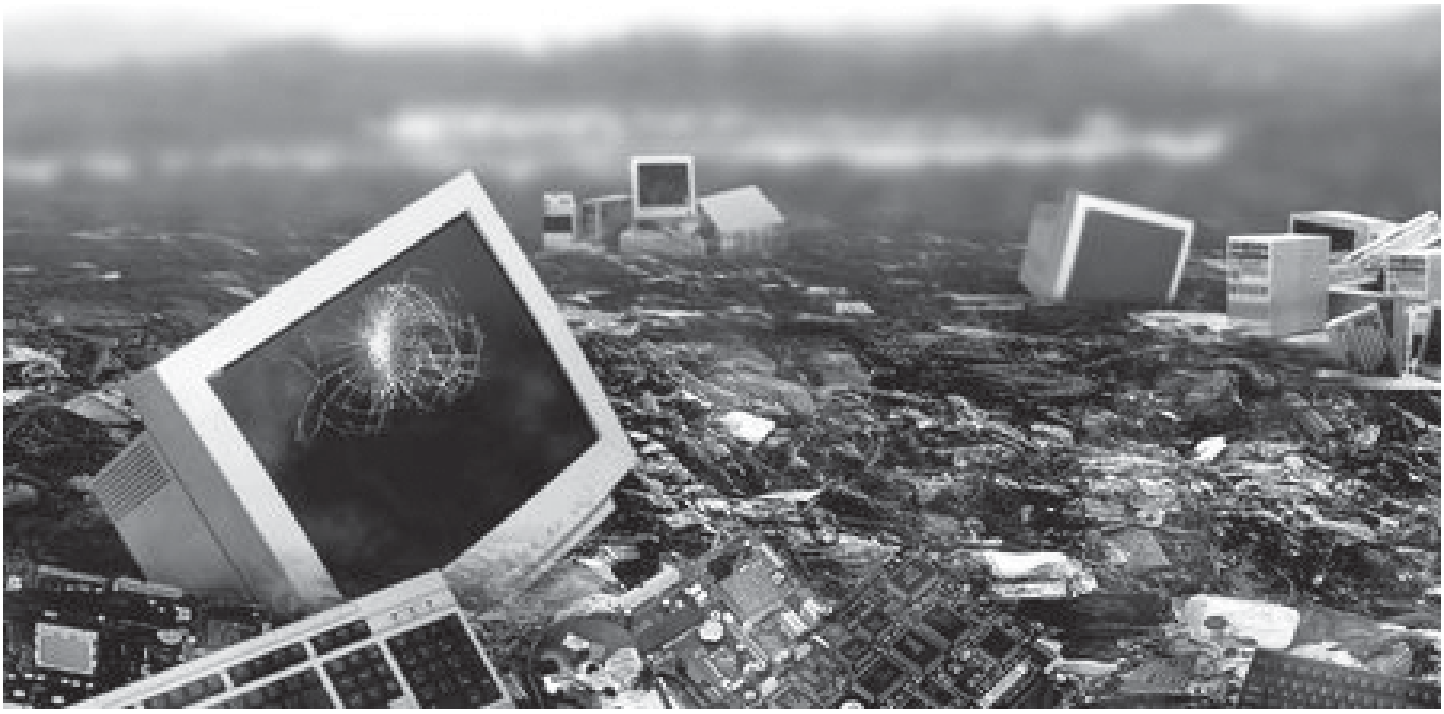

E- Waste and its Management in India

A number of countries and organizations have defined E-waste/WEEE. Acc. to UNEP it may be defined as discarded computers, office electronic equipment, entertainment device electronics, mobile phones, television sets and refrigerators [1].

Sushil Kr. Singh

When B/W TV set entered our home it was very certain that it would be replaced by colour TV set very soon. Yes, that occurred very fast but it was the beginning and now we entertain ourselves with 3D Full HD Smart TV. Similar is the case with our cell phone, PC, printer and other electric and electronic gadgets. We change them at regular intervals without thinking about fate of the discarded products even once! Really communication and entertainment have undergone revolution with advent of newer models of electronic and electric gadgets. But, the discarded ancestors of the present day models have not disappeared rather they exist in our surrounding as e-waste or Waste Electrical and Electronic Equipment (WEEE) and they pose a major threat to environment.

Globally, WEEE/ E-waste are most commonly used terms for electronic waste. There is no universal definition of WEEE/E-waste. A number of countries and organizations have defined E-waste/WEEE. Acc. to UNEP it may be defined as discarded computers, office electronic equipment, entertainment device electronics, mobile phones, television sets and refrigerators [1]. The StEP (Solving the E- Waste Problem) has given one global definition of E- waste in its White Paper. Firstly, electrical and electronic equipment (EEE) has been defined. The StEP definition of EEE is: "Any household or business item with circuitry or electrical components with power or battery supply. The definition of the term "e-waste" is simply all types of EEE which has been discarded [2]. It is defined by USEPA, as Electronic products that are "near" or at the "end of their useful life" are referred to as "e-waste" or "e-scrap." The most widely accepted definition and description of WEEE is as per the European Union directive. The directive on WEEE covers all electrical and electronic equipment used by consumer. The definition of WEEE includes all components, subassemblies and consumables which are part of the product at the time of discarding[3]. According to Basel action network the e-waste is defined as "E-waste includes a wide and developing range of electronic appliances ranging from large household appliances, such as refrigerators, air-conditioners, cell phones, stereo

systems and consumable electronic items to computers discarded by their users".

2. QUANTUM OF E- WASTE

As per estimation of the Environmental Protection Agency (EPA) an estimated 50 million tons of e-waste are produced each year [4]. According to one report by UNEP the amount of e-waste being produced including mobile phones and computer could rise by as much as 500% over the next decade in some countries like India [4]. All over the world, the quantity of electrical and electronic waste generated each year, especially computers and televisions, has assumed alarming proportions. In 2006, the International Association of Electronics Recyclers (IAER) projected that 3 billion electronic and electrical appliances would become WEEE or e-waste by 2010. That would tantamount to an average e-waste generation rate of 400 million units a year till 2010. Globally, about 20-50 MT of e-waste is disposed off each year, which accounts for 5% of all municipal solid waste.

> ***"E-waste contains more than 1000 different substances, which fall under "hazardous" and "non-hazardous" categories. Broadly, it consists of ferrous and non-ferrous metals, plastics, glass, wood & plywood, printed circuit boards, concrete and ceramics, rubber and other items."***

No definite official data exist on volume of e-waste generated in India or how much is disposed off. However, there are estimations based on independent studies conducted by the NGOs or government agencies. According to the Comptroller and Auditor- General's (CAG) report, over 4 lakh tonnes of electronic waste are generated in the country annually. Central Pollution Control Board (CPCB) estimated India's e-waste at 1.47 lakh tonnes or 0.573 MT per day. There are 10 states that contribute to 70 per cent of the total e-waste generated in the country, while 65 cities generate more than 60 per cent of the total e-waste in India. Among the 10 largest e-waste generating states, Maharashtra ranks first. Among the top ten cities generating e-waste, Mumbai ranks first followed by Delhi, Bengaluru and Chennai.

3. REASONS FOR INCREASE IN AMOUNT OF E- WASTE

Major reasons for increase in volume of e- waste as follows:

- Rapid change in technology,
- Falling prices,
- Changes in media,
- Planned obsolescence
- Increasing "market penetration" in developing countries and
- "Replacement market" in developed countries.

4. COMPOSITION OF E-WASTE

Composition of e-waste varies according to nature of discarded product. It contains more than 1000 different substances, which fall under "hazardous" and "non-hazardous" categories. Broadly, it consists of ferrous and non-ferrous metals, plastics, glass, wood & plywood, printed circuit boards, concrete and ceramics, rubber and other items. Iron and steel constitute about 50% of the e-waste followed by plastics (21%), non ferrous metals (13%) and other constituents. Non-ferrous metals consist of metals like copper, aluminium and precious metals like silver, gold, platinum, palladium etc.

5. **EFFECTS OF E- WASTE[5]**:

Effects of some of e-wastes is as follows:

1.	Short Chain Chloro Paraffins, Alkanes	Toxic to aquatic organisms and It may cause long term effects in the aquatic environment.
2.	Beryllium metal, Beryllium oxide	Very toxic by inhalation. It may cause cancer by inhalation.
3.	Cadmium, Cadmium oxide,	Very toxic by inhalation. It may cause cancer. Harmful to aquatic organisms
4	Cadmium sulphide	may cause long term effects in the aquatic environment.
5.	Chromium VI	Toxic,causes genetic damage.
6	Copper beryllium alloys	Toxic by inhalation
7.	Decabromodi-phenylether (DBDE)	Potential for forming brominated dibenzodioxins or furans (PBDD/F) in uncontrolled thermal processes
8.	Lead	Effect on central and peripheral nervous system, Blood system,

	kidney and reproductive system
9. Lead oxide	May cause harm to the unborn child, Harmful by inhalation/ harmful if swallowed
10. Mercury	Cause long term effects in the aquatic environment. Effects on the central nervous system effects (CNS) as well as the kidney.
11. Mineral Wool:	Irrigating to the skin
12 Octabromo diphenyl ether (OBDE)	Possible risk of harm to the unborn child
13 Polychloro-biphenyls	Very toxic to aquatic organisms
14. Polyvinyl chloride (PVC)	Potential for forming dioxins and furans in case of uncontrolled burning. Liberation of HCL gas during combustion.
15. Refractory Ceramic Fibers	May cause cancer, Irritating to the skin
16. Tetrabromobis-phenol-A (TBBPA)	Potential to form brominated dioxins/furans in thermal processes, hormone disrupter.

The impacts are going to be worse in developing countries like India where people engaged in recycling e-waste are mostly in the unorganized sector, who live in close proximity to dump or landfills of untreated E-Waste and work without any protection or safe guards.

6. DISMANTLERS/RECYCLERS OF E-WASTE IN INDIA

6.1. Formal Sector

In this sector collection and disposal of e-waste is done by government authorized agency or company in environment friendly way. These organizations use proper technology and equipment for dismantling/recycling of the waste and also provide proper safety measures to the workers. CPCB has registered 138 dismantlers/recyclers of e-waste as on Nov 2014[6].

6.2. ***Informal Sector***

In this sector collection and disposal of e-waste is done by unauthorized people. They collect the e-waste from different places and then separate the useful and useless part by breaking the e-waste in improper way. They retain the useful part. This is very harmful to the environment because they dump the remaining waste or burn it. This sector operates in urban slums where dismantling/recycling operations are carried out by the unskilled workers using the most rudimentary methods and without any protection. This sector employs child labour also. According to the ASSOCHAM about 4.5 lakhs child labours between the age group of 10-14 are observed to be engaged in various e-waste activities, without adequate protection and safeguards in various yards and recycling workshops[7].

7. E-WASTE LEGISLATION IN INDIA

Some of the rules and regulation which are related to e-waste are as follows [8]:

7.1. **The Hazardous Waste (management and handling) Rules, 2003:** This rule categorized e-waste or its

"The impacts are going to be worse in developing countries like India where people engaged in recycling e-waste are mostly in the unorganized sector, who live in close proximity to dump or landfills of untreated E-Waste and work without any protection or safe guards."

constituents under 'hazardous and 'non hazardous waste.

7.2. **The Hazardous waste (Management. Handling and Transboundary Movement) Rules, 2008:** These rules provide the registration process of hazardous waste recycler. Under these rule the ministry of Environment and Forest is the nodal ministry to deal with the transboundary movement of the hazardous wastes.

7.3. Guideline for Environmentally sound management of e-waste, 2008: The guidelines provide guidance for identification of various sources of e-waste and the approach and methodology for handling and disposal of e-waste in an environment friendly manner.

7.4. **The e-waste (Management and Handling) Rules, 2011:** The primary objective of these rules is to channelize the e-waste generated in the country to make the recycling of the e-waste in environmentally sound manner. The concept of extended producer responsibility(EPR) is introduced in these rules.

8. E- WASTE MANAGEMENT OR RESOURCE MANAGEMENT?

According to a 2009 report on e-waste by the UNEP one tonne of mobile phones has as much as 340 grams of gold, 3.5 kilograms of silver, 140 grams of palladium and 130 kilograms of copper. India produces 65,000 tonnes of e-waste from mobile phones in a year. But approximately 70 per cent of recoverable precious metals present in e waste is lost due to insufficient number of recycling units in India [9]. Computers, mobile phones and other electronic products use 320 tonnes of gold and more than 7,500 tonnes of silver annually worldwide. According to a report by Global e-Sustainability Initiative (GeGI) e- waste are 40 to 50 times richer than their ores. One tonne of scrap from discarded computers contains more gold than can be produced from 17 tonnes of gold ore. A mobile phone contains five to 10 times more gold than gold ore. Not only that 17 precious and semi-precious metals can be extracted from e-waste. But exporters get value for only four elementsgold, silver, copper and palladium. India generates 350,000 tonnes of e-waste every year. Another 50,000 tonnes are imported for dismantling. Very simple arithmetic is required to calculate the loss or gain of precious metals. Dismantlers/recyclers are able to extract only a small amount. They export parts such as printed circuit boards, which are rich in precious metals, to countries having environmentally sound technology. The world renowned companies involved in recycling e-waste are mainly mining companies which also extract precious metals for e-waste recyclers. According to Global e-Sustainability Initiative (GeSI) and Solving the E-waste Problem (StEP) India loses 50 per cent of the gold during crude dismantling. According to Chaturvedi, 95 per cent of the country's e-waste is recycled by scrap dealers, but they extract not more than 15 per cent of the precious metals.

9. CONCLUSION

In present age generation of e- waste is inevitable. Dismantling/ recycling of e- waste cannot be allowed in a manner taking place presently, because it is disastrous for environment and at the same time it is staggering loss of precious metals. Growing opinion is that the e-waste should be seen as opportunity rather than burden. The phrase waste management should be replaced with resource management. And the management of e- waste must include the people in the informal sector because most people engaged in recycling and dismantling belong to this sector. The ideal way of its management would be to first make local pre-processing efficient, followed by maximum recovery of materials and proper treatment of residual waste with the environmentally compatible technologies and proceeds shared fairly and equitably.

References:

1. UNEP, Policy Brief on E- Waste, http://www.unep.org/ietc. (accessed May 15, 2015)
2. One Global Definition of E- Waste, www.StEP-initiative.org/files/StEP/-document/- One Global Definition of E-Waste(accessed May 15, 2015),
3. Directive 2002/96/EC of European Parliament and the Council of 27 January 2003 on Waste Electrical and Electronic Equipment (WEEE), 2003, Official Journal of the European Union.
4. Electronic Wastes, http://en.wikipedia.org/wiki/ Electronic_ waste (accessed March16, 2014)
5. Guidelines of "Implementation of E-waste Rules 2011", Central Pollution Control Board, Delhi, www.cpcb.nic.in. (accessed May 15, 2015)
6. www.cpcb.inc.in/e-waste registration list.(accessed May 15, 2015)
7. Shakuntala Ghosal, The Economic Times, April, 2014
8. Report on "E-waste in India", Research Unit (LARRDIS), Rajya Sabha Scretariate, New Delhi, June 2011, rejyasabha.nic.in/.(accessed May 15, 2015),
9. Wasted-e-waste, Soma Basu, www.downtoearth.org.in/context/wasted-e-waste, May 13, 2013

❑

❍ Associate Professor, Department of Botany, A.N.college, Patna

Bollywood, Bytes, Barbie and 'Bharat'

The Emerging Pan-Indian Identity

Dr. Anuradha Sen

Hum logo ko samaj sako to samjho dilbar jaani….Ye dil hai Hindustani.

Bollywood, Bytes, Barbie and 'Bharat'"- A strange, mismatched juxtaposition? Despite the use of the common alliterative 'B,' it appears like equating the ridiculous and the sublime? But if you read Bollywood as popular culture, Bytes as technology and Barbie as Western capitalism then you will understand the drift of this paper which seeks to map the emergence of the contemporary 'Bhartiya' in context of the technologically and market driven mass culture that has shaped his identity.

National cultural identities of a people cannot be contained within the straightjacket of labels and categories. Though shaped by national history and local traditions, identities personal, ethnic, national or global, today, are never stable or static but always emergent, evolving and variable, mutating with the changing world, society, power structures, the market forces and the fast pace of developing technologies. People of all nationalities today inhabit two worlds if not more the national as well as the global. The modern individual is a cosmopolitan living in a global village- a cultural hybrid-- the Pan-Indian identity is one such phenomenon. Adopting a Cultural Studies[1] approach, the present study will theorize this emergence. It will focus on how and why contemporary Indian culture has undergone a sea change due to the unprecedented and pervasive influence of market and technology driven information and entertainment networks.

The overused cliché "Unity in diversity" was a rhetorical aspiration rather than a social reality. While the civilizational unity of India cannot be disputed, the diversities of languages and ethnicities created impenetrable barriers against the evolution of unified national cultural character that would erode the regional subjectivities. A people who have evolved in the same crucible for thousands of years are bound to develop certain unifying traits, a tapestry of common beliefs, cultural similarities, shared outlooks, and an overlapping of identities. Yet, for instance, a North Indian and a South Indian would worship the same Gods, and celebrate the same festivals, but would know very little about each other. Their identities were specific to their caste, kith, kin and region. Scientists say that Indians have a vast number of genes in common. Indians speak hundreds of dialects, and have as many as seventeen recognised languages; but their entire vocabulary has its source in four major language families. But all this did not add up to a identifiable Pan-Indian personality and outlook and regional and subnational parochialisms were rife. This significant gap was filled by technology in the shape of the huge communication and entertainment networks which connected this vast land and gave it a shared new hybrid culture accessible to all.

The Postmodernist[2] view of social changes taking place since the second half of the twentieth century, is seen as one which is not determined by traditional economic or political frameworks, but by information producing rather than object producing formations which demand analysis primarily in cultural terms. There is an emphasis on such matters as the extraordinary compression of time and

space through the new media.

The staggering uses and effects of this revolutionary system- the Internet, including the World Wide Web, with its democratized access and pervasive presence has empowered Indians as has the convergence and coexistence of several media technologies (TV, radio, CD, mobile phones, PCs, laptops) in their homes, work spaces, in-between and beyond. The result of this convergence is the new ways Indians are relating to media content - there is a desire for a more participatory media culture, as against passive spectatorship. In the process, a more interactive, involved concept of viewership has emerged. Sites such as 'Twitter', not only enable tweets of news within seconds of occurrence but also instant tweet rejoinders, responses and reactions both from the newsmakers like celebrities, politicians, sportsmen etc. as well as the average users. This is powerfully enabling as it gives the average Indian a national as well as a global voice and forum for expression. It offers the unique opportunity for communication with people cutting across the vast distances of geography, social classes and hierarchies. TV watching seems to have become a national pastime cutting across generation, class, region north or south, urban or rural. This common field of influence has further crystallized a Pan-Indian outlook, identifiable in similarity in tastes, aspirations and preferences in the new India today.

TV soaps such as 'Bade Achhe Lagte Hain' , Reality shows such as 'Indian Idol' or 'Jhalak dikhla ja' spawn fan communities and opinion polls, votes and preferences are digitally transmitted thus asserting the viewer's right to form interpretations, to offer evaluations and to construct their own cultural canons. This alternative vision of a technologically advanced participatory culture is again a very postmodern in its scepticism towards legitimizing 'canons' and its resistance to grand narratives. Hence, typically in a popular show such as 'Indian Idol', even after a panel of specialists judge the singers, it is the viewer's votes that decide the winners. Further, in TV shows such as 'Kaun Banega Crorepati', when ordinary Indians, appear on national network and shoot to instant fame and fortune and partake of the coveted celebrity pie, viewers feel empowered. This self-assertive new- found confidence typifies the young contemporary Indian.

However, this new confidence was hard won, and if viewed from the lense of Post- colonial[3] theory, it is the end result of the slow and arduous process of 'decolonisation'[4] which involved a thorough-going process of change, entailing economic, cultural and psychological transformations in the wake of gaining political independence. Can a people deny the legacy of history? In 1947, though liberated from the stranglehold of British imperial domination, Indians were crippled with the inferiority complex symptomatic in a subject race that had been politically subjugated and culturally denigrated for four hundred years.

In the year 1981 the Booker award winning novel, *Midnights Children* woke the Western literary world to Postcolonial literatures; it took Indian fiction in English to new directions, and its popularity has been seen as a major factor in the renaissance of Anglophone Indian fiction that has occurred during the last two decades. And off course, art too is not always autonomous in this age of industrial and consumer capitalism, literary fashions are governed by market trends. Thus assured, new generation writers like Amitabh Ghosh, Vikram Seth, Arundhati Roy, Upamanyu Chatterjee, and a host of other Indian writers in English now write with confidence and ease in their own unique uninhibited Pan-Indian brand of Indian English free of the 'colonial hangover' that had burdened their predecessors. To quote Rushdie, “The Empire writes back to the Imperial Centre”.

Post-colonial commentators have stressed the extent

“Though shaped by national history and local traditions, identities personal, ethnic, national or global, today, are never stable or static but always emergent, evolving and variable, mutating with the changing world, society, power structures, the market forces and the fast pace of developing technologies.”

to which vernacular languages have been altered by alternate discourses especially that of English, in an age of rapid language change and mass media influence on everyday speech and habits. Vernacular writings are also coming to the fore through English translations and the regional language barrier is being slowly dissolved as India moves towards a wider, more inclusive Pan-Indian awareness. This is factored as much on the availability of advanced printing technologies, as on the national and international publishing conglomerates who perceive 'the Indian story' as a viable trend, being lucrative and in demand both in India and the international market.

Popular culture and sub-cultural practices have a positive role in the construction of identities and social meanings. Viewed by film theorists through the academic microscope, Indian films are treated as a social institution which is a reflection of current social and political formations. In India filmic images and spectators interanimate each other. Certain practices, fashions, ideas that exist in the lifestyles and choices of Indians today are a reflection of popular films hence the Bollywood inspired wedding and bridal fashions, hairstyles, attitudes and interior décor to name just a few. The shifting gender relations, the emergence of the new women as much as the commodification of women (the essential 'item number') as shown on screen are reflected in social attitudes as well.

"Bollywood is a player, participator and inspirer in our lives"(Film theorist Siddharth Bhatia). If viewed from the rarefied space of highbrow aesthetics, the average Bollywood mainstream cinema is flawed, fantastical and escapist, unoriginal, often plagiarised versions of Hollywood blockbusters, the characters are stock and the situations and themes typical and the outcome predictable or melodramatic."

"Bollywood is a player, participator and inspirer in our lives"(Film theorist Siddharth Bhatia). If viewed from the rarefied space of highbrow aesthetics, the average Bollywood mainstream cinema is flawed, fantastical and escapist, unoriginal, often plagiarised versions of Hollywood blockbusters, the characters are stock and the situations and themes typical and the outcome predictable or melodramatic[6]. Yet this is a product Indians are passionate about and want to buy. Gabbar's dialogues from the blockbuster Sholay(1978) will bring a knowing smile on every Indians face. Dilip Kumar, Amitabh Bachan, Shah Rukh, or Ranbir Kapoor are national icons. The escapist fantasies retailed in films, transport one to the space the average Indian chooses when he needs relief from the daily grind. Their happy endings, songs and dances bring glamour, romance and entertainment into ordinary lives.

The Indian film industry is the biggest in the world. It makes three films a day, and spends half a billion dollars in doing so, earns more than a billion and is growing at the rate of 15% a year. It is useful here to remember that all films are not Hindi and that films have a bigger presence in the South. For their sheer reach, Indian films are the most popular secular feature of modern India. Social commentator Pavan K. Varma, in his book *Being Indian*, speaking about Indian films opines -"Their mass appeal and ubiquity have given Indians a common vocabulary and a means of recognising each other in a known and much loved framework not available to them on such a scale before. Bollywood has been the single biggest integrating factor in the evolution of the pan-Indian persona."

An important component of this genre is song and dance. Essentially a non-realistic genre, Indian mainstream cinema, does not follow a linear narrative strategy like Hollywood films. There are digressions and interruptions, but these don't infuriate but enhance the pleasure of the viewer. Songs, apart from some element of thematic relevance also exhibit a melodramatic amplification of emotions which Indians love. Songs service a host of aspirations- in the foreground; the visuals showcase tourism, adventure sports, fashion etc. Popular film songs are hummed across the land, even by those who may not understand the words. It is broadcast on Vividh Bharati, played at weddings, sung at schools, musical dance and song reality shows on TV, even bhajans and kirtans use the popular tunes as do political campaign songs. Until the arrival of film music, the musical staple for ordinary Indians

was folk music, which was united by similar themes but divided by languages and dialects. Classical Indian culture, though highly evolved and refined, was the preserve of the elite not accessible or comprehensible to all. Popular film music was the first step in creating a non-elitist genre of music with a nationwide audience.

Alisha Chinnai's *Made in India* in 1994 became the first non-film album to break unit sales records. Bally Sagoo started the craze of remixes in 1994. 1995 was the year Daler Mehendi and had everyone from Kanyakumari to Kashmir beating to the Bhangra beat--Bolo Tara rara. Honey Singh now holds sway with his Hip-hop and rap music. Vividh Bharati continues to broadcast for fifteen hours from two hundred stations, reaching 95% of the population. The convergence of new and old technologies have made this new culture accessible and attractive nationwide, it has also facilitated the urban rural gap to get narrower. The penetration of the small screen has been nothing short of spectacular. Radio and television have brought Indians together as never before.

"Artists like Shubha Mudgal have confidently fused classical and folk genres and have a huge fan following. Our national apparels, sari dhoti, pajama kurta are being reinvented by the young into fusion clothes and brands such as designer Anita Dogre's "Global desi", are redefining the Indian fashion world."

The Government's attempts at national integration were abortive as no concerted effort was made to get past regional and subcultural parochialisms. The project of a national language was vociferously opposed by the non-Hindi speaking states. Today an assertive popular culture has seen the natural growth of the popularity of Hindi. According to the NRS (National Readership survey) the largest selling dailies are Dainik Bhaskar and Dainik Jagran. Hindi dominates cable TV too. This change has come about not because linguistic loyalties have suddenly been diluted but as a natural consequence of market forces. A new lingo dubbed "Hinglish" has sprouted spontaneously in cities. The young speak it, ever after Pepsi's *Ye Dil Maange More*, advertising industry loves it, Popular in films and even TV news channels like Zee have moved away from the formal address of yore to Hinglish

The visible manifestations of change are of course the multiplexes, malls and supermarkets, the hoardings advertising global brands or IPL matches that have become a part of the cityscapes of even smaller towns. It is impossible to ignore the nationwide appeal of masala dosa and tandoori chicken, the rhythms of film music, fusion, hiphop and rap, the evolution of Hinglish, the ubiquity of salwaar kameez, the popularity of Hindi films, the audience for satellite TV networks, the mania for cricket, to name just a few.

The global multinational corporations which sell the technology or its products have also furthered the homogenizing effect, sometimes to the detriment of indigenous products and culture. As English or 'Hinglish' become the linguistic choice, the rich vernacular languages and culture run the risk of languishing in the peripheries. Surveys show that 50% of Indians today are below 25 and more than 65% below the age of 35. Servicing their demand, the 150 odd TV channels as well as radio play only film or pop music while our rich classical music is slowly dying for want of appreciation. However, paradoxically the new music has coincided with a revival of classical music. Classical musicians have learnt to modify their performances to suit the less purist tastes of their new generation listeners. Artists like Shubha Mudgal have confidently fused classical and folk genres and have a huge fan following. Our national apparels, sari dhoti, pajama kurta are being reinvented by the young into fusion clothes and brands such as designer Anita Dogre's "Global desi", are redefining the Indian fashion world. From entertainment to lifestyle consumer goods, India is in the hegemonic grip of American neo-imperialism and the new generation of young brand conscious Indian youth hanker for them. The Pan-Indian identity is a hybrid cultural formation. It is to be seen how Indians engage with and achieve agency and identity in an era when the mega discourse of globalisation is playing out.

The new supranational culture is still in the process of evolution; as it marches to the future it blends the new with the old and rearticulates and reinvents received notions of

its culture and tradition. It is, finally, democratic in its inclusiveness of all classes - upper, middle and lower, the marginalised as well as the privileged, the regional and the metropolitan, the urban and the rural. It is Postmodern in its eclecticism, especially in its celebration and partaking of 'high' as well as popular or mass culture and its impatience with canons and authoritarian control. Though shaped by technology driven media and neo-imperial influence, this identity is not totally overwhelmed by these forces yet, but retains its unique, irrepressible vitality and racial resilience and talent for adaptation, appropriation and syncretic accommodation. To explicate the essential transnationalism and hybrid nature of Indians, it would here be appropriate to move from Post-colonial theory to the idiom of a popular Bollywood song-

" Mera joota hai Japani, Aur patloon Englishtani,

Sar pe laal topi Rusi, Phir bhi dil hai Hindustani"

Raj Kapoor in *Awaara.*

Endnotes:-

1. Culture studies Centre for Contemporary Cultural Studies was set up by Richard Hoggart, Raymond Williams, and Stuart Hall at Birmingham. Its discipline base is broad and interdisciplinary. Cultural Studies appropriates and rearticulates concepts from other areas, or sub-areas that may not be immediately concerned with the study of culture.
2. Postmodernism in its broadest sense is an aesthetic, or lifestyle, it is an expression of a general skepticism towards previous distinctions and certainties, not only in artistic or media culture, but in intellectual, political and everyday life. It shows a release from hidebound assumptions and elitist hierarchies
3. Post-colonialism is the study of the ideological and cultural impact of western colonialism and in particular of its aftermath-whether as a continuing influence (neocolonialism) or in the emergence of newly articulated independent national and individual identities.
4. Decolonization is the process of moving from a dependent colonial situation to an independent condition psychologically, economically and culturally.
5. The cine audience tastes are slowly changing, especially the multiplex cinegoers. New directors are dealing with varied topics and issues like dyslexia and cerebral palsy (Marguerita with a Straw), child abuse (Highway), Homosexuality (Dostana), and the changing gender relations. The lines between 'art cinema' and commercial cinema are merging.

❑ Deptt. of English, A.N.college, Patna

प्रेरक कथा

अपनी–अपनी कसौटी

एक माली और एक सुनार में दाँतकाटी दोस्ती थी। माली अपने बगीचे में सुगंधित फूल उगाने के लिए दिन–रात कड़ा परिश्रम करता और भाँति–भाँति की सुगंध पैदा कर देता। उसे अपने उद्यान पर गर्व था। मानव स्वभाव है कि हम अपने उद्यम का उद्यान अपने सगे–संबंधियों और यार–दोस्तों को दिखाकर उनकी वाहवाही लूटने के इच्छुक रहते हैं और अपने अहं की तुष्टि करके सुख पाते हैं। अतः उस माली ने अपने दोस्त सुनार से कहा, ''क्या अपनी दुकान पर बैठे ठुकठुक करते रहते हो। एक दिन मेरे बगीचे में आओ। भाँति–भाँति की सुगंध का साक्षात्कार करोगे तो तबीयत बाग–बाग हो जाएगी।'' सुनार बोला, ''मेरे दोस्त! मैं जरूर आऊँगा।'' एक दिन वह बगीचे में पहुँच गया। उसके हाथ में सोने को कसने की कसौटी थी। वह एक–एक फूल को अपनी कसौटी पर कसकर देखता और मुँह बिचकाकर दूसरे पौधे की तरफ रूख कर देता। सुनार को बगीचे में मजा नहीं आया। माली को भी अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा, मैंने किस पागल को निमंत्रण दे दिया। इसके बाद सुनार ने माली को अपनी दुकान पर आने का निमंत्रण दिया। माली ने आना मंजूर कर लिया। वह अपने दोस्त सुनार की दुकान पर पहुँच गया। वह हर एक जेवर उठा–उठाकर सूँघता और निराश होकर रख देता। संभवतः वह सोने में भी सुंगध खोज रहा था। उसे भी उतनी ही निराशा हाथ लगी, जितनी कि सुनार को बगीचे में लगी थी।

वास्तव में हम सब सुनार और माली ही तो हैं। जीवन में सुख–संतोष खोजने की हमारी अपनी–अपनी कसौटियाँ हैं। कठिनाई यह है कि हम फूलों को सोने की कसौटी पर कसते हैं और सोने में सुंगध खोजते हैं। ❍

H.W. Longfellow Rightly says :

The lives of great men all remind us, We can make our lives sublime,
And departing leave behind us, The foot-prints on the sands of time.

The Secret of Splendid SuccesS

Dr. (Prof.) Baban Kr. Singh

These unputdownable lines advise us to follow the foot-prints of great men. They are the vibrant source of inspiratio. Their modes and manners, sense and sensibility, wit and wisdom leave indelible imprints upon our heads and hearts. We must display the sense of honesty, chastity, punctuality and integrity with a view to reaching the apogee of progress and prosperity. Nothing is possible overnight. It is rightly said that labour is the key to success. We should be every inch optimist like P.B. Shelley who declares "If winter comes, can spring be far behind? An optimist looks at the bright side of life. Nothing is impossible in this dark and wide world. The 'Impossible' has positive meaning. Since it is possible, it is called impossible. (I am Possible). We should work according to a certain plan and programme because an aimless life is like a rudderless boat or a bus without a break or a train without an engine. Pandit Jawahar Lal Nehru rightly declares. "Thought without action is abortion. Action without thought is folly". Thought and action should not be poles apart. They should be closely related to each other. Let us try our best to change our ideal views and visions into reality by dint of immense patience, practice and perseverance.

All great persons have reached their destinations by virtue of their firm determination or strong will-power. Bapu made India free, Columbus discovered America and our scientists invented so many wonderful things. The entire credit goes to their boundless vigour and vitality. We should not forget human values at all. We should be modest because modesty is the best policy. Oliver Goldsmith rightly says "She stops to conquer". Infact, blessings play a magical role in life. Let us respect our parents, teacher and people of the society because, he prayeth well who loveth well.

We should not oast of our academic, social and economic achievements because in such a condition, progress comes to an end. The longest journey begins with the first step. So, we should work incessantly without brooding over its result. Let us believe in God and do the right. We should not be afraid of pangs and problems, sufferings and suffocations, failures and frustrations, trials and tribulations. We are ever reminded of the following lines of Robert Frost.

The woods are lovely, dark and deep,

But I have promises to keep,

And miles to go before I sleep,

And miles to go before I sleep.

The above-noted lines make us physically and mentally active and alert. They are gems. They bear universality. They are capable of changing our mental make-up. We cannot forget the message of venerable Bihar Bibhuti, Anugrah Babu, "Stand by your merit". It is absolutely worth-quoting and emulating. Last but not the least, let us recite the following line of Swami Vivekanand for ever and ever.

Arise! Awake! And stop not till the goal is reached. ❑

❍ Associate Professor, Deptt. of English, A.N.college, Patna

❍ **जो साहित्य केवल स्वप्नलोक की ओर ले जाये, वास्तविक जीवन को उपत करने में असमर्थ हो, वह नितांत महत्वहीन है।**
(डॉ.) काशीप्रसाद जायसवाल।

❍ **समाज और राष्ट्र की भावनाओं को परिमार्जित करने वाला साहित्य ही सच्चा साहित्य है।**
जनार्दनप्रसाद झा द्विज।

Water Living water and Wastewater

Dr. Subhash Prasad Singh

Water is an essential condition for any life - plants, animals and human beings, and water is essentially required for living of all animate beings. Nature has invested water with very unique properties in order to enable it to perform its vital functions in nature so unique that water is termed as a freak of nature. However, water as it exists in nature is not able to perform all these functions in a sustainable manner. It has to be suitably developed and managed for the purpose. It has to be kept in view that water exists in all its three states solid, liquid and vapour and is constantly in circulation in all the three spheres of the earth system - hydrosphere, lithosphere and atmosphere. The distribution and circulation of water in all the three states and the three spheres are governed by their own immutable laws of hydrology. One must also keep in view that water is an important and essential component of our environment and that various uses of water essentially change its quantity and quality aspects having impact on the environment. All these inter-related aspects of water and its management render it imperative that one must take an integrated view of water and its management for sustainability. Apart from life, mankind essentially requires for his living various other things which are not naturally available. They have to be produced which will require them going through certain processes of production, whether it is agricultural, industrial or energy production. It must be recognized that water is invariably required for all these productions through various production processes. Thus, every product or article that mankind uses or sees around has a certain amount of water that has been consumed in producing that article. This is called water footprint of that article. Just for illustration, water footprints of certain common items are given below.

Agricultural Products :

Item		Water Footprint
1.	Wheat (1 Kg)	1300 Liters
2.	Rice (1 Kg)	3400 Liters
3.	Egg (1 Kg)	1300 Liters
4.	Meat(1 Kg)	15,500 Liters

Domestic Products:

1.	Jeans (1 Kg)	10,850 Liters
2.	Cotton Shirt (500 gm)	4,100 Liters
3.	One cup of tea	32 Liters

4.	One cup of coffee	110 Liters

Industrial Products:

1.	Steel (1 ton)	235,000 Liters
2.	Cement (1 ton)	5,000 Liters
3.	Paper (1ton)	66,000 Liters
4.	Car (1 ton)	200,000 Liters

Energy Production:

1.	From coal	2000 Liters /MW-hr (without carbon captures)
2.	Nuclear	2800 Liters/MW-hr
3.	Natural Gas	800 Liters (without carbon capture), 1300 Liters (with carbon capture)

Apart from large quantities of water that may be required for any production, it must also be kept in view that the use of water for any production necessary gives rise to some problem in the wake of use of water for production such as the problem of pollution.

Living water

Water was not merely H_2O, but a living organism with its own laws commanding respect from mankind, if the consequences were not to be fatal. 'At least one now knows water is not always water', says *Schauberger* (*Living Water*). Now it is known, for example, that there is 'heavy water with special qualities; but generally, as far as science is concerned, water is thought to be an organically dead chemical substance, with several different sequential forms, and with a cycle from the atmosphere to the sea. But the problem of water is not so simple; he explains: Actually, **the mysteries of water are similar to those of the blood in the human body**. In Nature, normal functions are fulfilled by water just as blood provides many important functions for mankind. According to his theories on water, it is a living substance which is born and develops - normally to change into higher forms of energy- but can, with incorrect treatment, also die. Even a restricted volume of water can increase, not in the usual sense of expansion through heat, but instead through growth like an organism. Naturally moving water augments itself. It improves its quality and matures considerably. Its boiling and freezing points change, and wise Nature makes use of this phenomenon to raise water, without using pumping equipment, to the highest mountain peaks, to appear as mountain springs. This conception of raising water is not to be taken literally, since in this context it is concerned with the natural process of propagation and purification. This in turn helps towards the expansion of air by creating an air cover, which serves to develop a higher form of life. According to *Schauberger*, the water's cycle from the earth to the atmosphere and back again is either completed as a full cycle, or remains a half cycle. The full cycle can only take place where there is the appropriate vegetation cover to allow the rain to penetrate deeply, and it will in turn encourage natural vegetation and conditions of water run off. In the full cycle, when water falls to earth as precipitation, it drains through the soil, sinking deeper and deeper through rapid cooling, until it reaches a level where the weight of the water mass above equals the pressure of the deeply drained water, the latter, warmed by the earth's heat, and as its specific weight falls, wants to rise. During heating the water is able to attract and bind metals and salts. In fact, the water has been partially converted to steam during heating, and comes into contact with carbon beneath the earth, causing the reaction $C + H_2O \quad CO + H_2$; that means that the oxygen in the water separates from the hydrogen, and then the damp hydrogen gas forces its way towards the earth's surface with tremendous pressure. Thus carbon dioxide is released from the deeper drainage basins. At the same time surrounding salts are dissolved and carried away with the gas to be deposited again in layers near the surface, which is kept cool by the 'refrigeration' effect of the vegetation. This is how a constant supply of nutrition is made available for vegetation, and deposited at root level. In the half cycle, on the other hand, no such nutritional flow occurs. If the surface area has little or no vegetation cover, as for example after timber cutting, it becomes warmed up by the sun. If the ground is warmer than the precipitation the moisture is prevented from penetrating the soil. As the water sinks just below the surface, it rapidly warms up and runs off, without having been able to bring up any of the nutritional salts. It also evaporates much more quickly. The cycle also governs the formation of subsoil water, and its relative level. Where only half that cycle is completed there is no subsoil water, or rather, it is at great depth, having been dependent on the vegetation's cooling action of the soil. If, for example, there was a dry period in a normal landscape, the evaporation rates of the trees would increase, meaning that warmth

was taken away from the root areas, which cool down towards +4°C. Here Archimedes' principle comes into play as lower layers of less dense warmer water can never lie below colder water, which has a higher specific gravity. In other words, the subsoil water level rises towards the surface and offsets the threatened drying out of the root area. If there is no vegetation then no such rise in water level can take place. In this presentation of water's temperature changes throughout its cycle, *Schauberger* provides an interesting explanation of the continuous nutrition supply to the growth zones within the natural landforms, and also an explanation of the exhaustion of the soil that takes place when natural forests and healthy water conditions are destroyed.

Wastewater

The blind misuse of water through careless human activities leads to various contamination in water such as arsenic contamination, fluoride contamination, iron contamination, nitrate contamination, heavy metal contamination, etc. As has been mentioned earlier that water is said to be blood of mother Earth. Over extraction of underground water leads to disastrous situation such as geo-genic contamination. Water cannot and should not be viewed compartmentally for different purposes. It calls for an integrated view of water. Otherwise days are not far when the quotes of the English poet *Samuel Taylor Coleridge* in ***'The Rime of the Ancient Mariner'*** **"Water, Water everywhere but not a drop to drink"** will prove to be true. The same water is to be developed, used and managed for all the three purposes, i.e., for life, living and environment. Everyday potable water is X-rayed and much hue and cry is made over the issues apropos to water. Instead of looking for sustainable approach to drinking water, problems are raised. There is infact acute need to go through Living Water theory of *Schauberger* for the masses and the Government.

RECOMMENDATION TO BE THOUGHT UPON

Schauberger did not approve of pumped subsurface water as drinking water. This water forced artificially from the depths was 'immature' - it had not yet passed through the whole of its natural cycle, and therefore in the long term would be injurious to man, animals and even plants. Only the water that runs out from the soil by itself in the form of springs and streams is suitable as drinking water. The tapping of the earth's subsoil water resources contains, according to *Schauberger*, a double risk; these reserves of 'immature' water are used up, and also this water acts in a negative way upon all living biological processes. Instead of imparting energy to the drinker, it takes energy for itself from the organism.

❍ Department of Chemistry, A.N.college, Patna

प्रेरक प्रसंग

धर्म–शिक्षा

एक गुरुकुल से तीन युवक शिक्षा लेकर लौटने को थे। वे सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो गए थे। एक परीक्षा बची थी और उसे पास करके वे आचार्य बननेवाले थे। केवल धर्म की परीक्षा शेष थी। गुरुदेव ने कहा था कि''अभी तीन दिन की छुट्टी है। घूम–फिर आओ, फिर धर्म की परीक्षा भी ले लेंगे।'' तीनों युवा विद्यार्थी घूमने निकल पड़े। वे गुरुकुल से थोड़ी ही दूर गए होंगे कि साँझ घिर आई। तभी वे एक पगडंडी पर से गुजरे, जिस पर बहुत से काँटें पड़े थे। पहला युवक काँटों को देखकर झिझका और फिर एक छलाँग लगाकर काँटों से पार हो गया। दूसरा युवक काँटों को देखकर ठिठका। तभी पहले युवक ने जो काँटें लाँघ गया थ, आवाज दी कि ''वहाँ क्या कर रहे हो, जल्दी आ आओ। जंगल में अँधेरा हो रहा है।'' उसने एक आसान रास्ता निकाल गया था। तीसरे युवक ने काँटों को हटाना शुरू कर दिया। उधर से दोनों युवक चिल्लाए कि ''यह वन हिंस्र पशुओं से भरा है। अँधेरा हो रहा है, क्या मरना है यहाँ?'' तीसरा युवक बोला कि ''यही तो समस्या है। काँटों भरी पगडंडी है। कोई कैसे पार करेगा। कोई और भी तो यहाँ से गुजरेगा। इसलिए उसके लिए रास्त साफ किए दे रहा हूँ।'' ये युवक ऐसी बातें कर ही रहे थे कि उनके गुरु पास ही झाड़ी से यकायक प्रकट हो गए। वे झाड़ी में छिपकर तीनों शिष्यों का क्रिया–कलाप देख रहे थे। उन्होंने तीसरे युवक से कहा, ''वत्स! तुम जाओं, तुमने धर्म की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; क्योंकि दूसरों के लिए कंटकाकीर्ण पथ की सफाई करना ही बड़ा धर्म है।'' शेष दो युवकों को लेकर गुरुजी गुरुकुल लौट गए। उनकी धर्म–शिक्षा अभी पूरी नहीं हुई थी। ❍

A Born Bihari : George Orwell

Orwell was best known for his journalism, in essays, reviews, columns and in his books of reportage. Contemporary readers are more often introduced to Orwell as a novelist particularly through his enormously successful titles Animal Farm and Nineteen Eighty-Four.

Hansa Gautam

Before writing anything about this born Bihari British author I would like to quote his famous lines which we usually quote consciously or unconsciously at anytime of the day . The print media depends on his famous lines when they are short of words or failed to express themselves on matter related to socio-political disturbances. The famous lines are :-

- Big Brother is watching
- Room 101, doublethink, thought crime , thought police, newspeak
- Who controls the past controls the future who controls the present controls the past
- The sex instinct will be eradicated, Procreation will be an annual formality like the renewal of a ration card
- The object of persecution is persecution, the object of torture is torture, is torture, the object of power is power

Now the question arises who wrote these lines? and where? It were being written by George Orwell in a novel named "Nineteen Eighty- Four". His original name is Eric Arthur Blair but he is known by his pen name George Orwell. A British author, journalist and socialist he was born on 25th June 1903 at Motihari in Bihar where his father was a Civil servant for the British Government. Orwell moved to the UK at the age of one. Noted as a Political and cultural commentator , as well as an accomplished novalist. Orwell is among the most widely admired English language essayists, of the 20th century . His other novels like Animal Farm, Down and Out in Paris and London are always discussed in any social circles.

During most of his career Orwell was best known for his journalism, in essays, reviews, columns and in his books of reportage. Contemporary readers are more often introduced to Orwell as a novelist particularly through his enormously successful titles Animal Farm and Nineteen Eighty-Four. We always love to quote his famous lines like. Big Brother is watching. Who is this Big Broher? Nineteen Eighty- Four has given the English language the phrase 'Big Brother' or Big Brother is watching you' . This is used to refer to any oppressive regime but particularly in the context of invasion of privacy . This phrase is as a popular as the opening lines of the novel, Pride and Prejudice written by Jane Austen. 'Thought police' is also derived from Nineteen Eighty Four and might be used to refer to any alleged violation of the right to the free expression of opinion. It is particularly used in contexts where expression is proclaimed and expected to exist. His other famous quotes which are called as cool quotes are:-

- All animal are equal but some animals are more equal than others .
- War is evil, but is often the lesser evil.

His influence can be seen in the works of cinematic arts in recent time. Like Michael Moore's Fahrenheit 9/11, Spielbergs Minority Report. These are just a few of the recent works that nod to Orwell world of super-surveillance. He died on 21st January 1950 of tuberculosis. ❑

❍ Associate Professor of English, A.N.college, Patna-13

An Approach to Vedic Mathematics

Vedic Math essentially rests on the 16 Vedic Sutras or mathematical formulas which are actually word-formulae describing natural ways of solving a whole range of mathematical problems.

Dr. S.K. Mishra

Vedic Mathematics' is the name given to the ancient system of mathematics, or, to be precise, a unique technique of calculations based on simple rules and principles, with which any mathematical problem - be it arithmetic, algebra, geometry or trigonometry - can be solved, orally!

It was rediscovered from the Vedas between 1911 and 1918 by Sri Bharati Krishna Tirthaji (1884-1960). According to his research all of mathematics is based on sixteen Sutras, or word-formulae. The first book on Vedic Mathematics was published in 1965 by Bharati Krishna Tirthaji, while he had been propagating the techniques since much earlier, through lectures and classes. **It has** 367 pages in 40 chapters.

It contains a list of mental calculation techniques claimed to be based on the Vedas. Mental calculation comprises arithmetical calculations using only the human brain, with no help from calculators, computers, or pen and paper. People use mental calculation when computing tools are not available, when it is faster than other means of calculation. It is a mental tool for calculation that encourages the development and use of intuition and innovation, while giving the student a lot of flexibility, fun and satisfaction.

Perhaps the most striking feature of the Vedic system is its coherence. Instead of a hotchpotch of unrelated techniques the whole system is beautifully interrelated and unified: the general multiplication method, for example, is easily reversed to allow one-line divisions and the simple squaring method can be reversed to give one-line square roots. And these are all easily understood. This unifying quality is very satisfying; it makes mathematics easy and enjoyable and encourages innovation. Vedic Mathematics manifests the coherent and unified structure of mathematics and the methods are complementary, direct and easy.

Vedic Math essentially rests on the 16 Vedic Sutras or mathematical formulas which are actually word-formulae describing natural ways of solving a whole range of mathematical problems. The table below take you to the explanation, meaning for these Sutras.

Sl.	Name	Corollary	Meaning
1	Ekadhikena Purvena	Anurupyena	By one more than the previous one
2	Nikhilam Navatashcaramam Dashatah	Sisyate Sesasamjnah	All from 9 and the last from 10
3	Urdhva-Tiryagbyham	Adyamadyenantyamantyena	Vertically and crosswise
4	Paraavartya Yojayet	Kevalaih Saptakam Gunyat	Transpose and adjust
5	Shunyam Saamyasamuccaye	Vestanam	When the sum is the same that sum is zero
6	Anurupye Shunyamanyat	Yavadunam Tavadunam	If one is in ratio, the other is zero
7	Sankalana-vyavakalanabhyam	Yavadunam Tavadunikritya Varga Yojayet	By addition and by subtraction
8	Puranapuranabyham	Antyayordashake'pi	By the completion or non-completion
9	Chalana-Kalanabyham	Antyayoreva	Differences and Similarities
10	Yaavadunam	Samuccayagunitah	Whatever the extent of its deficiency
11	Vyashtisamanstih	Lopanasthapanabhyam	Part and Whole
12	Shesanyankena Charamena	Vilokanam	The remainders by the last digit
13	Sopaantyadvayamantyam	Gunitasamuccayah Samuccayagunitah	The ultimate and twice the penultimate
14	Ekanyunena Purvena	Dhvajanka	By one less than the previous one
15	Gunitasamuchyah	Dwandwa Yoga	The product of the sum is equal to the sum of the product
16	Gunakasamuchyah	Adyam Antyam Madhyam	The factors of the sum is equal to the sum of the factors ❑

❍ Associate Professor of Mathematics, A.N.college, Patna-13

Higher Education in Global Era and The Emerging Issues

Dr. Kumari Veena

Education plays a very important role in the process of economic development. According to Frederick Harbinson, "human resources constitute the ultimate basis of wealth of nation. Capital and natural resources are passive factors of production, human beings are active agents who accumulate capital, exploit natural resources, build social, economic and political organization and carry forward national development. If a nation fails to develop the knowledge and skills of human and utilize them effectively then it will be unable to develop on a sustainable basis."

Under the impact of globalization the educational system all over the world is undergoing continuous charges. Higher education in India is passing through a very crucial phase under the frame work of globalization, privatization and liberalization.

During the period of economic reform significant pressures are being felt by the entire education system. Strong advocacy for withdrawal of subsidies from all sectors including education has led to a significant decline in the role of the government in funding higher education. With shrinking patronage from the state overpowering entry of foreign institution is changing almost the very character and individuality of Indian higher educational system. At the same time heavy demands made for the technical competencies in the developing economics in view of global competitive framework can be considered as a blessing in disguise. As these forces might generate impetus for overhauling of higher education and research in the country. The Policy Framework for Reform in Education" prepared by top two industrialists Ambani and Birla calls for removing all subsidies for higher education and making all the institution self financing through escalating user fees, providing tax breaks to industries for investment in education and encouraging closer link with foreign universities. In fact the entire edifice of higher education is cracking up due to the lack of funds.

Thus over the preceding decades that country had taken long strides in higher education yet it had come to face several issues including access, equity, quality and excellence and relevant education. The 11th Five Year Plan (2007-2012) has addressed these issues in a more comprehensive manner. Higher education received high priority in the 11th plan. Prime Minister Man Mohan Singh describes the 11th plan as "Education Plan" and mention this change as Second Wave" in higher education.

❍ Associate Professor, P.G. Deptt. of Economics, A.N.college, Patna

Effect *of musical tones on plant* life

Shabana Karim

Whenever we see beautiful natural scenes of water fall, garden full of greenery and flowers, our heart dances with joy. We just feel freshness while singing. Various colours of petals of flower and other colourful things attract us.

A thing of beauty is joy forever.....

Whenever we see beautiful natural scenes of water fall, garden full of greenery and flowers, our heart dances with joy. We just feel freshness while singing. Various colours of petals of flower and other colourful things attract us. Colours play a vital role in our life and sometimes peep into our mind. Colour reflects the mood of the viewer. When we feel happy we love to see red or pink roses and other flowers. When we feel fresh we want to see greenish yellow colours, or we feel fresh after seeing yellowish green colour vice versa.

Like us plants also love colours, musical tones; Experiments have proved their role on growth and development. In this text we have to give some more time to understand the correlation between music colour and their role on plant life. This correlation is known as chromesthesia. We will come to know what is chromesthesia. It is a response in which audible sounds produce a colour as well as an audible perception. Further chronmeshtesia is a type of synesthesia which is simultaneous response to a stimulus in more than one sensory mode. We can understand as an individual as it creates colour association with music as well as mental stimuli.

At musical scale, India is familiar with culture of music along with rhythm, harmony and emotion. These all create the "saptak" notes or swars from Sa, Re, Ga, Ma, Pa, Dha, Ni, Sa. Double sa (from sa to sa) form octave (oshtok). There are 22 microtonal interrals (shrutis) in one octave. And each seven swars is sperted from each other by intervals of two, three or four microtone (Shruti). These shruti give fine shade of musical expressions. The notes from the 'raga' by slight variation. The melodic form or structural components of Indian music is as follow :-

- ***Music :*** Indian
- ***Melody (sur)*** - Lai + Tal + Katha (Tempo+Rhythm+Lyrics)
- ***Octave*** (Osthok)
- ***Notes*** (tones/swars)
- ***Microtonal intervals*** - Shruti
- ***Frequency*** - Naad (Kampankop)

According to the Sngeet Ratnakar by Sharangdev, and authentic Sanskrit musicological text of Indian music and colours of Sa to Ni are as follow :-

1. ***Sa :*** Red/Pink (nymphaea sp., Nelunbium Speciosum)
2. ***Re :*** Slight yellow
3. ***Ga :*** Golden
4. ***Ma :*** White - like kunda flower, Jasminum pubsscens
5. ***Pa :*** Black / Blue - Krishna
6. ***Dha :*** Yellow
7. ***Ni :*** Composite colour.

In old Karnatak description G-(Sa) - red, B-(Re)- Parrot green, A-(Ga)-Slight yellow/golden, D-(asit pa)-indigo, F-(Ni)-composite colour ie, purple.

Indian description of colours of notes can be correleated with physics and by mathematical calculation in this modern and scientific world.

If the audible frequency of musical octave is elevated 40 octaves, then it reaches (mathematically) the visible band of light frequency. And this is known as 'transposition' Thus each note exhibits a specific colour.

Relationship between colour, notes and plants :-

Some experiments had already be done on the effect of musical notes on plants during the 20th century. But recently experiments have been done by ultra sounds, and it has been shown to have greatest effects on plants. Especially during seed germination growth & other developments concern to photo morphogenesis. Transposition of such ultra and infra frequencies of visible light and audible musical notes, a comparative account of the effect of colour of light and musical notes on plants may be prepared.

Table - 1 Shows the experiments which dealt all these musical notes and we can see the good and bad effects of colour spectrum on plants.

Musical notes **B** (464 nm, ie green) and musical notes **D** (552 nm, ie, greenish blue and deep blue). Thus, green and greenish-bluish colours are hostile for plants. because cholorphyll of plants con not absorb green light and thus photosynthesis mechanisum ceases. It means **B** and **D** musical notes affect negatively and plants ultimately died. The musical note **F -** (far violet, ie 390 nm) produces African violet (purple colour) colour drooping at the start then revived and then started flowering. But it **'F'** (390 nm) musical note was played constantly for 8 hrs, all the plants become dead. Now if F note was applied for 3 hrs, intermittently, plants grew heal their. Thus it shows that application of same note with varied times gives different results. In far violet, Photosynthesis becomes very rapid and chlorophylls get photo- excited and photo-oxidized with the help of carotenoid (absorbs 380 nm - 520 nm) and for violet (390 nm). But if far violet is prolonged, carotenoid system cannot get time for proper functioning and thus plants die off. These developments can be understood by table 3 and table 4.

Colour and Music theraphy of plants :

There must be mechanism prevails behind the musical sense of plants and their sensitiveness to different tunes. Thus colour perception from musical notes play an important role in music and colour therapy of plants.

Referencs :-

1. en. Wikipedia. org/wiki/Sangeeta Ratnakara.
2. en. Wikipedia.ort/wiki/sangeet.
3. H. Takohashi, H. Sage and T. Kato, plant and cell physiology, 32, 5,729-732, 1991.
4. P.K. ghosh, translation work, sangit Ratnakar by Nihshanka sharongdev, 1994, p. 151, West-Bangal state Music Academy, Kolkata-33
5. L. Taiz and E.Zeiger, plant physiology, 1991, P. 711, Sinauer Associates.
6. Q. Yee - chuan, L. Won-chuan, L. Wen-chu, C.yourgchool and K Tae-Wan, Ultrasonics, 41, 5, 407-411, 2003.
7. J. Yi, B. Wang, X. Wang, D Wang, D Chuanre, Y. Toyama and A. Sakanishi, Colloids and Surfoces : Biointerfaces, 29, 115-118, 2003.
8. B. Wang, J. Sheo, L. Biao, L. Jie and D. Chuanren, colloids and surfaces : Bioinerfaces, 37, 107-112, 2004. ❑

❍ Associate Professor, Deptt. of Botany, A.N.college, Patna

प्रेरक कथा

महानता का मतलब

छत्रपति शिवाजी धार्मिक और चरित्रवान् थे। धार्मिक होने की उनकी परिभाषा का आधार था– सभी धर्मों का समान आदर। चरित्रवान् होने का सूत्र था–मातृशक्ति को माँ–बहन समझना। मुगल सम्राट् औरंगजेब से उनका द्वंद्व जग–जाहिर है। सम्राट् ने उनके विरूद्ध एक सशक्त अभियान छेड़ा और भारी सेना लेकर उनके अनेक किलों पर कब्जा करके वहाँ मुगल किलेदार नियुक्त कर दिए। ऐसा ही एक किला था कल्याण, जहाँ खुद औरंगजेब का मामा शायस्ता खान ठहरा हुआ था। शिवाजी के गुरिल्ला सैनिककों ने कल्याण फतह कर लिया। मुगल भागने लगे। तभी कुरान शरीफ का पाठ कर रही शाही परिवार की एक सुंदर नवयौवना मराठों के चंगुल में फँस गई। मराठे सरदार ने सोचा कि इस सुंदर महिला को शिवाजी को भेंट करके छत्रपति का अनुग्रह प्राप्त किया जा सकता है। अतः वह उस सुंदरी को लेकर शिवाजी के डेरे में पहुँचा। उस महिला ने पवित्र कुरान पढ़ना नहीं छोड़ा था। सुंदरी की पालकी नीचे रखवाकर मराठा सरदार छत्रपति के दरबार में पहुँचा। वे राज–काज में व्यस्त थे। जब उनकी व्यस्तता कुछ कम हुई तो सरदार ने उन्हें कल्याण–विजय का शुभ समाचार दिया। शिवाजी अति प्रसन्न हुए। उन्हें प्रसन्न जानकर सरदार ने निवेदन किया कि मैं आपके लिए एक विजयोपाहार लाया हूँ और वह पालकी–सहित उस महिला को ले आया। छत्रपति ने उसे अनिंघ सुंदरी को देखकर नजरें नीची कर लीं और कहा, ''काश! मेरी माता भी इतनी सुंदर होती हतो मैं भी सुंदर होता।'' फिर उन्होंने सरदार से कहा, ''इस सुंदरी को ससम्मान मुगल शिविर में पहुँचा दिया जाए। धार्मिक स्थलों, धर्म–ग्रंथों और बहू–बेटियों का अपमान करके कोई महान् नहीं बन सकता।'' ❍

'रामचरितमानस' की वर्तमान संदर्भगर्भिता

'रामचरितमानस' में आदर्शवाद की पराकाष्ठा है, प्रेम और भक्तिमय जीवन की आकांक्षा है, मर्यादा और लोकरक्षण का प्राबल्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–पुरुषार्थ चतुष्टय की वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक व्याख्या है। आधुनिक भारत मे या यों कहें संपूर्ण विश्व में इन तथ्यों की उपलब्धि के लिए अनेक स्तरों पर प्रयास हो रहे हैं। धर्म के नाम पर अस्तित्व के साथ तादात्मय स्थापित करने की चेष्टा विभिन्न रूपों में दर्शनीय है।

✍ डा. संजय कुमार सिंह

जॉन रस्किन ने समस्त पुस्तकों को दो रूपों में विभाजित किया है– 1. बुक फॉर द टाइम और 2. बुक फॉर एवर। पहले प्रकार की पुस्तकें तात्कालिक हुआ करती हैं; वे समय के प्रवाह के साथ जुड़ती हैं और उन्हें ध्वनि देती हैं। 'यशोधरा', 'रश्मिरथी', हुंकार', 'साकेत', 'रामचंद्रिका' आदि ऐसी ही पुस्तकें हैं। उक्त काल में इनकी बड़ी ख्याती होती है। उनका अपना महत्व होता है। दूसरे प्रकार की पुस्तकें कालातीत, देशातीत अर्थात् सभी समय के लिए समान रूप से उपयोगी हुआ करती हैं। 'रामचरितमानस', 'पैराडाइज़ लॉस्ट', 'कामायनी' आदि इसी कोटि की रचनाएँ हैं। इनमें देश, काल और वातावरण का चित्रण तो होता ही है; साथ ही सर्वोपयोगी, सर्वमंगलकारी एवं वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों को जोड़ने का सूत्र पिरोया रहता है। इसलिए प्रत्येक युग का मानस उनमें अपनी वर्तमान संदर्भगर्भिता को ढूँढ़ निकालता है। वह सदैव प्रसांगिक होता है। 'रामचरितमानस' इस अर्थ में अनूठा साहित्य है। इसकी वर्तमान संदर्भगर्भिता अक्षुण्ण अथक प्रासंगिक है।

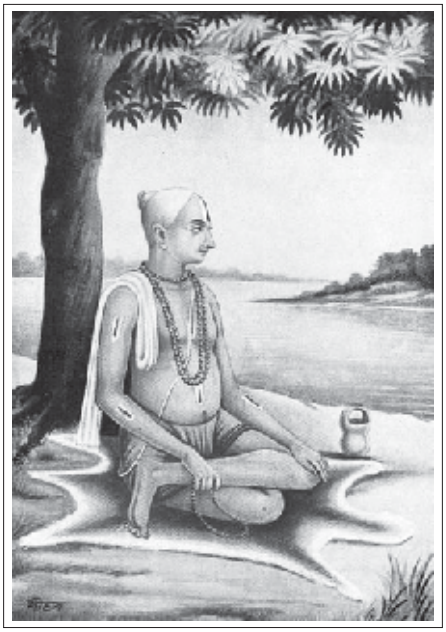

जरा हम अपने वर्तमान को टटोलने का प्रयास करें। भौतिकता प्रधान जीवन और उसे प्राप्त करने की अंधी दौड़, सुख–सुविधा से जीने के हजारों उपाय, चाँद–तारों पर चढ़ाई, प्रक्षेपण, परीक्षण और विज्ञान के महाविनाशी रथ पर आरूढ़ होकर सिकंदर और हिटलर बनने की लिप्सा चारों ओर दिखाई पड़ रही है। हत्या, अपहरण, बलात्कार, शोषण के जाल चारों ओर बिछे हैं। राजनीतिक एवं धार्मिक उहापोह का ताना–बाना सर्वत्र बुना जा चुका है। सामाजिक रूढ़ियाँ एवं दकियानूसी मान्यताएँ अंधविश्वास का रूप ले बैठी हैं। कुंठा, संत्रास, अजनबीपन के साये में सिमटकर हम अपने जीवन से निराश होते चले गये। हताशा और निराशा की प्रवृत्ति ने विश्व–समुदाय को अवाक् कर दिया है। ये 'जाएँ तो जाएँ कहाँ' की भावना प्रत्येक मन में इतनी प्रबल हो गयी है कि 'ग्लोबलाइजेशन' जैसे शब्द भी 'निकटता की दूरी' सिद्ध हो चुके हैं। अस्तित्वविहीन निरीश्वरवादी मान्यताएँ अपना थोथा सिक्का जमा चुकी हैं। 'रामचरितमानस' में ये सारी प्रवृत्तियाँ यथार्थ और आदर्श की टकराहट से उपजी हैं। इनके स्वरूप का विहंगावलोकन किया जा सकता है।

वंश–परंपरा को स्थायी रखने एवं सुदृढ़ करने के निमित्त पिता की चिंता स्वाभाविक है। दशरथ का पुत्रेष्टि यज्ञ कराना इसी चिंता का परिणाम है। अनिंद्य सुंदरी कैकेयी के साथ अपने चौथेपन में विवाह रचना दुःख–भोग और अंततः प्राण जाने का मूलभूत कारण बना। अपने प्रिय पुत्र भरत की अनुपस्थिति में दूसरे प्रिय पुत्र राम का राज्याभिषेक करना अलोकतांत्रिक सिद्ध हुआ। मंथरा के लिए यही शक का कारण हुआ तथा राज्य परिवार के बीच एक दासी ने अपनी अस्मिता प्रकट की। सत्य और ईमानदारी पर चलने वाले को दर–दर की ठोकर खानी पड़ी। राम को ही नहीं लक्ष्मण और सीता को भी चौदह वर्षों तक जंगल की खाक छाननी पड़ी। अपहरण की घटना केवल सीता के साथ ही नहीं घटित हुई; बालि भी अपने अनुज की पत्नी पर आधिपत्य जमाए रखा, वासना से अभिभूत नारी के रूप में शूर्पनखा याचना करती रही और अंततः उसके नाक–कान ऐसे कटे कि आज तक मुँह दिखाने योग्य नहीं रही। प्रेमचंद ने लिखा है– ''नारी में जब पुरुष के गुण आ जाते हैं तब वह कुलटा हो जाती है।1 मंथरा अपनी राजनीति में पूर्णतया सफल हुई। छल–प्रपंच का जो महाजाल रचा गया वह वर्तमान संदर्भगर्भिता को प्रकाशित करता है। कैकेयी ने तो वचनबद्धता की बात दशरथ से कही क्योंकि जाने–अनजाने दशरथ कैकेयी को छल रहे थे। बालि के साथ भी छल हुआ। राम ने उसे छल से मारा। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सताए हुए लोग जिस प्रकार पार्टियाँ बदल लेते हैं; उसी प्रकार सुग्रीव, विभीषण आदि ने किया। रावण के जितने सेनाध्यक्ष और सिपाही थे वे मनसा पराजित हो चुके थे इसलिए रावण जैसे महाबली योद्धा को भी दुर्दिन देखने पड़े। ये सारी बातें सकारात्मक तथ्य हैं जो आज भी स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। यही मानस की प्रासंगिकता है।

थोड़ी संक्षिप्त परिचर्चा अपरिहार्य है। राम ने बहुत सावधानी या

कहें चतुराई से आदिवासी संस्कृति को सनातन संस्कृति अथवा हिन्दू संस्कृति में मिलाने का प्रयास किया। बिना उनके सहयोग के सीता की विमुक्ति अशोक वाटिका से संभव नहीं थी। सुग्रीव ने यद्यपि कुछ दिनों के लिए कार्य के स्थगन का तर्क प्रस्तुत किया परंतु जब राम क्रोधित हुए तब उसने वानर–सेना को एकत्रित करने में ही अपनी भलाई समझी। अंगद, जांबवान, नल–नील और हनुमान तथा हजारों की संख्या में वानर–सेना की तैयारी और आक्रमण–प्रत्याक्रमण इस तथ्य का सूचक है कि छोटे–छोटे जनपद और क्षेत्र अपने को मुख्य धारा में विलय करने के लिए प्रतिबद्ध थे। वे भी सभ्य और गौरवान्वित होना चाहते थे। आज की संपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक दशा का आख्यान–चित्र 'मानस' में खींचा गया है।

नारी–शोषण और नारी दुर्दशा का अत्यंत मार्मिक वर्णन वर्तमान संदर्भ को रूपायित करता है। सीता का स्वयंवर और साथ में उर्मिला, मांडवी, श्रुतिकीर्ति को सभी भाइयों के लिए सर्वोचित ठहराना आधुनिक नारी के चिंतन का प्रतिफलन है परंतु उनमें सीता को महल के बाहर पति के साथ रहते हुए भी बिलख–बिलख कर जीवन काटना पड़ा और उर्मिला को महल के भीतर अपने पति के वियोग में चौदह वर्षों तक सिसक–सिसक कर समय काटना पड़ा। मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में 'उर्मिला समय काटते–काटते स्वयं समय हो गई।[2] ऐसी राजन्य व्यवस्था में नारियों की ऐसी दुर्दशा! निश्चित ही यह वर्तमान में नारी जगत के ऐसे पहलू हैं जहाँ पुरुष–प्रधान समाज में वे आज आधुनिक कहलाते हुए भी परंपरा से परिचालित हैं।

आज हम 'ग्लोबलाइजेशन', 'पूंजी निवेश', अन्तरराष्ट्रीय नीति एवं कूटनीति, वस्तुओं के आयात–निर्यात, यातायात की सुविधाएँ, कल–कारखानों एवं नगरों के विकास, वैज्ञानिक प्रगति एवं प्रौद्यौगिकी तथा तकनीकी उड़ान की जो बातें करते हैं वे सभी 'मानस' में विद्यमान हैं। भाषा और अभिव्यक्ति के माध्यम तथा संकेतों की विभिन्नताएँ अवश्य हैं, परंतु बातें पुरानी ही हैं। रावण की लंका और उसकी व्यवस्था तथा एकछत्र आधिपत्य आज विश्व के पैमाने पर किसी से छिपा नहीं है। हम रहते भारत में हैं, कहलाते भारतीय हैं परंतु हमारी सारी चिंतन–पद्धति अमेरिका द्वारा आयातित हैं। लोकसभा में बैठकर अन्तरराष्ट्रीय नीति का वही समाधान ढूँढ़ते हैं जो हमें निर्धारित तथ्य के अनुरूप बताया जाता है। रावण के जैसा अमेरिका का आतंक संपूर्ण विश्व का काबिज है। 'व्हाइट हाउस' स्वर्ण–नगरी लंका से कम नहीं है। उस समय के पुष्पक विमान, व्यापार–व्यवसाय तथा पुल–निर्माण, सीमा रेखाओं की चौकसी आदि हमारे वर्तमान को झकझोरते हैं। इस तथ्य पर चिकोटी काटते हुए हरिशंकर परसाई ने 'लंका विजय के बाद रामराज'[3] कहानी में सब कुछ स्पष्ट कर दिया है। नियोजन की समस्या, हड़ताल, घेराव, धरना, शिक्षाप्रेम, हाहाकार और जुलूस आज की वास्तविकता को दरसाने में समर्थ हैं। अतः यह स्पष्ट है कि जीवन के सभी पहलुओं में आज की यथार्थवादी मान्यताओं एवं घटनाओं का वास्तविक निरूपण 'रामचरितमानस' में हुआ है।

'रामचरितमानस' की प्रासंगिकता एवं संदर्भगर्भिता को अनेक आयामों में देखा जा सकता है। कथा–वर्णन–प्रणाली तथा अन्यान्य रूपों में इसका निदर्शन इस प्रकार है –

1. मानव–मन के धरातल पर संवेदनात्मक यथार्थवाद की अभिव्यक्ति– प्रेम के क्षेत्र में राम और शबरी का मिलन, पति को समझाने तथा मनाने के रूप में मंदोदरी के वचन, तिल–तिल कर अपने यौवन को मोम की भाँति पिघला कर समय काटने वाली उर्मिला की भावभूमि के रूप में तथा लोकापवाद से बचने के लिए सीता को अग्नि परीक्षा से गुजरने के रूप में अभिव्यक्ति मिली है।[4]

2. राम के संपूर्ण जीवन में इतिवृत्तात्मकता होते हुए भी सुनियोजन का गांभीर्य है। संघर्ष के साथ धैर्य का मणिकांचन संयोग है। गोस्वामी जी ने ऐसे चरित्र का गठन किया है, जिसकी आवश्यकता आज के युग में सभी को है। पिता के प्रति कर्तव्य से लेकर सभी पात्रों के प्रति उत्तरदायित्व की भावना लोकरक्षण की ओर संकेत है। त्याग, यथार्थ की कोख से जन्म लेकर अनुकरणीय बना है। किसी भी परिवार में ज्येष्ठ पुत्र के इस कर्तव्य–बोध को स्वीकारा जा सकता है। इसी तरह निषाद, शबरी, हनुमान, सुग्रीव, जांबवंत, अंगद आदि चरित्रों के साथ राम का व्यवहार जातिगत भावना से ऊपर उठकर एक स्वस्थ संस्कृति के निर्माण में सहायक है। आर्य–अनार्य सभ्यता की टकराहट से विश्व समुदाय की एकता का निदर्शन हुआ है। प्राचीन भारतीय संस्कृति आधुनिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है। जिस विकसित देश की यथार्थवादी कल्पना ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम ने की है उसकी अभिव्यक्ति संघर्षशील चेतना के इतिहास के रूप में 'रामचरितमानस' में दर्शनीय है।

3. 'रामचरितमानस' में आदर्शवाद की पराकाष्ठा है, प्रेम और भक्तिमय जीवन की आकांक्षा है, मर्यादा और लोकरक्षण का प्राबल्य है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष–पुरुषार्थ चतुष्टय की वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक व्याख्या है। आधुनिक भारत मे या यों कहें संपूर्ण विश्व में इन तथ्यों की उपलब्धि के लिए अनेक स्तरों पर प्रयास हो रहे हैं। धर्म के नाम पर अस्तित्व के साथ तादात्मय स्थापित करने की चेष्टा विभिन्न रूपों में दर्शनीय है। महर्षि अरविंद, रमण, ओशो, जे0 कृष्णमूर्ति तथा अन्यान्य योगियों के दर्शना और क्रियात्मक अभिव्यक्ति के पीछे लोग अभिनव दृष्टि प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा जगत में 'काम' को अभिनव आयाम में देखा–परखा जा रहा है। यौन–शिक्षा के प्रति जागरूकता दिखायी पड़ती है। आर्थिक दृष्टिकोण से विश्व बाजार सिमटकर बिल्कुल एक इकाई जैसा हो गया है। ठीक इनके समानांतर कई निषेधात्मक प्रवृत्तियाँ आतंक के रूप में मुँहबाए खड़ी हैं। उन पर विजय पाने की चेष्टा हो रही है। नाकामयाबी इसलिए है कि हम उनका राजनीतिकरण कर रहे हैं। राम जैसी स्पष्टता के साथ यदि जीवन को देखने की दृष्टि पैदा हो तो यह संसार सुखमय हो सकता है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ 'रामचरितमानस' की भावभूमि को अपनाने की आवश्यकता है।

4. 'रामचरितमानस' में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने व्यक्तित्व के अनुरूप मार्ग ग्रहण करने और उस पर चलने की पूरी छूट है। इसके

लिए गोस्वामी जी ने चार प्रमुख मार्गों अथवा घाटों का विधान किया है। इनमें से किसी एक को आधुनिक मानस ग्रहण कर सकता है। ये संवाद के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं–

1. याज्ञवल्क्य – भारद्वाज – संवाद – ज्ञानघाट
2. कागभुषुण्डि – गरुड़ – संवाद – भक्तिघाट
3. शिव – पार्वती – संवाद – कर्मघाट
4. तुलसी – संत – संवाद – उपासना घाट

इनमें से किसी एक का संग्रहण मानव–कल्याण की अभिनव कड़ी सिद्ध हो सकती है। यही मानस की प्रासंगिकता है।

5. 'रामचरितमानस' वर्तमान शिक्षा जगत के लिए अनुकरणीय है। आज की शिक्षा प्रणाली में विज्ञान की जो इतनी उन्नति दिखाई पड़ रही है उसे और भी उन्नत तथा श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा नल और नील जैसे अभियंताओं से ग्रहण की जा सकती है। हनुमान द्वारा संजीवनी बूटी लाने, उसकी सम्यक् खोज की दिशा निर्धारित करने तथा आयुर्वेद संबंधी जड़ी–बूटियों की खोज आज के लिए विचारणीय है। आज की शिक्षा में मानव के संपूर्ण विकास की बात की जा रही है। उसके कई रूपों पर काम भी किए जा रहे हैं परंतु सही दिशा निर्धारित नहीं हो सकी है। आवश्यकता है ऐसे टीम की जो शैक्षणिक गुणवत्ता के आधार पर राष्ट्र को सबलता प्रदान कर सके। आज की शिक्षा अर्थ प्राप्ति और भौतिक सुख–प्राप्त करने के आदर्श पर टिकी है। मानवीय गुणों से ओतप्रोत शिक्षकों और अभ्यर्थियों का अभाव खलता है। केवल विषय की जानकारी देकर शिक्षा का उन्नत रूप नहीं प्रस्तुत किया जा सकता है। 'रामचरितमानस' की पंक्ति है–

''गुरु गृह गएउ पढ़न रघुराई, अल्पकाल विद्या सब पाई।''[6]

ऐसे शिक्षकों की तलाश करनी है, जो कम समय में भावबोध, जीवन बोध और मूल्यबोध पैदा कर सके। 'रामचरितमानस' सभी विद्याओं में महारथ प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। इसके लिए विश्लेषणात्मकता से संश्लिष्टात्मकता की ओर प्रसरण करने की योजना बनानी होगी अर्थात् सभी विषयों के महत्वपूर्ण तथ्यों को तीन विषयों में आबद्ध करना होगा। इसके लिए '3M' की बात प्रभावकारी होगी।[7] म्यूजिक, मैथेमेंटिक्स और मेडिटेशन के माध्यम से अल्प–काल में सारी विद्याओं को प्राप्त किया जा सकता है। एक अत्यावश्यक शैक्षणिक परिवर्तन 'स्वयं की खोज' और वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के माध्यम से संपादित की जा सकती है। 'मानस इस दिशा में कारगर कदम सिद्ध होगा। आवश्यकता है विश्वामित्र और वशिष्ठ जैसे गुरुजनों की खोज करने की। महापंडित रावण के कतिपय शैक्षणिक आदर्श को अपनाने की तभी आतंकवाद जैसे अहं का विनाश संभव है। जीवन की जड़ता संघर्षरत ऊर्जस्वित चेतना के माध्यम से संभव है। युवकों की ऊर्जा को एक निश्चित दिशा में प्रवाहित करने की आवश्यकता है। उन्हें लक्ष्मण के साथ–साथ भरत और राम भी बनना है। होश का दीपक यदि साथ हो तो सारे अंधकार दूर किए जा सकते हैं। वस्तुतः अंधकार का कोई निजी अस्तित्व नहीं है; केवल माचिस की एक तीली जलाने की जरूरत है। इस दिशा में 'मानस' की तीली आज के संदर्भ में प्रासंगिक है। इसी के आधार पर हम प्रेम और सौहार्द के खिले हुए पुष्प का सुगंध ले सकेंगे।

'रामचरितमानस' एक महाकाव्य है। महाकाव्य के सारे गुणों से आवेष्टित होने के कारण इसमें मानवतावाद, समन्वयवाद तथा विश्वबंधुत्ववाद की भावना दर्शनीय है। आवश्यकता है ज्ञान, इच्छा और क्रियात्मक पहलू को एक निश्चित बिंदू पर लाने की। आज का मानव 'इड़ा' के छलावे में इतना आ चुका है कि उसे 'श्रद्धा' दिखाई नहीं पड़ती। इसे प्रबल करना होगा। जब तक ऐसा नहीं होगा; समन्वय की बात व्यर्थ सिद्ध होगी और हम यही कहते रहेंगे।

''ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है, इच्छा क्यों पूरी हो मन की,
एक दूसरे से न मिल सकें, यही विडंबना है जीवन की।''[8]

इस विडंबना को 'मानस' का समन्वयवाद अर्थात्, यथार्थ और आदर्श का मिलन, हृदय और वृद्धि की गुफ्तगू से दूर किया जा सकता है। यदि 'रामचरितमानस' के साहित्यिक औदात्य को हम ग्रहण करें तो ब्रह्मानंद सहोदर की प्राप्ति अवश्यंभावी है। लोक जीवन की लोकव्यापी चेतना, ग्रामीण जन–जीवन की झाँकी, षोडष संस्कार तथा अन्य लोकरीतियाँ, व्यापक जीवन दृष्टि, बारहमासा एवं षट्ऋतु वर्णन तथा अन्य महाकाव्यात्मक बुनावट हमारे जीवन और जगत को आंदोलित करने के लिए पर्याप्त हैं। 'मानस' का मानसरूपक तो ज्ञान–गंगा में स्नान करने जैसा है। आज के लोकमानस को इसी में स्नान कर निमज्जित होना चाहिए। आज विश्व समुदाय को ऐसे जीवन की आवश्यकता है जिसमें निर्भय होकर जीने की कला हों। 'रामचरितमानस' का हरेक पात्र जीवन को उर्ध्वगामी बनाने की प्रेरणा देता है। राम और रावण हमारे भीतर हैं, प्रेम और घृणा का साम्राज्य हमारे अंतस्तल में है, भौतिकता और आध्यात्मिकता की प्यास हमारे मन में है। लोकादर्श और यथार्थ दोनों दिशाएँ वर्तुलक्रम में घूम रही हैं। उन्हें गलबाहीं देने की जरूरत है। जीवन और जगत का तालमेल आवश्यक है। इसके अभाव में समस्वरता के संगीत नहीं निकल सकेंगे। भगवान बुद्ध ने कहा है–

''वीणा के तार को ढ़ीला मत छोड़ो, नहीं तो संगीत नहीं
निकल सकेगा । और उसे इतना मत कसो कि तार ही
टूट जाय। तुम्हें दोनों अतियों से बचना है भिक्षुओं!''[9]

'रामचरितमानस' की भी यही शिक्षा हैं समन्वय करो; सम पर आओ, जीवन की वीणा बजेगी। जब तुलसी ने बजाया, कबीर और नानक ने गाया तो आप क्यों नहीं?

संक्षेपवृत्या चारों ओर निराशा के बादल छाए हैं, घृणा और वैमनस्यता की अग्नि प्रज्वलित है, भाई–भतीजावाद क्षेत्रवाद, जातिवाद, राजनीति का अपराधीकरण, अपराधियों का राजनीतिकरण, आतंकवाद और अपहरणवाद, हिरोशिमा–नागासाकी से वर्ल्ड ट्रेड सेंटर के धाराशायी होने की नौबत, संसद में बम फेंकने, अपने ही देश के रक्षकों के मासूम बच्चों को स्कूल में बंद कर जघन्य हत्या करने से लेकर अनेक स्थानों पर विस्फोट और धमाकों की अभिगूंज सबकुछ अराजक और अनर्गल – क्या जीवन रिक्त हो गया है? क्या राम की सीता अशोकवाटिका में ही रह जाएगी? क्या बालि

अपने अनुज की पत्नी को धरोहर बनाकर रखेगा? शूर्पनखा यौन–पिपासा से युक्त होकर इधर–उधर भटकती रहेगी? शायद नहीं। निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं। वर्त्तमान भारत में आशा की किरण दिख रही है। अभी भी राम के आदर्शों के अनुगामी है जो आसुरी प्रवृत्ति का दमन सुगमातापूर्वक कर सकते हैं। आवश्यकता है अपने भीतर ऊर्जा जगाने की। आज आवश्यकता है इसी संदर्भ को रूपायित करने की। इसलिए रामचरितमानस की वर्तमान संदर्भगिर्भता सापेक्ष है। इसी सापेक्षता के कारण वैश्वीकरण एक नए संदर्भ में रूपायित हो सकेगा। अभी जो वैश्वीकरण की बात है उसकी आधारशिला एकमात्र अर्थ–व्यवस्था और उसके आदान–प्रदान पर अवलंबित है। इस अवलंबन से कहीं आगे की बात 'मानस' में छिपी है और वह है– विश्वबंधुत्ववाद। हम सब एक हैं, राष्ट्र की सीमा रेखाओं की विवाद को मिटाने की जरूरत है, नेताओं और राजनीतिज्ञों को सबक सिखाने की आवश्यकता है। आवश्यकता है ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिकों की, बिस्मिल्ला खाँ जैसे शहनाई वादक की, गोस्वामी तुलसीदास जैसे लोकनायक की तभी हम अपने राष्ट्र के साथ–साथ विश्व के मंगल की कामना कर सकते हैं।

निराश होने की आवश्यकता ही नहीं है। अँधेरा स्वतः समाप्त होगा। राम का लोकरक्षण, कृष्ण का लोकरंजन, कबीर का लुकाठी उठाना और घर जलाना, गुरू नानक का एक ओंकार सतनाम, मीरा का नृत्य और विष का प्याला हँसते हुए पीना, सहजोबाई की सहजता, दयाबाई की ममता, चरणदास और धरमदास का समर्पण आज की मनुष्यता को प्रभावी बनाने के लिए काफी है। रवींद्रनाथ टैगोर ने लिखा है– 'उत्सव आमार जाति, आनंद आमार गोत्र'।[10] आज इसे पहचानने की जरूरत है।

महादेवी वर्मा ने अपने अभिभाषण के क्रम में कहा था– ''आज भारतवर्ष के सभी शिक्षकों को एक बार फिर से 'रामचरितमानस' पढ़ने की आवश्यकता है।'' विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों में इसके सम्यक् पठन–पाठक और मंचन की आवश्यकता है।

फादर कामिल बुल्के जब अपनी जन्मभूमि रैम्सफील्ड में संन्यास ग्रहण कर रहे थे तब उन्होंने चर्च के पादरी के समक्ष एक शर्त रखी थी– ''मैं तभी संन्यास ग्रहण करूँगा जब मुझे भारतवर्ष जाने और वहाँ रहने की अनुमति दी जाएगी।''[11] उन्हें अनुमति मिली और उन्होंने इलाहाबाद से 'रामकाव्य की परंपरा और विकास' जैसे विषय पर न केवल शोधप्रबंध प्रस्तुत किया बल्कि अपने जीवन में राम के आदर्श को यों उतारा कि राममय हो गए। अपने दार्जीलिंग और राँची प्रवास काल में उन्होंने राम को जी भर देखा और अंत में दिल्ली में गैंग्रीन को हनुमान बाहुक मानकर सदा के लिए राम–नाम को सत्य सिद्ध किया। सभी की आँखें नम थीं। आज भी वह तारा टिमटिमा कर प्रकाश दे रहा है और कह रहा है– मृत्यु पर विजय प्राप्त करो, 'मरा' को राम में रूपांतरित करो, विध्वंस को सृजन का आयाम दो; निषेध को स्वीकार में बदलों, 'न' के स्थान पर 'हाँ' कहना सीखो। जीवन अभी है– यहीं है; जीकर तो देखो। यहीं रामचरितमानस' की वर्तमानसंदर्भगिर्भिता है और प्रासंगिकता भी।

1. डॉ0 नलिन विलोचन शर्मा – हिन्दी उपन्यास विशेषतः प्रेमचंद राजकमल प्रकाशन दिल्ली, प्रथम पृ0 सं0–22

2. श्री मैथिलीशरण गुप्त – साकेत, नवम् सर्ग, चिरगाँव प्रकाशन, झाँसी चतुर्थ सं0–1980 पृ0 सं0–113

3. हरिशंकर परसाई– परसाई की कहानियाँ, लंका विजय के बाद रामराज राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली पृ0सं0–84

4. अज्ञेय – मैं क्यों लिखता हूँ, राष्ट्रीय शै0 अनु0 एवं प्र0 परिषद्, द्वितीय सं0–2005, पृ0सं0–124

5. आचार्य रजनीश – सम्भोग से समाधि की ओर, ताओ प्रका0, पूना, पंचम सं0, पृ0सं0–21

6. तुलसीदास – रामचरितमानस, सं0– हनुमान प्र0 पोद्दार, गीता प्रेस गोरखपुर, पृ0सं0–24

7. मा अमृत साधना – ....., ओशो टाइम्स (पत्रिका), ताओ प्रका0, दिसम्बर – 2005 – अंक, पृ0 सं0– 21

8. जयशंकर प्रसाद – कामायनी इड़ा सर्ग, लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, सं0– 1995, पृ0 सं0 – 44

9. सर्वपल्ली डॉ0 राधाकृष्णन – भारतीय दर्शन, प्रथम भाग – बौद्ध दर्शन प्र0 सं0 – 1965, पृ0 सं0 – 111

10. डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी – संविद्रूपा महामाया, लोक भारती प्रका0 इलाहाबाद सं0– 1984, पृ0सं0–44

11. अनिरूद्ध राय (सम्पादक) – मानवीय करुणा की दिव्य चमक, राजकमल प्र0, दिल्ली, प्रथम सं0–2005, पृ0सं0 –120

❍ हिन्दी विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती।
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।।

❍

वह मुसाफिर क्या
जिसे कुछ शूल हीं पथ के थका दें।
हौसला वह क्या
जिसे कुछ मुश्किलें पीछे हटा दें।

❍

महिला सशक्तीकरण

महिला सशक्तीकरण की पहल सर्वप्रथम 1985 में नैरोबी में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में की गई थी। इसके बाद विश्व के सभी भागों में इसने एक आंदोलन का रूप ले लिया। महिला सशक्तीकरण का सामान्य अर्थ है – महिला को शक्ति संपन्न बनाना।

✍ डा.वीणा कुमारी

महिला की सुदृढ़ व सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध तथा मजबूत समाज की द्योतक होती है। जहाँ तक भारत का संबंध है, यहाँ ''यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः'' का सूत्र वाक्य पौराणिक काल से मान्य रहा है। ऐसे बहुत उदाहरण मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि प्राचीन काल में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी। मध्यकाल एवं इसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति तक इनकी स्थिति संतोषजनक नहीं रही है। किंतु स्वतंत्रता के बाद से संविधान में किए गए अनेक प्रावधानों के कारण आज भारत की महिलाओं की स्थिति में गुणात्मक सुधार हुआ है लेकिन ग्रामीण महिलाओं की स्थिति अब भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती। अनेक कारणों से भारतीय ग्रामीण महिलाओं की स्थिति कमजोर बनी हुई है। शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, राजनीतिक एवं आर्थिक भागीदारी आदि से संबंधित संकेतकों में अधिकांश भारतीय ग्रामीण महिलाओं की स्थिति निम्नवत बनी हुई है।

प्रत्येक समाज में स्त्रियों की और पुरूषों की सामाजिक स्थिति उनके आदर्शो और कार्यो के अनुसार निश्चित होती है। इन आदर्शो और कार्यो का निर्धारण उस समाज की संस्कृति करती है। संस्कृति यह निश्चित करती है कि पारिविारिक और समाजिक जीवन में स्त्रियों और पुरूषों का महत्व कितना है और उनके क्या–क्या कार्य हैं। ये महत्व और कार्य की यह निश्चित करते हैं कि समाज में स्त्रियों का स्थान पुरूषों के ऊपर, बराबर या नीचे होगा।

महिला सशक्तीकरण की पहल सर्वप्रथम 1985 में नैरोबी में संपन्न अंतरराष्ट्रीय महिला सम्मेलन में की गई थी। इसके बाद विश्व के सभी भागों में इसने एक आंदोलन का रूप ले लिया। महिला सशक्तीकरण का सामान्य अर्थ है – महिला को शक्ति संपन्न बनाना। परंतु व्यापकता में इसका अभिप्राय सत्ता–प्रतिष्ठानों एवं जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं की साझेदारी से है। निर्णय लेने की क्षमता सशक्तीकरण का एक बड़ा मानक कहा जा सकता है। इस प्रकार महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं को पुरूषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एंव आर्थिक क्षेत्रों में निर्णय लेने का स्वायत्तता से है। भारत में केंन्द्र एवं राज्य सरकारों के विभिन्न प्रशासनिक, वैधानिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कार्यक्रमों और योजनाओं के साथ भारतीय पंचायती राज्य व्यवस्था ने ग्रामीण महिला सशक्तीकरण में उल्लेखनीय योगदान किया है। 73वें संविधान संशोधन के बाद ग्रामीण महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। इसमें कोई संदेह नहीं कि पंचायती राज ने महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया है किंतु सशक्तीकरण की मात्रा क्षेत्र एवं परिस्थितियों के अनुसार भिन्न रही है। जिन पंचायती राज संस्थाओं में महिला प्रतिनिधि स्वयं पंचायत के मामलों को देखती है, निर्णय प्रक्रिया में पूर्ण सक्रियता से भाग लेती है और समुदाय के विकास कार्यक्रमों को बाहरी एजेंसियों से सक्रियता से करवा पाती हैं, तो कहा जा सकता है कि उन महिला प्रतिनिधियों का पूर्ण सशक्तीकरण हुआ है। दूसरी ओर, अगर महिला प्रतिनिधि अपने घर से स्वतंत्र रूप से बाहर नहीं आती, घूंघट नहीं हटा पाती और अपने पति या संबंधी के कहने पर ही दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करती हैं, तो कहा जा सकता है कि उन महिला प्रतिनिधियों का सशक्तीकरण नहीं हुआ है। भारत में पंचायती राज संस्थाओं में अभी भी ये दोनों ही स्थितियां देखने को मिलती है। इस प्रकार सशक्तीकरण का परिणाम विभिन्न स्थानों एवं परिस्थितियों में भिन्न रहा है।

"बीसवीं शताब्दी में भारत में स्त्रियों की स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। महिलाओं के लिए अब कोई क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जहां उनकी पहुंच न हो। भारत में महिला राष्ट्रपति (श्रीमती प्रतिभा पाटिल) विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री, लोकसभा एवं राज्य सभा की अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राज्यपाल, राजदूत, न्यायाधीश, डीन इत्यादि पदों पर भी रहीं है।"

राजनीतिक प्रक्रिया और राजनीतिक संस्थाओं में महिला की भागीदारी से शासन की गुणवत्ता में भी सुधार आया है। इनकी भागीदारी नागरिक समाज के उन्नयन, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, पर्यावरण की सुरक्षा, आर्थिक तथा जीविका से जुड़े मुद्दों में ज्यादा है क्योंकि इनका प्रत्यक्ष संबंध महिलाओं से है और ये महिला सशक्तीकरण के सशक्त माध्यम है। पंचायती राज के माध्यम से हुए महिला सशक्तीकरण से ग्रामीण महिलाऐं अपने अधिकारों के प्रति सेचत हुई हैं। उनके अन्याय और शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने की हिम्मत बढ़ी है। उनके व्यक्तित्व में भी परिवर्तन आया है। उनके आत्मविश्वास एवं जोश बढ़ा है। रचनात्मक कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी बढ़ी है।

बीसवीं शताब्दी में भारत में स्त्रियों की स्थिति में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ। महिलाओं के लिए अब कोई क्षेत्र ऐसा नहीं रहा जहां उनकी पहुंच न हो। भारत में महिला राष्ट्रपति (श्रीमती प्रतिभा पाटिल) विभिन्न राज्यों की मुख्यमंत्री, लोकसभा एवं राज्य सभा की अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, राज्यपाल, राजदूत, न्यायाधीश, डीन इत्यादि पदों पर भी रहीं है। भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों या महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है। राजनीतिक के क्षेत्र में लंबे समय से पुरूषों का वर्चस्व कायम रहा है। **गांधीजी ने कहा है कि ''स्त्रियों के साथ अपने व्यवहार और बर्ताव में पुरूषों ने इस सत्य को पूरी तरह से पहचाना नहीं है। स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरूषों ने अपने को उसका स्वामी माना है।''**

गांधीजी ने भी महसूस किया और कहा कि मैं स्त्री–पुरूष की समानता में विश्वास रखता हूँ इसलिए स्त्रियों के लिए मैं उन्हीं अधिकारों की कल्पना कर सकता हूँ जो पुरूषों को प्राप्त है। आज यदि समाज महिलाओं की समाजिक समानता के हक की बात सुनने को तैयार हुआ है तो यह महिलाओं के पक्ष में उभरती आवाज से आई नारी चेतना का परिणाम है।

भारत ऐसा पहला देश है, जिसने कृषि में महिलाओं की भूमिका को स्वीकारते हुए काफी पहले 1996 में ही भुवनेश्वर में राष्ट्रीय महिला कृषि अनुसंधान केंद्र (एनआरसीडब्ल्यूए) की स्थापना की थी। भुवनेश्वर स्थित यह केन्द्र कृषि प्रणालियों में महिलाओं के प्रभाव के पहचान के तौर–तरीकों और विभिन्न उत्पादन प्रणालियों के अंतर्गत विशेष रूप से महिलाओं के काम की तकनीक के विकास में लगा हुआ है। इन सबके अतिरिक्त निर्णय लेने की क्षमताओं के विकास के साथ–साथ परिवारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में ज्ञानवर्धन हेतु भी स्वसहायता समूह की भूमिका भी केन्द्र के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

> **"स्त्रियों के साथ अपने व्यवहार और बर्ताव में पुरूषों ने इस सत्य को पूरी तरह से पहचाना नहीं है। स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरूषों ने अपने को उसका स्वामी माना है।"**

महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु अपनाई गई रणनीतियों में ज्ञान के प्रसार हेतु तकनीकी किट और मीडिया के विभिन्न साधनों के उपयोग की रणनीति, सॉफ्टवेयार का विकास, प्रेरक कार्यक्रमों का आयोजन, जनसंचार साधनों के माध्यम से लोगों तक पहुँचने के कार्यक्रमों का आयोजन, प्रत्येक एआईसीआरपी केन्द्रों द्वारा एक–एक गाँव को गोद लेना और सामाजिक रूप से न्यायसंगत, आर्थिक रूप से व्यवहारिक एवं सक्षम तथा पार्यावरण की दृष्टि से ग्रामीण महिलाओं के सशक्तीकरण हेतु समर्थ, जन केन्द्रित, आत्मनिर्भर और संपोषणीय विकास के लिए सहभागीय ग्रामीण मूल्यांकन तकनीकों का उपयोग सम्मिलित है।

महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र मे केरल ने अपना पहला स्थान बनाए रखा है। उसके बाद तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल ने सभी तीनों कालखंडों में अपनी मध्यम स्थिति (8वीं) बनाए रखी है। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे निम्न स्थान वाले राज्यों के क्रम में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। परन्तु अन्य राज्यों में महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में कुछ बदलाव देखे गए हैं। महिला सशक्तीकरण के मामले में कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात की सापेक्षिक स्थिति तीसरे, पांचवे और सांतवें स्थान पर रही। यह स्थिति 1996–2000 और 2001–2007 के दौरान की है। आंध्र प्रदेश 2001–2007 में चौथे स्थान पर रहा और उसमें लगातार सुधार हो राह है। असम, पंजाब और हरियाणा की सापेक्षिक स्थिति में 2001–2007 के दौरान गिरावट दर्ज की गई है, जबकि ओड़िशा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में पूर्व के वर्षो की तुलना में आंशिक सुधार आया। राज्य महिला सशक्तीकरण सूचकांक से पता चलता है कि कर्नाटक, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पंजाब और गुजरात जैसे राज्यों की महिलाएं बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान की महिलाओं की अपेक्षा आधिक सशक्त और अधिकार संपन्न है।

महिलाओं की स्थिति की विवेचना करने के लिए तत्कालीन सरकार ने 22 सितंबर 1971 को एक समिति का गठन किया। 'टुवार्ड्स इक्वालिटी' शीर्षक से 1974 में प्रकाशित इस समिति की रिपोर्ट में कहा गया था कि ''संस्थागत तौर पर सबसे बड़ी अल्पसंख्यक होने के बावजूद राजनीति पर महिलाओं का असर नाममात्र है।'' इस संबंध में समिति ने सुझाव दिया था कि इसका उपाय यही है कि हर राजनीतिक दल महिला उम्मीदवारों का एक कोटा निर्धारित करें और फौरी उपाय के तौर पर समिति ने नगर परिषदों और पंचायतों में महिला के लिए सीटें आरक्षित करने के लिए संविधान में संशोधन के माध्यम से ऐसा किया भी। पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 33प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान महिला सशक्तीकरण तथा निर्णय प्रकिया में उनकी सहभागिता में वृद्धि की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था। ❑

❍ यू.जी.सी. पोस्ट डॉक्टरल फेलो, स्नातकोत्तर समाजशास्त्र विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना।

An Overview

Antioxidants & Free Radicals

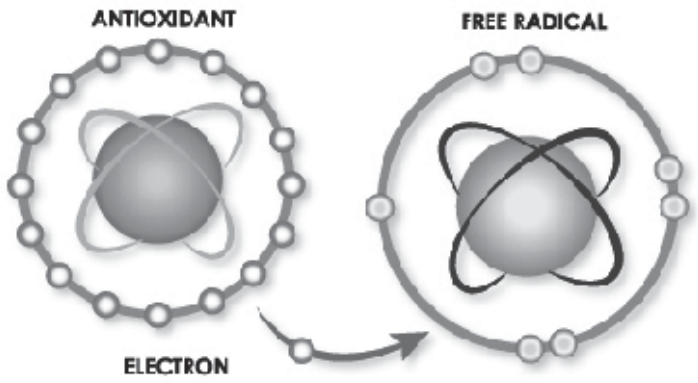

Antioxidants are intimately involved in the prevention of cellular damage - the common pathway for cancer, aging, and a variety of diseases. The scientific community has begun to unveil some of the mysteries surrounding this topic, and the media has begun whetting our thirst for knowledge.

Navi Ranjan

In recent years, there is a tremendous interest in the possible role of nutrition in prevention of disease. In this context, antioxidants especially derived from natural sources such as Indian medicinal plants and herbal drugs derived from them require special attention. Antioxidants neutralize the toxic and 'volatile' free radicals. Antioxidants have many potential applications, especially in relation to human health, both in terms of prevention of disease and therapy.

Antioxidants are intimately involved in the prevention of cellular damage - the common pathway for cancer, aging, and a variety of diseases. The scientific community has begun to unveil some of the mysteries surrounding this topic, and the media has begun whetting our thirst for knowledge. Athletes have a keen interest because of health concerns and the prospect of enhanced performance and/or recovery from exercise.

IT'S THE RADICALS

Free radicals are atoms or groups of atoms with an odd (unpaired) number of electrons and can be formed when oxygen interacts with certain molecules. Once formed these highly reactive radicals can start a chain reaction, like dominoes. Their chief danger comes from the damage they can do when they react with important cellular components such as DNA, or the cell membrane. Cells may function poorly or die if this occurs. To prevent free radical damage the body has a defence system of *antioxidants.*

Antioxidants are molecules which can safely interact with free radicals and terminate the chain reaction before vital molecules are damaged. Although there are several enzyme systems within the body that scavenge free radicals, the principle micronutrient (vitamin) antioxidants are vitamin E, beta-carotene, and vitamin C. Additionally, selenium, a trace metal that is required for proper function of one of the body's antioxidant enzyme systems, is sometimes included in this category. The body cannot manufacture these micronutrients so they must be supplied in the diet.

Vitamin E: d-alpha tocopherol. A fat soluble vitamin present in nuts, seeds, vegetable and fish oils, whole grains (esp. wheat germ), fortified cereals, and apricots. Current recommended daily allowance (RDA) is 15 IU per day for men and 12 IU per day for women.

Vitamin C: Ascorbic acid is a water soluble vitamin present in citrus fruits and juices, green peppers, cabbage, spinach, broccoli, kale, cantaloupe, kiwi, and strawberries. The RDA is 60 mg per day. Intake above 2000 mg may be associated with adverse side effects in some individuals.

Beta-carotene is a precursor to vitamin A (retinol) and is present in liver, egg yolk, milk, butter, spinach, carrots, squash, broccoli, yams, tomato, cantaloupe, peaches, and grains. Because beta-carotene is converted to vitamin A by the body there is no set requirement. Instead the RDA is expressed as retinol equivalents (RE), to clarify the relationship. (NOTE: Vitamin A has no antioxidant properties and can be quite toxic when taken in excess.)

PREVENTING CANCER AND HEART DISEASE - DO ANTIOXIDANTS HELP?

Epidemiologic observations show lower cancer rates in people whose diets are rich in fruits and vegetables. This has lead to the theory that these diets contain substances, possibly antioxidants, which protect against the development of cancer. There is currently intense scientific investigation into this topic. Thus far, none of the large, well designed studies have shown that dietary supplementation with extra antioxidants reduces the risk of developing cancer. In fact one study demonstrated an increased risk of lung cancer in male smokers who took antioxidants vs. male smoker who did not supplement. Whether this effect was from the antioxidants is unknown but it does raise the issue that antioxidants may be harmful under certain conditions.

Antioxidants are also thought to have a role in slowing the aging process and preventing heart disease and strokes, but the data is still inconclusive. Therefore from a public health perspective it is premature to make recommendations regarding antioxidant supplements and disease prevention. New data from ongoing studies will be available in the next few years and will shed more light on this constantly evolving area. Perhaps the best advice, which comes from several authorities in cancer prevention, is to eat 5 servings of fruit or vegetables per day.

"Antioxidants are also thought to have a role in slowing the aging process and preventing heart disease and strokes, but the data is still inconclusive. Therefore from a public health perspective it is premature to make recommendations regarding antioxidant supplements and disease prevention."

EXERCISE AND OXIDATIVE DAMAGE

Endurance exercise can increase oxygen utilization from 10 to 20 times over the resting state. This greatly increases the generation of free radicals, prompting concern about enhanced damage to muscles and other tissues. The question that arises is, how effectively can athletes defend against the increased free radicals resulting from exercise? Do athletes need to take extra antioxidants?

Because it is not possible to directly measure free radicals in the body, scientists have approached this question by measuring the by-products that result from free radical reactions. If the generation of free radicals exceeds the antioxidant defenses then one would expect to see more of these by-products. These measurements have been performed in athletes under a variety of conditions.

Several interesting concepts have emerged from these types of experimental studies. Regular physical exercise enhances the antioxidant defence system and protects against exercise induced free radical damage. This is an important finding because it shows how smart the body is about adapting to the demands of exercise. These changes occur slowly over time and appear to parallel other adaptations to exercise.

On the other hand, intense exercise in untrained individuals overwhelms defences resulting in increased free radical damage. Thus, the "weekend warrior" who is predominantly sedentary during the week but engages in vigorous bouts of exercise during the weekend may be doing more harm than good. To this end there are many factors which may determine whether exercise induced free radical damage occurs, including degree of conditioning of the athlete, intensity of exercise, and diet.

CAN ANTIOXIDANT SUPPLEMENTS PREVENT EXERCISE INDUCED DAMAGE OR ENHANCE RECOVERY FROM EXERCISE?

Although it is well known that vitamin deficiencies can create difficulties in training and recovery, the role of antioxidant supplementation in a well nourished athlete is controversial. The experimental studies are often

conflicting and conclusions are difficult to reach. Nevertheless, most of the data suggest that increased intake of vitamin E is protective against exercise induced oxidative damage. It is hypothesized that vitamin E is also involved in the recovery process following exercise. Currently, the amount of vitamin E needed to produce these effects is unknown. The diet may supply enough vitamin E in most athletes, but some may require supplementation. There is no firm data to support the use of increased amounts of the other antioxidants.

PERFORMANCE

In general, antioxidant supplements have not been shown to be useful as performance enhancers. The one exception to this is vitamin E which has been shown to be useful in athletes exercising at high altitudes. A placebo controlled study done on mountaineers demonstrated less free radical damage and decline in anaerobic threshold in those athletes supplemented with vitamin E. Although difficult to generalize, this finding suggests that supplementation with vitamin E might be beneficial in those tri athletes who are adapting to higher elevations.

HOW MUCH IS ENOUGH?

Although there is little doubt that antioxidants are a necessary component for good health, no one knows if supplements should be taken and, if so, how much. Antioxidants supplements were once thought to be harmless but increasingly we are becoming aware of interactions and potential toxicity. It is interesting to note that, in the normal concentrations found in the body, vitamin C and beta-carotene are antioxidants; but at higher concentrations they are pro-oxidants and, thus, harmful. Also, very little is known about the long term consequences of mega doses of antioxidants. The body's finely tuned mechanisms are carefully balanced to withstand a variety of insults. Taking chemicals without a complete understanding of all of their effects may disrupt this balance.

RECOMMENDATIONS

- Follow a balanced training program that emphasizes regular exercise and eat 5 servings of fruit or vegetables per day. This will ensure that you are developing your inherent antioxidant systems and that your diet is providing the necessary components.
- Weekend warriors should strongly consider a more balanced approach to exercise. Failing that, consider supplementation.
- For extremely demanding races (such as an ultradistance event), or when adapting to high altitude, consider taking a vitamin E supplement (100 to 200 IU, approximately 10 times the RDA) per day for several weeks up to and following the race.
- Do not oversupplement.

"Antioxidants supplements were once thought to be harmless but increasingly we are becoming aware of interactions and potential toxicity. It is interesting to note that, in the normal concentrations found in the body, vitamin C and beta-carotene are antioxidants; but at higher concentrations they are pro-oxidants and, thus, harmful."

CONCLUSION

Current life style is one of the major causes in the over production of free radicals and reactive oxygen species and decreasing physiological antioxidant capacity. Food provides not only nutrients essential for life but also other bioactive compounds for health promotion and disease prevention. Epidemiological studies have consistently shown that regular consumption of plant foods is associated with reduced risk in developing chronic degenerative diseases and biological ageing. Phytochemicals are the bioactive non nutrient compounds present in plant foods which have been suggested to be responsible for their bioactivity linked to the reduced risk of major chronic diseases. It has indeed been estimated that a healthy diet could prevent approximately 30% of all cancers. So far, published data from other parts of the world and India account only for a minor fraction of total polyphenols and Antioxidant activity of plant foods. Therefore it is suggested to have food composition tables on antioxidant activity and polyphenolic content of commonly consumed plant foods. ❑

❍ Research Fellow (UGC), Deptt. of Botany, A.N.college, Patna

समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर

(1924–1988)

सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप

कर्पूरी ठाकुर ने अपने सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप से बिहार की धरा को तृप्त किया एवं धन्य किया। इस महान विभूति के व्यक्तित्व के चलते ही इन्हें जननायक की उपाधि दी गयी। ये सिद्धांत के पुजारी एवं कमजोरों का रक्षक एवं जननेता थे।

राजेन्द्र कुमार

भारतीय समाज एवं राजनीति क्षितिज पर सर्वाधिक दीप्यमान सितारे एवं सिसकते समाज की सुलगती चिनगारी के रूप में बिहार की धरती पर 1924 ई0 में कर्पूरी ठाकुर का आगमन हुआ। इन्होंने भारतीय राजनीति में खासकर सामाजिक न्याय की स्थापना की। राजनीति ने एक सरल किन्तु गंभीर व्यक्तित्व की क्षमता को दीप्त किया।

कर्पूरी ठाकुर ने अपने सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप से बिहार की धरा को तृप्त किया एवं धन्य किया। इस महान विभूति के व्यक्तित्व के चलते ही इन्हें जननायक की उपाधि दी गयी। ये सिद्धांत के पुजारी एवं कमजोरों का रक्षक एवं जननेता थे। ''कर्पूरी ठाकुर का सारा जीवन संघर्षमय रहा, क्योंकि दलितों, पिछड़ों एवं शोषित समाज की कुंठित भावनाओं को बिहार ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत के भौगोलिक मानचित्र पर लानेवाला वह अकेला वयक्ति था, जिन्होंने अपनी आवाज देकर गरीब, मजदूर, शोषित किसानों को अपने–अपने अधिकार के लिए बोलना सिखाया।''

कर्पूरी ठाकुर एक महान सामाजिक सुधारक थे। हम पाते हैं कि भारतवर्ष के इतिहास में समाजवादियों में डॉ0 राम मनोहर लोहिया, लोकनायक जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव और मधु लिमये से लेकर कर्पूरी ठाकुर तक की एक लम्बी परम्परा रही है, इन्होंने भारतीय समाज के उत्थान के लिए अनेक कार्य किया, जिसका प्रभाव अभी भी भारतीय समाज में देखने को मिलता है। उन्होंने बाबा साहब भीमराव अम्बेदकर के सिद्धांतों, शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो की वाणी को एवं महात्मा ज्योति फूले के आदर्शों को निम्न वर्गों के दिलों में जगाया। इसीलिए समाजवादी आन्दोलन की जहाँ कहीं भी चर्चा होती है, वहाँ समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर का नाम आदर एवं श्रद्धा से लिया जाता है।

समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर का जन्म उस समय हुआ, जिस समय पूरा भारतवर्ष अंग्रेजों की हुकुमत से त्रस्त था। जमींदारी प्रथा के चलते समजा में धार्मिक कट्टरता एवं जातीयता की भावना बहुत जोरों पर थी। चारों तरफ समाज में छुआछूत एवं रूढ़िवादी व्यवस्था का जहर फैला हुआ था। वर्ण–व्यवस्था के नाम पर तथाकथित अगड़ी जातियाँ सत्ता, सम्पत्ति, सम्मान, शिक्षा और सुविधा पर कुण्डली मार बैठी थी, वहीं बहुसंख्यक शूद्र जातियाँ एवं अछूत जातियाँ गोत्र, वर्ण, वर्ग और सामाजिक एवं धार्मिक संस्कृतिकरण के नाम पर हाशिए पर थी। उच्च वर्गों के द्वारा शुद्रों का मनोबल तोड़ दिया गया था। अंग्रेजों ने हिन्दुओं की इस छुआछूत के बीज को भारतीय समजा में डालकर ''फूट डालो और राज्य करो'' की फसल काट रहे थे। इस प्रकार भारतवर्ष के अछूत, अंग्रेज और सवर्ण हिन्दुओं के गुलाम थे। उनपर अंग्रेज और सवर्ण हिन्दू जमींदारों का जुल्म और अत्याचार जारी था। कर्पूरी ठाकुर चाहते थे कि समाज के सभी लोगों के बीच में पारस्परिक प्रेम और सद्भावना का वातावरण बना रहे। उनका विचार था कि समाज से जाति व्यवस्था दूर हो तथा वर्ण–व्यवस्था की बुराई भी दूर हो, छुआछूत का निवारण हो और महिलाएँ भी शिक्षित होकर पुरूषों के समान विभिन्न सुविधाओं को

प्राप्त करें। यहाँ की आम जनता अंग्रेजी शासन व्यवस्था से छुटकारा चाहती थी। भारतवर्ष में स्वतंत्रता की सुगबुगाहट लोगों के दिलों में पनप चुकी थी। ठीक इसी वक्त कर्पूरी ठाकुर ने आजादी की क्रांति में चिनगारी का काम किया।

समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर का स्वतंत्रता आन्दोलन में भी काफी योगदान रहा है। हम पाते हैं कि 1942 ई0 का भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने भाग लिया तथा आन्दोलन के विकास में सक्रिय भूमिका निभाई, जिसके चलते इन्हें जेल भी जाना पड़ा। कुछ महीने जेल में रहने के बाद 1945 ई0 में इन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से रिहा होने के बाद ये स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। ये सोसलिस्ट पार्टी के विकास के लिए कार्य करते रहे। आन्दोलन के दरम्यान इन्हें कई बार मार भी खानी पड़ी। लेकिन आन्दोलन को आगे बढ़ाते रहे। कर्पूरी ठाकुर के कार्यकलाप के बारे में बतलाते हुए बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल पी0 बैंकट सुबैया ने लिखा है कि – ''सन् 1942 ई0 में राष्ट्रीय आन्दोलन में एक कर्मठ योद्धा के रूप मं कर्पूरी ठाकुर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।'' इनके राजनीतिक प्रतिद्वन्दी एवं उनपर घात करने वाले राजनीतिज्ञ डॉ0 शिवचन्द्र झा तत्कालीन अध्यक्ष, बिहार विधान सभा ने भी उनकी प्रशंसा में लिखा है कि – ''श्री कर्पूरी ठाकुर स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, समाजवादी आन्दोलन के अग्रणी, कुशल प्रशासक तथा सजग विरोधी दल के नेता के रूप में बिहार एवं देश की सेवा करते रहे।''

आधुनिक भारतीय समाज में विभिन्न तरह की बुराईयाँ समा गयी थीं। जाति–पाति और छुआछूत की भावना ने सामाजिक एकता को समाप्त कर रही थी। समाज में उच्चतर जातियों के लोग निम्नतर जातियों के लोगों को तरस्कारपूर्ण दृष्टि से देखते थे। अछूत प्रथा इतने वीभत्स रूप में प्रचलित थे कि अनेक स्थानों पर अछूत उन रास्तों पर भी नहीं चल सकते थे, जिन रास्तों पर सवर्ण वर्ग के लोग चलते थे। अछूत न तो मंदिर में प्रवेश कर सकते थे और न सार्वजनिक कुओं और तालाबों का ही प्रयोग कर सकते थे। अछूत वर्ग के लोग जीवन की अनेक सुविधाओं से वंचित थे, जिससे सामाजिक व्यवस्था में गिरावट आ रही थी। इसके अतिरिक्त समाज में दहेज प्रथा अभिशाप के रूप में प्रचलित हो रही थी। जिसके चलते इन्होंने नारी शिक्षा का समर्थन किया और जाति–पाति की कटु आलोचना की। कर्पूरी ठाकुर ने इस बात का खुलकर प्रचार किया कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं। इन्होंने समाज की कुत्सित प्रथा को लोकतंत्र विरोधी, अमानवीय और राष्ट्रविरोधी बतलाया। कर्पूरी ठाकुर ने समाज से जातिगत और वर्गगत भेदभावों को दूर करके बिहार ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतवर्ष में सामाजिक एकता कायम करने की चेष्टा की, जिससे भारत सामाजिक एकता कायम करके राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति कर सके। तभी गुलामी दूर होगा।

समाज सेवी कर्पूरी ठाकुर ने बिहार की महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया। इनके आगमन के काल में समाज पर्दा प्रथा, बाल–विवाह तथा दहेज प्रथा की बुराइयों से ग्रसित था। इन्होंने स्त्री शिक्षा पर जोर दिया। इनका मानना था कि जब तक समाज में लड़कियाँ शिक्षित नहीं होगी, तब तक सामाजिक बुराईयाँ दूर नहीं होगी। लड़कियों को पढ़ाई में इन्होंने विभिन्न तरह की सुविधाएँ प्रदान किया। इनका मानना था कि 16 वर्ष से लेकर 24 वर्ष तक की लड़कियों को विवाह कर देना चाहिए और 20 वर्ष से लेकर 30 वर्ष तक लड़कों को शादी कर देना चाहिए। शादी के लिए यह उम्र ठीक है। यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें लड़की एवं लड़का विवाह का अर्थ एंव स्वरूप को समझते हैं तथा अपने विवेक से जीवनसाथी को चुन सकते हैं। वे समाज में स्त्रियों को ऊँचा स्थान देते थे। कर्पूरी ठाकुर मनु भाष्य एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती के इस सूक्ति से सहमत थे कि – '' जहाँ नारियों की पूजा की जाती है, वहाँ महापुरूष उत्पन्न होते हैं, जहाँ उनका सम्मान नहीं किया जाता है, वहाँ समस्त कार्य निष्फल होते हैं।

हम पाते हैं कि 1945 ई0 के बाद काँग्रेस पार्टी एवं सोसलिस्ट

पार्टी का विधिवत विलय हो गया। बिहार में इसके सक्रिय सदस्यता का भार कर्पूरी ठाकुर ने लिया। बिहार राज्य में समाजवादी विचारधारा के संयोजन और गरीब, मजदूर, दलितों तथा शोषितों के हित के लिए जुझारू संघर्ष करने वाले नेता कर्पूरी ठाकुर इस कदर लिप्त हुए कि मृत्युपर्यन्त व्यक्तिगत जीवन से जुड़ न सके। सोसलिस्ट पार्टी के सक्रिय सदस्य होने के नाते जब जिलावार संगठन प्रारम्भ हुआ, तो सर्वप्रथम दरभंगा जिले के मंत्री के रूप में कर्पूरी ठाकुर को जिम्मेवारी सौंपी गयी। 1947 ई0 तक कर्पूरी ठाकुर सोसलिस्ट पार्टी के मंत्री बने रहे। इस अवधि में इन्होंने इलियास नगर और विक्रमपट्टी के जमींदारों पर बकाश्त आन्दोलन का नेतृत्व करते रहे और 50 बीघे जमीन को गरीबों में बँटवाकर उन्होंने अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया। सन् 1947 ई0 में कर्पूरी ठाकुर ने रामानन्द मिश्र के नेतृत्व में भारतीय किसान सभा की स्थापना की। जिसमें इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा, जिसके चलते अखिल भारतीय किसान पंचायत एक मजबूत संस्था बन गयी।

15 अगस्त 1947 ई0 को भारतवर्ष क्रान्तिकारियों के बलिदानों के फलस्वरूप स्वतंत्र हो गया था। शताब्दियों की दासता की बेड़ियाँ अब टूट चुकी थी। स्वतंत्रता आन्दोलन में थके–हारे नेता अब सत्ता पाने के लिए जोड़–तोड़ की राजनीति करने लगे थे। लेकिन समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर ने गरीबों, दलितों, पिछड़ों, शोषितों, उत्पीड़ितों और अन्य कमजोर वर्गों की लड़ाई आजाद भारत में लड़नी शुरू कर दी थी। अब कपूर्री ठाकुर सामाजिक न्याय की दिशा में अग्रसर होने लगे। उसने 1948 ई0 में सोसलिस्ट पार्टी से अलग एक स्वतंत्र पार्टी का गठन किया जिसका बागडोर अपने हाथ में रखा। हम जानते हैं कि कर्पूरी ठाकुर 1948 ई0 से लेकर 1953 ई0 तक सोसलिस्ट पार्टी के प्रान्तीय सचिव रहे और इस अवधि में गाँव–गाँव में घुमकर पार्टी की जड़ों को मजबूत करते रहे, साथ ही साथ समाजवादी सिद्धांतों को जन–जन तक पहुँचाते रहे। ''1948 ई0 में दरभंगा काँग्रेस सोसलिस्ट पार्टी के प्रदेशिक सम्मेलन में कर्पूरी ठाकुर जिला पार्टी के सचिव बनाये गये। जिला मंत्री के रूप इन्होंने जमींदारी प्रथा के अन्याय के विरूद्ध पंडित रामानन्द मिश्र के नेतृत्व में सम्पूर्ण जिला के गाँव–गाँव के किसानों को संगठित किया तथा वहाँ के जमींदारों के अन्याय के विरूद्ध सशक्त आन्दोलन खड़ा किया।''

“जिला मंत्री के रूप इन्होंने जमींदारी प्रथा के अन्याय के विरूद्ध पंडित रामानन्द मिश्र के नेतृत्व में सम्पूर्ण जिला के गाँव–गाँव के किसानों को संगठित किया तथा वहाँ के जमींदारों के अन्याय के विरूद्ध सशक्त आन्दोलन खड़ा किया।”

1952 ई0 में प्रथम विधानसभा के चुनाव में कर्पूरी ठाकुर ताजपुर विधानसभा क्षेत्र के लिए सोसलिस्ट पार्टी के टिकट पर चुनाव जीत गये। इसके पूर्व काँग्रेस और समाजवादियों के बीच मार्च, 1948 ई0 में नासिक अधिवेशन ही अंतिम मिलनस्थल था और समाजवादियों ने काँग्रेस से नाता तोड़ लिया और बाद में किसान–मजदूर प्रजा सोसलिस्ट पार्टी का गठन कर लिया गया। इस पार्टी का उद्देश्य महात्मा गाँधी के सिद्धांतों पर गाँधीवादी समाजवाद की स्थापना करना था। बाद में प्रजा सोसलिस्ट पाअर्ट का गठन हुआ। इस प्रकार कर्पूरी ठाकुर ने इस पार्टी के अपना सिद्धांत मार्क्सवादी और गाँधीवादी समाजवाद को अपनाया। ''एक अक्टूबर, 1952 ई0 में पी0एस0पी0 (प्रजा सोसलिस्ट पार्टी) की कार्यकारिणी की बैठक हुई, जिसमें कई कमिटियाँ बनायी गयी, जैसे– लेबर कमिटि, संसदीय कमिटि, यूथ कमिटि, महिला कमिटि, मुस्लिम पब्लिक रिलेसन कमिटि आदि। प्रत्येक कमिटि का संयोजक नियुक्त किया गया, जिसमें कर्पूरी ठाकुर को अहम भूमिका दी गयी।''

कर्पूरी ठाकुर में सामाजिक विषमता को दूर करने की उत्कृष्ट आकांक्षा थी। समाज में रहनेवाले सभी निम्नवर्गों को भी सभी तरह का अधिकार मिले, इसके लिए वे बराबर संघर्ष करते रहते थे। जब इन्होंने प्रथम बार किसान सभा का सदस्य बनकर प्रथम दिन विधानसभा में प्रवेश किया, तो मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह के अभिनन्दन में अपनी ओजस्वी भाषण से सभी सदस्यों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अपने लड़कर अंग्रेजों से आजादी प्राप्त कर ली है, हमारा यह भी सौभाग्य है कि स्वतंत्रता सेनानियों के अग्रणी नेता बाबू श्री कृष्ण सिंह भी आज आजाद भारत में बिहार प्रान्त के राज्य सिंहासन (मुख्यमंत्री) पद पर आरूढ़ हैं। हम उम्मीद करते हैं कि श्री कृष्ण बाबू राज्य का संचालन उसी प्रकार करेंगे, जिस प्रकार बादशाह नासिरुद्दीदन राज्य चलाता था और अपनी सारी प्रजा को एक समान पुत्रवत प्यार करता था।'' मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह ठाकुर जी के भाषण से काफी खुश हुए। उन्होंने अपने भाषण में जवाब देने के क्रम में कहा भी था– ''कर्पूरी ठाकुर के प्रथम भाषण ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया है। मैं आशा करता हूँ कि ठाकुर जी अपनी ओजस्वी भाषण रूपी सुगंध से बिहार विधानसभा को हमेशा सुगंधित करते रहेंगे।'' यह बातें कर्पूरी ठाकुर के व्यक्तित्व को उजागर करता है। वे व्यक्तिगत के धनी थे। उनका सादगी जीवन और उच्च विचार उनके व्यक्तित्व का पहचान था।

कर्पूरी ठाकुर ने डॉ0 राम मनोहर लोहिया, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव तथा मधु लिमये के सामाजिक उत्थान संबंधी समाजवादी विचारों से प्रभावित होकर समाजिक विषमता को दूर करना जरूरी समझा। इन्हें रामानन्द तिवारी एवं कपिलदेव सिंह का सहयोग प्राप्त हुआ। कर्पूरी ठाकुर ने सामाजिक सुधार के लिए सांस्कृतिक क्रांति ाक बिगुल फूँका, जिसका लक्ष्य था प्रजातांत्रिक समाजवादी भारत की स्थापना करना। कर्पूरी ठाकुर ने अपने मुख्यमंत्री काल में समजा में व्याप्त भंगी प्रथा को समाप्त किया। मेहतर जाति के लोग अब अपने माथे पर पैखाना

नहीं ढ़ोयेंगे, को कानून बनाकर समाप्त किया तथा अन्तरजातीय विवाह को प्रोत्साहन देकर छुआछूत को मिटाया। कुष्ठ रोगियों तथा अपाहिजों के लिए पुनर्वास की व्यवस्था की गयी। इन्होंने सामाजिक उद्धार के लिए सामाजिक न्याय की दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। उन्होंने समाज में दबे, कुचले, पिछड़े, शोषित, दलित, गरीब, मजदूर को सामाजिक बुराइयों से ऊपर उठाने के लिए आरक्षण नीति को लागू किया। इनका मानना था कि आरक्षण नीति को लागू कर निम्नवर्गों के छात्रों को आरक्षण का लाभ दिलाकर ही समाज का उद्धार किया जा सकता है। कर्पूरी ठाकुर ने सर्वथा न्यायोचित आरक्षण नीति को लागू करने के लिए मुंगेरीलाल कमिटि तथा काका कालेलकर कमिटि की अनुशंसाओं के अध्ययन के बाद अपनी सूझ–बूझ का परिचय देते हुए पिछड़ी जातियों के पिछड़ेपन के अनुपात में आरक्षण का प्रतिशत निर्धारित कर अपने न्यायपूर्ण होने को साबित कर दिया। 1978 ई0 में हरिजन–आदिवासियों के अतिरिक्त पिछड़ी जातियों एवं कमजोर वर्गों के लिए सरकारी नौकरियों में 26 प्रतिशत आरक्षण लागू किया। इसमें 12 प्रतिशत अत्यंत पिछड़ी जातियों के लिए 8 प्रतिशत पिछड़ी जातियों के लिए 3 प्रतिशत महिलाओ के लिए तथा 3 प्रतिशत आर्थिक रूप से पिछड़े उच्च वर्ग के लोगों के लिए नौकरियों में आरक्षण नीति को लागू किया। इस प्रकार समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर ने अपने मुख्यमंत्री काल में आनुपातिक पिछड़ेपन के लिए आनुपातिक आरक्षण नीति को लागू कर ''सामाजिक न्यायिक व्यवहारवादी'' होने का परिचय दिया। आरक्षण नीति के लागू होने से निम्नवर्ग एवं पिछड़े वर्ग के छात्रों को काफी लाभ मिला। अब वे अपने–अपने अधिकारों को समझने लगे तथा उच्च पदों को सुशोभित करने लगे, जिससे बिहार में सामाजिक व्यवस्था में सुधार हुआ।

कर्पूरी ठाकुर शिक्षाप्रेमी थे। उनका मानना था कि जब तक समजा के निम्न वर्ग के लोगों की शिक्षा के प्रति भावना नहीं जगेगी, तब तक समाज का विकास नहीं होगा। यही कारण है कि इन्होंने प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया। अंग्रेजी की जगह हिन्दी भ्ज्ञाषा को बढ़ावा दिया। गरीब छात्रों का मैट्रिक तक का स्कूल फीस माफ किया। मैट्रिक में बिना अंग्रेजी पास होने की मान्यता दी। कर्पूरी ठाकुर का नारा था– ''अंग्रेज यहाँ से चले गये, अब अंग्रेजी भाषा को भी जाना होगा। अंग्रेजी में अब कोई काम नहीं होगा, फिर देश गुलाम नहीं होगा।'' मैथली तथा भोजपुरी अकादमी की स्थापना करके दोनों भाषा को उन्नत किया। इन्होंने सामाजिक उत्कर्ष के लिए विभिन्न जगहों पर स्कूल एवं कॉलेज खोले। कर्पूरी ठाकुर ने सर्वप्रथम शाहपुर पटोरी जिला समस्तीपुर में आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय की स्थापना किया। उसके बाद भी इन्होंने डॉ0 राम मनोहर लोहिया स्मारक कॉलेज, मुफ्फरपुर, डॉ0 लोहिया, विशेश्वर दास कॉलेज, ताजपुर, सत्यनारायण मेहर अली राम बदल चरण कर्पूरी कॉलेज, समस्तीपुर तथा गोकुल कर्पूरी फूलेश्वरी कॉलेज, कर्पूरीग्राम (समस्तीपुर) आदि को खोला। इन्होंने बिहार के समाज को शैक्षणिक दृष्टिकोण से उन्नत करने के लिए ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। हरिजन–आदिवासी एवं अन्य पिछड़े वर्ग के छात्रों के लिए छात्रवृत्ति एवं अलग छुआछूत की व्यवस्था की गयी। महात्मा गाँधी के अनुसार समाज से जाति प्रथा तथा ऊँच–नीच छुआछूत को मिटाने का प्रयास किया। जिससे बिहार का सर्वांगीण विकास हुआ। इनकी मृत्यु 1988 ई0 में हृदय गति रूक जाने के कारण हुई। आज जो हम बिहार की सामाजिक स्थिति में सामाजिक समरसता एवं अन्य सुधार देखते हैं वह शुद्र जाति (नाई) जाति में जन्म लेने वाला समाजसेवी कर्पूरी ठाकुर के सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप का ही फल है।

कर्पूरी ठाकुर ने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में समाज में व्याप्त भंगी प्रथा को समाप्त किया। समाज में मेस्तर जाति के लोग अपने माथे पर पैखाना ढ़ोते थे, इस व्यवस्था को कर्पूरी ठाकुर ने कानून बनाकर समाप्त किया। सभी जगह दलित और निम्न वर्ग के गाँव में गाँधी सुलभ शौचालय की व्यवस्था की गयी। समाज में छुआछूत मिटाने के लिए इन्होंने अंतरजातीय विवाह को बढ़ावा दिया। नशाबंदी कानून लागू किया गया। शराब बेचने वाले एवं खरीदने वाले पर पाबंदी लगाया गया। कर्पूरी ठाकुर ने कुष्ट रोगियों तथा अपाहिजों के लिए पुनर्वास की व्यवस्था किया।

इस प्रकार समाज सेवी कर्पूरी ठाकुर ने महात्मा गाँधी के सामाजिक सुधार संबंधी विचारधारा से प्रभावित होकर अपने सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप के द्वारा सामाजिक प्रेम, सद्भावना, भाईचारा, आरक्षण की नीति को लागू करना, महिलाओं को शिक्षित करने के लिए हाई स्कूल तक फीस माफ करना, बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा से जोड़ने, समाज से जाति–पाँति की भावना, छूआछूत, ऊँच–नीच की भावना को मिटाने, दहेज प्रथा एवं विधवा प्रथा को दूर करने का प्रयास किया। इन्होंने अंतरजातीय विवाह को बढ़ावा दिया तथा बाल–विवाह पर रोक लगाया। इन्होंने विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक सुधार कार्य करके जीर्ण–शीर्ण समाज का बहिष्कार किया तथा उसे नया जीवन दिया। उनमें देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना को जगाया, जिससे बिहार राज्य एवं भारत देश का उत्थान हुआ। अपने सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप के चलते ही आज कर्पूरी ठाकुर मरकर भी अमर हैं।

संदर्भ सूची

1. कर्पूरी ठाकुर का संसदीय जीवन एक परिचय, खंड–एक, पृ0 सं0–1, पुस्तकालय एवं शोध संदर्भ शाखा, बिहार विधानसभा सचिवालय, पटना।
2. ''कर्पूरी ठाकुर अभिनंदन ग्रंथ'', पृ0सं0–3, सम्पादक आचार्य हबलदार त्रिपाठी सहृदय।
3. डॉ0 शिवचन्द्र झा, तत्कालीन अध्यक्ष, बिहार विधानसभा, पटना ने यह उक्ति लिपिबद्ध की है ''कर्पूरी ठाकुर अभिनंदन ग्रंथ'' में, पृ0सं0–4
4. डॉ0 धनपति पांडे ''द आर्य समाज एण्ड इंडियन नेशनलिज्म'' पृ0सं0–51
5. जननायक कर्पूरी ठाकुर का व्यक्तित्व और कृतित्व, मैथिली आकादमी, पटना, पृ0सं0–54–55।
6. P.S.P (पी0एस0पी0) के स्टेट एनुअल कॉन्फ्रेंस, मधुबनी का रिपोर्ट।
7. ''कर्पूरी ठाकुर का संसदीय जीवन'', डॉ0 रंजना कुमारी, राजकमल प्रकाशन, पटना, पृ0सं0–55।
8. जननायक कर्पूरी ठाकुर का व्यक्तित्व और कृतित्व, मैथिली अकादमी, पटना पृ0 सं0–65। ❑

❍ UGC-NET (Qualified) RGNF, PG Deptt of Sociology, A.N College, Patna

क्रीड़ा परिषद : एक प्रस्तुति

डा. अजय कुमार

महाविद्यालय में 2014–15 का क्रीड़ा वर्ष खेल गतिविधियों की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण रहा। इस खेल वर्ष में मगध विश्वविद्यालय बोध गया के अध्यक्ष छात्र कल्याण द्वारा अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता में एक नई खेल प्रतियोगिता वॉस्केट बॉल को जोड़ा गया। इस नवोदित खेल (वॉस्केट बॉल) के अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता की मेजवानी का दायित्व भी अनुग्रह नारायण कॉलेज को दिया गया। इस दो दिवसीय प्रतियोगिता नवम्बर 1914 को आयोजित की गई जिसमें अनुग्रह नारायण कॉलेज चैम्पियन घोषित हुआ। इसने बी.डी. कॉलेज को फाइनल में हराया।

मगध विश्वविद्यालय में बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता का खेल कैलेन्डर में अंकित नहीं रहने के बावजूद महाविद्यालय के खिलाड़ी इस खेल का अभ्यास प्रतिदिन करते थे। महाविद्यालय के क्रीड़ा मैदान में राष्ट्रीय मानक के अनुरूप बॉस्केट बॉल कोर्ट उपलब्ध है। खिलाड़ियों द्वारा निरंतर अभ्यास के कारण ही 2014 में रीलायंस इण्डिया द्वारा आयोजित बिहार राज्य बॉस्केट बॉल प्रतियोगिता का खिताब महाविद्यालय ने जीता। इस प्रतियोगिता में प्रदेश के अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों एवं महाविद्यालयों ने अपनी प्रतिभागिता दी थी। जिसमें आई.आई.टी. पटना, चाणक्य विधि महाविद्यालय पटना, लंगट सिंह कॉलेज मुजफ्फरपुर, महाराजा कॉलेज आरा तथा बी.डी. कॉलेज पटना प्रमुख थे।

मगध विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिता 2014–2015 के विभिन्न खेलों यथा क्रिकेट, बॉली बॉल, बॉल बैडमिंटन, बॉक्सिंग, खो–खो, कबड्डी तथा एयलेटिक्स के विभिन्न प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय द्वारा टीम भेजी गई। बॉल बैडमिंटन में विगत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय की टीम चैम्पियन घोषित हुई। कबड्डी एवं खो–खो में हम सेमीफानइल तक पहुँचे। एथलेटिक्स के तीन विधाओं उँची कूद लम्बी कूद एवं जैविलीन में हमारे खिलाड़ियों ने पदक हासिल किये। मुक्केबाजी में भी हमें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता 2014–15 में मगध विश्वविद्यालय के टीम के सदस्य के रूप में भी महाविद्यालय के खिलाड़ियों की भागीदारी रही। अंतर विश्वविद्यालय की बॉल बैडमिंटन टीम में महाविद्यालय के सात खिलाड़ी मगध विश्व विद्यालय टीम की हैसियत से अलगण्पा विश्वविद्यालय कोडईकनाल, चिन्नई गयी। इस टीम का कप्तान भी उत्तम कुमार अनुग्रह नारायण महाविद्यालय का ही छात्र था। इसी तरह मगध विश्वविद्यालय की बास्केट बॉल टीम के सदस्य के रूप में महाविद्यालय के कप्तान सहित आठ खिलाड़ी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता खेलों और सेमीफाइनल तक अपनी पहुँच

सुनिश्चित की।

महाविद्यालय का वी.ए. पार्ट–3 का छात्र रितेश कुमार (राजनीति विज्ञान प्रतिष्ठा, रौल –75) ने इण्डो–नेपाल थ्रो बॉल एशियन चैम्पियन शिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। यह प्रतियोगिता 4 एवं 5 अगस्त 2014 को आर्मी यूनिट पोखरण नेपाल में आयोजित की गई थी। महाविद्यालय के बारहवीं का छात्र अभिषेक कुमार दिनांक 7 अक्टूबर 2014 को वन एवं पर्यावरण विभाग द्वारा आयोजित स्थल फोटोग्राफी में प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता संजय गाँधी जैविक उद्यान में आयोजित की गई थी।

महाविद्यालय की वार्षिक खेल–कूद प्रतियोगिता फरवरी 7 एवं 8 2015 को आयोजित की गई थी जिसमें करीब 500 छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया। छात्रों के लिए 100, 200, 400, 800, 1500 एवं 5000 मीटर रेस आयोजित की गई थी, जबकि छात्राओं के लिय सिर्फ 100, 200, 400 एवं 800 मीटर की रेस। उँची कूद, लम्बी कूद, जैविलिन, शॉट पर एवं डिसकस प्रतियोगी छात्र एवं छात्राओं दोनों के लिया। प्रधानाचार्य द्वारा 8 फरवरी को पुरस्कार वितरण किया गया है। छात्रों में दीपक एवं छात्राओं में मीनू चैम्पियन घोषित हुई। ❑

❍ अध्यक्ष, क्रीड़ा परिषद्, ए.एन.कॉलेज, पटना

A REPORT ON NSS ACTIVITIES
2014-2015

सभी शक्ति तुममें विद्यमान है। तुम किसी भी चीज को कर सकते हो। विश्वास करो, कभी मत सोचो कि तुम कमजोर हो। उठो, जगो और तब तक मत रूको जब तक तुम्हारा लक्ष्य पूरा न हो जाये ।

– स्वामी विवेकानंद

डा.पूर्णिमा शेखर
डा.सुभाष प्रसाद सिंह

स्वामी विवेकानंद का नाम आते ही मन में श्रद्धा और स्फूर्ति दोनों का संचार होता है। श्रद्धा इसलिये, क्योंकि उन्होंने भारत के नैतिक एवं जीवन मूल्यों को विश्व के कोने–कोने तक पहुंचाया और स्फूर्ति इसलिये क्योंकि इन मूल्यों से जीवन को एक नई दिशा मिलती है।

Issues addressed

1. Sanitation
2. Opportunities for youth
3. Environmental issues in India
4. Gram Panchayat Governance
5. Malnutrition and gender inequality
6. Drug Abuse in India
7. Volunteer's role in Disaster Management
8. Stress management
9. Community participation and Social connectedness
10. Financial assistance for study and self employment
11. Government's support programme for rural India
12. Sex crime and Youth's role in its prevention
13. Volunteer's role in tackling societal challenges
14. Prospect for entrepreneurs in Bihar

FOCAL ACTIVITIES CONDUCTED

02.06.2014: *Involvement in Anugrah Jayanti Celebration*

15.08.2014: *Active Participation in Independence Day Celebration*

16.08.2014: *Survey and monitoring of Pension distribution in Patna district*

Survey and monitoring of Pension distribution in Patna district was assigned by the Deptt of Social Welfare, Govt of Bihar to NSS volunteers of A N College, Patna. 11 groups, each consisting of 2 active volunteers led by programme officer Dr Poornima Shekhar Singh and Dr Subhash Prasad Singh conducted the assigned work in most of the blocks (sample survey of max 3 Panchayat / ward in each block) of Patna district during 7th to 15th August 2014. The programme is being coordinated by A N Sinha Institute for Social Studies, Patna.

The following focal observations have been observed by the monitoring teams;

1. In most of the places, pension distribution was carried as per schedule.
2. In some of the places, place of distribution was shifted to somewhere else.
3. Distribution of pension was not carried as per schedule because of not getting fund from Bank on time in Madhua Machmilpur Panchayat under Paliganj Block. Even in Barunai Bathoi Panchat of Pandarak Block distribution of pension was not carried due to non-distribution of passbooks to pensioners.
4. Complaint of not getting pension on time in Barh Block / Nagar Parishad
5. Voice raised by pensioner to increase the amount of pension amount
6. Information concerning sanctioned number of Pensioners (male / female of General class, OBC, SC and ST) Yojnawise were not provided by the concerned BDO 's office. Only Fatua Block office cooperated in this regard.
7. In general sanctioned amount of the fund for miscellaneous pension schemes were not provided by the concerned staff engaged in distribution work.
8. Staff raised the issue of Security while bringing huge fund from Block to Panchayat.
9. Staff deputed for distribution of funds was not fully aware of new scheme in Karanja Panchayat of Noubatpur Block. Therefore, they were distributing funds for old scheme only.
10. Pension Account of Some aged persons of about 80-84 yrs were not yet opened (Example Sri Ram Sinhashan Prasad of Karanja Panchayat, Noubatpur Block). His application has not yet been entertained.

11 Mukhia Pati (Husband of Mukhia and his helpers were found taking alcohol on the distribution place. They were found asking bribe for payment of previous dues

and even for paying pansion of the current month in Ajwan Panchayat of Noubatpur Block.

12. There seems to have problems in pension distribution even in Belchi Block (specially in Belchi and Barah Panchayat) and in Masouri Block (specially Bhagwanganj and Nadaul Panchayat) mainly due to Mukhia.
13. A pensiones reported of fake thumb impression in his passbook. He was found requesting the authority for his pension amount in Punpun Panchayat of Punpun Block.
14. Many deserving candidates were found not included in the list.
15. People requested for special arrangement specially for Physically Challenged and Old persons. They face lots of problem in coming to the place of distribution to receive their pension.
16. Proper seating arrangement be made for pensioners at the place of distribution.
17. Pensioners complained of getting less amount whereas pension has been reported to be increased through Newspaper.
18. Pensioners in general requested the monitoring team (NSS volunteers) to visit all the time of pension distribution as they felt that working style of staff has been found healthy and friendly in the presence of mnitoring team.

Suggestions to coordinating Institute:

i. Proper awareness is required for pensioners.

ii. Trained staff be deputed for distribution of pension.

iii. Special arrangement be made for physically challenged and old persons to reach to the place of distribution.

iv. Proper seating arrangement be made for pensioners at the place of distribution.

v. Distribution of pension be avoided at Mukhia's residence.

vi. Proper action be taken against the person engaged in illigal means.

vii. Block office be instructed by concerned BDOs to provide information required.

vii. Mechanism be developed to inform pensioners for the date, place and amount of pension.

19.09.2014: Neem Plantation Drive Organized in the campus:

Plantation drive of NEEM Sapling was organized in the college premises by 50 NSS volunteers of A N College, Patna

in the forenoon of 21st September 2014 in the leadership of Program officers. The drive was witnessed by Professor Incharge of the college Prof Lalan Pd Singh. Prof Singh addressed the volunteers stating the enormous medicinal and environmental values of Neem plant and its constituents. All the volunteers adopted one plant with the sankalp of making its survival.

22.09.2014: *Capsule Course on Human Rights Attended by Volunteers:*

40 NSS volunteers of A N College participated in one day capsule course on Human Rights on 22.09.2014 at Patna Law College. This program was sponsored by Bihar Human Rights Commission, Patna in collaboration with Education Deptt, Govt of Bihar. Volunteers belonging to different Departments of UG and PG courses of the college got benefitted by the course attended.

11.10.2014: *Mass Cleanliness Programm Organized in College Campus*

एन0 एस0 एस0 इकाई के तत्वाधान में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रो0 ललन सिंह के आह्वान पर परिसर में सामूहिक सफाई अभियान की शुरूआत की गई, जिसमें महाविद्यालय परिवार के शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर प्रो0 सिंह ने महाविद्यालय परिवार के सदस्यों को आत्मबोध कराने का प्रयास किया कि हमारा दायित्व केवल अपने को एवं महाविद्यालय परिसर को हीं स्वच्छ रखना नहीं बल्कि पड़ोस एवं समाज को भी स्वच्छ रखना है। स्चच्छता जीवन का एक महत्वपूर्ण

आयाम है, जिसमे स्वस्थ्य भारत की समृद्धि निहित है। महाविद्यालय के उप–प्रधानाचार्य डॉ0 पूर्णिमा शेखर सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि स्वच्छता सौंदर्य–बोध को जन्म देती है और मनुष्य को सृजनात्मक बनाती है। जरूरत है अपनी सोच को बदलने की जिससे हमारे कर्म बदलेंगे। अच्छे कर्म अच्छे प्रतिफल को जन्म देती है। पर्यावरण अपने पूर्वजों से नहीं लिया है बल्कि अग्रिम पीढीं से उधार लिया है। इसे सुरक्षित रखना हम सबों का कर्तव्य है। कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ0 सुभाष प्रसाद सिंह ने भ साथी हाथ बढाना ....भ के नारे से उपस्थित वरीय शिक्षकों सेकार्यक्रम की शुरूआत परिसर स्थित बुद्ध पार्क से करने का अनुरोध किया।

इस अभियान में सभी विभागाध्यक्ष, शिक्षक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी, छात्रसंघ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव,एवं छात्र–छात्राओं ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

31.10.2014: *Run For Unity:*

RUN FOR UNITY organized by NSS wings of A N College, Patna on 31.10.2014 to commemorate 135th birth anniversary of Sardar Ballabh Bhai Patel. It indeed provided an opportunity to re-affirm the inherent strength and resilience of our nation to withstand the actual and potential threats to the unity, integrity and security of our nation. A pledge ceremony was organized just before the run to start. 82 persons (59 men and 23 women) were involved in the run. Run for Unity started from College campus and ended at High court terminal. The program was initiated and concluded with the collective singing of the National Anthem.

17.11.2014: *Blood Donation Camp organized:*

दिनांक 17/11/2014 को स्थानीय ए0 एन0 कॉलेज, पटना के राष्ट्रीय सेवा योजना एवं जयप्रभा मोडल ब्लड बैंक के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय परिसर में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डा0 ललन सिंह ने शिविर का उद्घाटन किया। एन. एस. एस के कार्यक्रम पदाधिकारी डा0 पूर्णिमा शेखर सिंह एवं डा0 सुभाष प्रसाद सिंह ने रक्तदान की महत्ता पर प्रकाश डाला। डा0 सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि रक्त एक जीवनदायिनी द्रव है। ऐसे द्रव का दान हीं वास्तव में महादान है। रक्तदान दाता के स्वास्थ्य के साथ–साथ स्वस्थ्य समाज एवं देश के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। ऐसी भावना स्वचरित्र के लिए सकारात्मकता की निशानी होती है। एन0एस0एस0 के स्वयंसेवी छात्र–छात्रओं ने महाविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों को रक्तदान के लिए उत्प्रेरित किया। उक्त शिविर में कुल 61 लोगों ने रक्तदान किया। अनेक उत्सुक छात्र–छात्राएँ रक्तदान से वंचित हो गये क्योंकि वे चिकित्सीय दृष्टिकोण से शारीरिक स्वास्थ्य के मद्देनजर रक्तदान करने हेतु उपयुक्त नहीं थे। विद्यार्थियों में इस शिविर में भागीदारी हेतु उत्सुकता देखी गयी।

इस अवसर पर डा0 कामेश कुमार, डा0 नमिता सिंह, डा0 रामावतार सिंह, डा0 रेखा कुमारी, डा0 शैलेश कुमार सिंह एवं डा0 संजय कुमार सिंह, नीरज, सूरज, मयंक आदि मौजूद थे।

19.11.2014: *Seminar on "Role of youth in improving the governance system" organized:* A Seminar on "Role of youth in improving the governance system" was organized by NSS wings of the college in collaboration with Bihar Election Watch, Association of Democratic Reforms, Bihar and the Deptt. of Political Science of the college in college campus. Dr Razi Ahmad, Director, Gandhi Sangrahalaya, Patna, Dr Vinay Kanth, Patna University and Sri Manikant Thakur, a reputed Journalist were the focal speakers on the day. Dr Razi Ahmad said, "Youth should be sensitive towards the issues of the country. They need to overcome the dirty politics played in the society. He also asked them to pay special attention towards villages saying that without developing them the state cannot develop. NSS Program Officer cum Vice Principal Dr Purnima Shekhar Singh welcomed the guests and Dr Subhash P Singh proposed vote of thanks.

01.12.2014: *AIDS Day celebrated:*

Bihar State AIDS Control Board in collaboration with NSS wings of the colleges of Patna organized Run Positive. Volunteers of AN College, Patna actively participated in the Run Positive from Patna Women's College to Kargil Chownk, Patna. A quiz was also organized on the day at Chanakya Law College in which students of 10 different colleges took part in. A N College stuents ranked 2nd while CNLU students ranked 1st in the quiz. Deepak Jaiswal, Rohit, Alpana and Namrata took part in the quiz.

03.12.2014: *World Disable Day celebrated:*

A seminar on "Making the society friendly for disabled people" was organized in joint collaboration of NSS, A N College and Samarth Udaan Ki India Foundation. Hon'ble Justice Sri S N Jha was the chief guest and City SP Sri Sandeep Lande was the guest of Honour on this occasion. Speakers highlighted the need of making society friendly for physically challenged people.

12.01.2015: *Youth Day celebrated*

The birth day of Modern Religious Leader and Youth Icon of India 'Swami Vivekanand was celebrated at A N College Patna. A Speech competition on the topic "Indian Youth and Cleanliness Campaign" was organized by NSS wings of the college in the leadership of Programme Officer Dr Poornima Shekhar Singh and Dr Subhash Prasad Singh. 19 out of 87 students participated in the speech competition. They were judged by Dr Badri Narayan Singh, Dr K K Singh, Dr Rekha and Dr Arun Kumar Singh on the basis of their presentation, content and impact. Raju, Ashish, Niraj, Ravish, Abhisek, Faisal, Mehtab, Aman, Durga, Abhijit, Shravani, Kriti, Aakash, Vikrant, Ranjan, Rahul, Aashish II, Deepak Jaiswal and Neha expressed their views on the roles and responsibilities of today's youth with special focus on cleanliness campaign to make the society and the country as a whole clean. Today's youth seems to be directionless. They apply nano-mentality for the sake of gaining their own benefits. There is lack of self confidence and positive attitude said Deepak Kumar Jaiswal who won First prize. It is believed that cleanliness is next to godliness but it seems as if it is just a lip service, said an NSS volunteer Durga Kumari who stood second in the competition. There is lack of Role Model in our society. Our youth must take a positive lead for positive growth initiated by our country and on their own initiative. One needs to know the power within then only one can make a change. But those who are expected to make a change, they themselves are involved in dirty act, said Aashish who ranked 3rd in the competition. They need to peep through Swamiji's deeds whichare still relevant. Faisal received consolation prize who said that

तकदीर बदल सकती है, दुनिया बदल सकती है
गौर से जानो अपनी युवा शक्ति को,
तो हर कुरीतियाँ बदल सकती है।

Deepak conducted the proceedings and Durga proposed vote of thanks.

13.01.2015: *Training program on preservation and nutrition of Vegetables and Fruits organized:*

A week training program on preservation and nutrition of Vegetables and Fruits starting from 7th January organized by NSS in close in association with Mahila Adhar, was concluded. Participating students (Boys and Girls) enthusiastically took part in training program. They learnt how to make delicious and nutritious food from domestic items available at home. They also learnt how to preserve the food items. Dr Geeta Jain of Adhar Mahila with her team extended training program with easily and cheaply available things at home. A competition was organized among the trainees on the concluding day. Sunita Kumari Sadhna ranked 1st with her vegetable items prepared with cauliflowers' leaves, Ravi Ranjan stood 2nd with his laddoo of Methi, Amrita Singh took the3rd position with her nutritious ladoos whereas Anita, Chandra, Rakhi and Sandhya got consolation prizes with their cooked items. Altogether 52 students (32 Girls & 20 Boys) participated in the training and competition as well. All the participants received certificates authenticated by Nutrition Board, Govt of India.

22.03.2015 - 23.03.2015: *Blood Donation Camp organized during Bihar Divas*

Blood Donation Camp was organized by NSS wings in collaboration with Jai Prabha Hospital, PMCH and IGMS respectively on 22nd, 23rd and 24th March 2015 in Gandhi Maidan during Bihar Divas. 25 volunteers (!5 boys and 10 girls) actively participated in the camp for all the three days.

Regular activities are on. A week Special camp is proposed to be organized in adopted slum in the month of July 2015.

❑

World Diabetes Day

AWARENESS CAMPAIGN

Every 5 seconds 1 person develops diabetes, after every 10 seconds one person dies of diabetes and after each 30 seconds a limb is lost due to diabetes. Diabetes is on the raise in India because of cultural calamity in India since 20 years.

✍ Dr. Rekha Kumari

On the eve of International Diabetes day, which is on 14th of November, we had organized an awareness program in our College. The International Diabetes Federation and the World Health Organization in response to the alarming rise of diabetes around the world introduced global awareness campaign in 1991. Each year on 14th of November global awareness campaign regarding diabetes is held worldwide. The day itself marks the birthday of Frederick Banting who, along with Charles Best, first conceived the idea, which led to the discovery of insulin in 1922.

25 crore people are diabetic around the world. Out of these 4 crores are Indian. It has been estimated that if it continues at this pace by 2025 every 5th Indian would be a Diabetic.

It is very perplexing to know that in every 5 seconds 1 person develops diabetes, after every 10 seconds one person dies of diabetes and after each 30 seconds a limb is lost due to diabetes. Diabetes is on the raise in India

because of cultural calamity in India since 20 years. In India around 10% of our 120 crore population has Diabetes for every diagnosed Diabetic there are around 4 to 5 undiagnosed Diabetic or pre-Diabetics. ❑

❍ Associate Professor, Deptt. of Zoology, A.N.college, Patna

मंडुकासन के फायदे

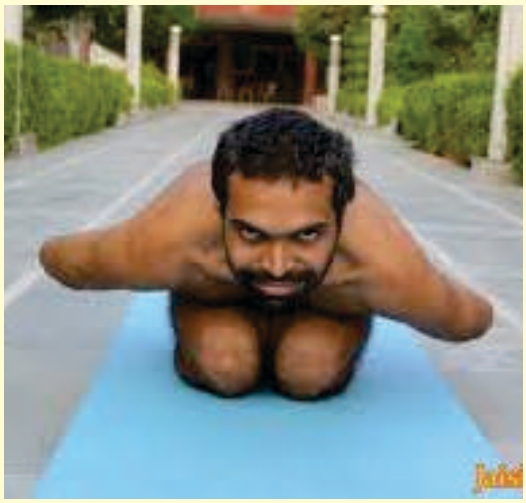

- पेट में बन रही गैस की समस्या दूर होती है।
- पेट संबंधी समस्याएँ और अन्य विकारों को आसानी से दूर किया जा सकता है।
- रीढ़ की हड्डी मजबूत होती है।
- इस आसन से आपके पंजों को बल मिलता है आपके उछलने की क्षमता बढ़ जाती है यानी आप कुछ देर तक आराम से बिना थके लगातार उछल सकते हैं।
- इस आसन को करने से आपको शरीर में हल्कापन महसूस होगा और आप बहुत ही रिलैक्स महसूस करेंगे।
- शरीर में बढ़ रही अतिरिक्त चर्बी को दूर करने के लिए मंडुकासन बहुत लाभकारी है।

अनुग्रह साहित्य परिषद् (हिन्दी विभाग)

वार्षिक प्रतिवेदन

ए.एन. कॉलेज का स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग पूरे वर्ष 'अनुग्रह साहित्य परिषद' के तत्वावधान में अनेक साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता रहा है। इस क्रम में महत्वपूर्ण विषयों पर सेमिनार का आयोजन, कविता पाठ, निबंध लेखन,वाद विवाद प्रतियोगिता आदि शामिल है। प्रस्तुत है एक संक्षिप्त रिपोर्ट।

अध्यक्ष एवं प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, अपने उच्च स्तरीय शैक्षणिक परिदृश्य के कारण पूरे प्रदेश में अपना विशेष महत्व रखता है। इस महाविद्यालय का ध्येय छात्रों को न सिर्फ पाठ्यक्रम की शिक्षा देना है, अपितु उनके व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास करना है। हमारा प्रयास है कि उन्हें एक आदर्श नागरिक के रूप में विकसित कर सकें। इस वर्ष महाविद्यालय के विभिन्न विभागों में अनेक शैक्षणिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन समय–समय पर होता रहा है।

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग द्वारा वर्ष भर अनके साहित्यिक सांस्कृतिक, आयोजन किए गए जिसमें विभाग के छात्रों ने अहम भूमिका निभाई। इन आयोजनों का उद्देश्य छात्र/छात्राओं में अभिव्यक्ति कौशल का विकास, भाषण कला, निबंध लेखन कला में निपुण बनाना तथा सृजनात्मक कार्य के लिए प्रेरित करना था।

14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर भाषण कला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, इसका विषय था– **'हिन्दी दिवस की प्रासंगिकता'**। महाविद्यालय के अन्य विभाग के छात्र/छात्राओं ने भी इसमें भाग लिया तथा निर्धारित विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इस अवसर पर कॉलेज के प्रधानाचार्य डा. ललन सिंह ने छात्रों का उत्साह वर्धन किया। हिन्दी विभाग के प्राध्यापकों के अतिरिक्त कई अन्य विभाग के विद्वान प्राध्यापकों ने छात्रों को 'भाषण कला' के हुनर से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. कलानाथ मिश्र ने कहा कि हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है अतः अभिव्यक्ति के क्रम में वक्ता का भाव भी ध्वनित होना चाहिए, अभिव्यक्ति की शैली चुस्त एवं स्पष्ट हो। छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा–ज्ञान के द्वारा ही छात्र अपने व्यक्तित्व में निखार ला सकते हैं। प्रधानाचार्य डॉ. ललन सिंह ने कहा हिन्दी विभाग समय–समय पर ऐसे आयोजन करते रहता है, जिससे महाविद्यालय के छात्र काफी कुछ सिखते तथा लाभान्वित होते हैं। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रख्यात साहित्यकार एवं पुस्ताकालय विज्ञान वेत्ता डॉ0 रामशोभित प्रसाद सिंह ने कहा कि भाषण तथ्यपरक होना चाहिए। विभाग के पूर्व अध्यक्ष डा. बद्री नारायण सिंह ने हिन्दी के विशिष्ट निबंधकारों का उद्धरण देते हुए निबंध लेखन कला व भाषण कला पर अपने महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए पुनः अनुग्रह साहित्य परिषद् तथा बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी पखवारा समापन समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष एवं बिहार के चर्चित साहित्यकार उपस्थित हुए। भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया तथा उन्हें प्रमाण–पत्र भी दिया गया।

23, सितम्बर, 2014 को **'दिनकर' जयंती** के अवसर पर हिन्दी विभाग के छात्रों द्वारा 'दिनकर' की कविता का पाठ किया गया। डॉ0 कलानाथ मिश्र ने दिनकर पर अपनी स्वरचित कविता 'किस विधि नमन करूँ मैं दिनकर' का सस्वर पाठ करते हुए सम्मेलन का शुभारंभ किया। डॉ. संजय सिंह ने दिनकर के ओज गुण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए 'कुरूक्षेत्र' के कई प्रसंगों की चर्चा की। कार्यक्रम का संचालन स्नातकोत्तर हिन्दी के छात्र अमित मिश्र ने किया। कार्यक्रम में शिवनंदन प्रसाद, सीमा कुमारी, चुनंन कुमारी,

अमरनाथ कुमार, लक्की राज, प्रीति यादव, मुन्ना कुमार, जुली कुमारी, शबीना खातून, रीना शर्मा, सन्नी, विकास मंडल, विकास कुमार, मृणाल आनंद, शत्रुध्न कुमार आदि ने दिनकर की कविता का पाठ किया।

15 अक्टूबर 2014 को हिन्दी विभाग ने **महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'** की पुण्य तिथि मनायी गयी। छात्र–छात्राओं ने निराला की काव्य सौष्ठव पर विचार–विमर्श किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. कलानाथ मिश्र ने कहा– ''कविवर सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी के युगांतकारी कवि हैं उनकी कविता में नवजागरण का संदेश है, प्रगतिशील चेतना है तथा राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। डॉ. बद्री नारायण सिंह ने कहा अन्याय एवं असमानता के प्रति विद्रोह की भावना निराला में सर्वत्र विद्यमान है।' कार्यक्रम को डॉ. प्रतिभा सहाय, डॉ कृष्णा सिंह, डॉ. चंद्रकांता, डॉ. सोना सिंह आदि प्राध्यापकों ने भी संबांधित किया। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे निरंतर निराला की कविताओं का चिंतन–मनन करते रहें जिससे उनकी लेखनी में भी ध्वन्यात्मकता और विशिष्टता आ सके। छात्र–छात्राओं में अमित मिश्र, सीमा कुमारी, शिवनंदन प्रसाद, रीना शर्मा, विकास मंडल, सबीना खातून, सन्नी कुमार आदि ने निराला की कविता का पाठ कर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित की।

विद्यार्थियों के ज्ञान–कोष में उत्तरोत्तर वृद्धि की दृष्टि से विभाग में समय–समय पर संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता रहा।

27, नवम्बर को **हरिवंश राय बच्चन की जयंती** मनाई गयी। जयंती के अवसर पर छात्र–छात्राओं तथा शिक्षक–शिक्षिकाओं ने बच्चन जी की कविता का पाठ कर उन्हें याद किया।

कविता समारोह का शुभारंभ हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्रध्यापक डॉ0 बद्रीनाथ नारायण सिंह ने की। सभा की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रधानाचाय्र डॉ0 ललन सिंह ने की। रसायनशास्त्र विभाग के विद्वान प्रोफेसर डॉ0 के.के. सिंह ने कहा– 'हिन्दी विभाग में जिस प्रकार की जागरूकता फैली है, उसके लिए हिन्दी विभाग के अध्यक्ष, शिक्षक और छात्र प्रशंसनीय हैं। हिन्दी के वर्तमान सत्र के विद्यार्थी अत्यंत सक्रिय और उर्जावान है। डॉ. संजय सिंह ने कहा– ''महाविद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रमों में बच्चन जी की कविता का अभाव दुर्भाग्यपूर्ण है।'' कविता समारोह में हिन्दी की डॉ. कृष्णा सिंह, समाज शास्त्र के डॉ. अजय कुमार झा, आदि गणमान्य शिक्षण उपस्थित थें।

कविगोष्ठी का संचालन स्नातकोत्तर हिन्दी के छात्र अमित मिश्र ने किया। इस अवसर पर सीमा कुमारी, शिवनंदन प्रसाद, अमरनाथ, प्रीति यादव, विकास मंडल, चुनंन कुमारी, मुन्ना कुमार, नेहा कुमारी, सेतु कुमार, शशिकांत, मनीष कुमार आदि ने हरिवंश राय 'बच्चन' की कविता का पाठ किया। सभा में हिन्दी विभाग के अन्य छात्र–छात्राएं भी उपस्थित थीं। इस गोष्ठी के माध्यम से शिक्षकों ने बच्चन जी के जीवन एवं साहित्य के अनेक पहलुओं से छात्रों को अवगत कराया।

हिन्दी वरिष्ठ लेखिका **डॉ. उषाकिरण खान** पद्मश्री से सम्मानित होने वाली बिहार की प्रथम महिला साहित्यकार हैं। दिनांक 5, फरवरी 2015 को स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग में उनका अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर अनेक प्रसिद्ध साहित्यकार उपस्थित हुए। कार्यक्रम का कुशल संचालन करते हुए प्रसिद्ध साहित्यकार एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. कलानाथ मिश्र ने उषाकिरण खान के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि डॉ. खान की रचनाओं में मिथिला की सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक परिवेश का सुन्दर चित्रण हुआ है। समारोह का शुभारंभ डॉ. प्रतिभा सहाय के द्वारा प्रस्तुत सरस्वती

वंदना से हुआ। हिन्दी स्नातकोत्तर की छात्रा लक्की राज और रंजीता ने कॉलेज प्रार्थना का गायन किया। स्वागत भाषण हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. बद्रीनारायण सिंह ने दिया।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि डॉ. रामवचन राय ने छात्रों से कहा– ''ज्ञान के लिए सिर्फ सूचना अर्जित न करें, सूचना के अंदर प्रवेश कर ज्ञान को बढ़ाएं। लगातार सीखने का सिलसिला जारी रखें।'' अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रधानाचार्य डॉ. ललन सिंह ने साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा– ''यदि हम साहित्य को भूलेंगे, तो हमारी संस्कृति व सभ्यता सब समाप्त हो जाएगी। युवाओं को लिखने की आदत डालनी चाहिए। लिखने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। बस आपके आस–पास ही बहुत सारे विषय मौजूद हैं। आप अपने विचारों और भावनाओं को लिपिबद्ध करें। यही आगे चलकर विशिष्ट साहित्य बन जाएगा।'' प्रसिद्ध पुस्तकालय विज्ञानी डॉ0 रामशोभित प्र0 सिंह ने कहा– ''डॉ. खान की रचाधर्मिता तथा परिवेश आंचलिक हैं और उसमें मिथिला की मिट्टी का गंध है।''

इसके अलावे डॉ0 चन्द्रकान्ता कुमारी, डॉ. के0के0 सिंह, डॉ. शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 विमल प्रसाद सिंह, डॉ0 शैलेन्द्र मिश्र, डॉ0 बबन सिंह, डॉ0 संजय सिंह आदि महाविद्यालय के अनेक शिक्षकों ने भी अपने कुशल वक्तव्य से कार्यक्रम को सफल बनाया। छात्रों की ओर से अमित मिश्र ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी विभाग की शिक्षिका डॉ0 कृष्णा सिंह ने किया। आयोजन में अर्चना त्रिपाठी, बिम्मी रानी, करूणा पीटर, उमेश प्रसाद, अनीता कुमारी, कुमकुम, दीप्ति, मीरा सिन्हा, चुनंन कुमारी, अमरनाथ, खूशबू कुमारी, सीमा कुमारी आदि की भूमिका सराहनीय रही।

बिहार की उर्वर मिट्टी से जन्म लेकर अनेक साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य की समृद्धि में योगदान दिए हैं, उन्हीं में एक लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार हुए हैं – स्वर्गीय **केदारनाथ मिश्र प्रभात**। 11 सितम्बर 2014 को उनका 108 वाँ जयंती था। इस अवसर पर प्रभात शोध संस्थान एवं अनुग्रह साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में प्रभात जयंती मनाया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. शिववंश पाण्डेय, पटना विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के पूर्व प्रोफेसर डा. शैलेश्वर सती प्रसाद, बिहार विश्वविद्यालय के डॉ. नंदकिशोर नंदन, पूर्व प्रति कुलपति बलवीर सिंह भसीन, हिन्दी के जाने माने विद्वान और बिहार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अमरनाथ सिन्हा सहित विख्यात कवि सत्यनारायण एवं पटना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ0 बलराम तिवारी उपस्थित हुए। डॉ0 कलानाथ मिश्र ने अतिथियों का स्वागत करते हुए 'प्रभात' साहित्य से छात्र/छात्राओं को परिचत कराया। डॉ0 बद्रीनारायण सिंह ने कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए महाकवि प्रभात की कविताओं पर प्रकाश डाला।

दिनांक 30 अप्रैल 2015 को डॉ. जियालाल आर्य की पुस्तक'यात्रा के तीर्थ का लोकार्पण अनुग्रह साहित्य परिषद के द्वारा किया गया। इस बहाने यात्रा वृतांत की विधा पर चर्चा हुई। समारोह की अध्यक्षता कॉलेज के प्रधानाचार्य डा. ललन सिंह ने की तथा न्यायमूर्ति राजेन्द्र प्रसाद मुख्य वक्ता के रूप में अपना विद्वता पूर्ण व्याख्यान दिया। समारोह में बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी के पूर्व निदेशक एवं पटना वि. के प्राध्यापक डॉ. अमर कुमार सिंह, नईधारा के संपादक डॉ. शिवनारायण, भारतीय भाषा परिषद के अध्यक्ष डॉ. नृपेन्द्रनाथ गुप्त, जे.पी. मिश्र, बलभद्र कल्याण सहित बिहार के जानेमाने शिक्षाविद तथा साहित्यकार उपस्थित हुए।

कॉलेज का हिन्दी विभाग प्राक शोध अध्ययन का केन्द्र बना। शोध अध्येंताओं के लिए भी सेमिनारा आयोजित किए गए। हिन्दी में शोध की प्रक्रिया और शोध संभावनाओं पर भी कार्यशाला का आयोजन किया गया। शोध प्रविधि पर कॉलेज के व्यापार प्रबंधन(एम. बी.ए.) के निदेशक डा. कामेश कुमार, समाजशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार, राजनीति शास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. बिमल प्रसाद सिंह ने अपना महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया।

इस प्रकार ए.एन. कॉलेज की साहित्यिक संस्था अनुग्रह साहित्य परिषद, हिन्दी विभाग ने पूरे वर्ष विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर कॉलेज की शैक्षिक सांस्कृतिक गतिविधियों में अपने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

❑

तस्वीरों के आइने में

WINNER
RUNNER

FRESHERS DAY CELEBRATION & FAREWELL TO SENIORS
A.N. COLLEGE, PATNA

A.N. COLLEGE,
and
By

A.N. COLLEGE, PA

कविवर केदारनाथ मिश्र 'प्रभ
108 वां जयंती
दिनांक – 11 सितम्बर
आयोजक : प्रभात साहित्य शोध
अनुग्रह साहित्य परिषद् (स्नातकोत्तर हि

अनुग्रह नारायण महाविद्यालय, पटना

SEMINAR ON
National Election Watch
ADR
प्रजा ही प्रभु है।

बाएं से डा. कलानाथ मिश्र, डा. के.के.सिंह, प्राचार्य डा. लखन सिंह एवं पत्रकार श्री चंद्रशेखरम

खबरों की सुर्खियाँ

'लेखन के लिए मन में भाव...

एएन कॉलेज में सम्मानित हुईं उषा किरण खां

एएन कॉलेज

प्रशासनिक भवन तैयार, 18 जून को होगा उद्घाटन

करीब 7000 हजार वर्गफुट में तीन मंजिला भवन

मनोहर सिंह | पटना
@123manohar

एएन कॉलेज का प्रशासनिक भवन तैयार हो गया है। इसका उद्घाटन 18 जून को होगा। करीब 7000 हजार वर्गफुट में तीन मंजिला भवन बना है। 1 करोड़ 59 लाख की लागत 40 कमरे बनाए गए हैं। ग्राउंड फ्लोर पर 12 काउंटर एवं पार्किंग की व्यवस्था की गई है। पहले तल्ले पर प्रिंसिपल चैंबर के साथ मीटिंग हॉल है। प्रॉक्टर का केबिन भी बनाया गया है। भवन का शिलान्यास तत्कालीन राज्यपाल देवानंद कुंवर एवं मगध विवि के तत्कालीन कुलपति अरविंद कुमार ने 9 जनवरी 2011 को किया था।

विद्यार्थियों को सुविधा क्या

प्रशासनिक भवन बन जाने से विद्यार्थियों को फार्म खरीदने एवं जमा करने के लिए लगने वाली लंबी कतार से मुक्ति मिलेगी। ... प्रिंसिपल चैंबर के पास मीटिंग हॉल होने से विद्यार्थियों को इधर-उधर खड़ा नहीं होना पड़ेगा।

कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ललन सिंह ने बताया की डॉ. अनुग्रह नारायण सिन्हा की जयंती पर भवन का उद्घाटन होगा। ...

1951 में विंस्टन चर्चिल दोबारा ब्रिटेन के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए थे।

फ्रेशर पार्टी

A.N. COLLEGE

FRESHERS DAY CELEBRATION

A.N. COLLEGE

DEPARTMENT OF BUSINESS ADMINISTRATION

Are you the star in this photograph? Congratulations if you find yourself circled! You have won yourself a food voucher from Sanjeev Kapoor's the yellow chilli Restaurant & Banquet. To collect your prize, drop in an email to us at ...
Catch our lensman around you and get lucky

the yellow chilli

...KERS TO EXPOSE BJP AS IT ... DURING LS ELECTION | 4

बेहतर प्रबंधन व कौशल ही सफलता का राज

साक्षी मोहन मिस्टर व शिवि बनीं मिस फ्रेशर

जागरण संवाददाता, पटना : 'देसी गर्ल विदेशी गर्ल', 'बदतमीज दिल माने ना माने ना', जैसे फिल्मी गानों की धुन पर एएन कॉलेज के सीनियर एवं जूनियर छात्रों ने जमकर डांस किया। मौका था, मंगलवार को कॉलेज परिसर में एमबीए छात्रों के लिए आयोजित फ्रेशर्स पार्टी का। इस मौके पर सीनियर छात्रों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। ड्रामा, डांस व क्विज में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर एमबीए नये बैच के छात्र साक्षी मोहन सिन्हा को मिस्टर एवं शिवि को मिस फ्रेशर का खिताब मिला। वहीं, मिस्टर पर्सनालिटी मो. आफताब आलम और स्वेता को मिस पर्सनालिटी चुना गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्राचार्य डा. हरिहर सिंह ने किया। ...

Mast mastam

PATNA, SATURDAY, 6/9/2014

छात्रों ने शिक्षकों के सम्मान में किया कार्यक्रम

एएन कॉलेज के हिंदी स्नातकोत्तर विभाग में शिक्षक दिवस ...

फ्रेशर्स पार्टी में सीनियर-जूनियर साथ झूमे

विशाखा मिस, अभय बने मिस्टर फ्रेशर्स

डीबी स्टार » पटना

एएन कॉलेज में शुक्रवार को एमबीए के विद्यार्थियों ने फ्रेशर्स पार्टी का आयोजन किया। ...

खबरों की सूर्खियाँ

Much Masti at ANC fresh...

PATNA: New entrants to the MBA course of AN College received the red carpet treatment here on Friday when their seniors threw a Fresher's Day party for them.

AN College students having fun at the fresher's party on Friday.

मैं तो सिर्फ बिहार को ही जानती हूं

अभिनंदन

'बाय' सीनियर्स, 'हैलो' जूनियर्स

एएन कॉलेज में सीनियर्स की विदाई, जूनियर्स को मिला वार्म वेलकम

मिस व मिस्टर

Fresh dhamaal

सीनियर्स ने जब जूनियर का ...

भाषा कभी भी किसी के लिए बाधा नहीं बनती

पद्मश्री पाने वाली उषा बिहार की पहली महिला साहित्यकार

पटना। विधान पार्षद डॉ रामवचन राय ने कहा कि डॉ उषा किरण खान ... में हैं। उन्होंने ये बातें एएन कॉलेज में आयोजित लेखिका डॉ उषा किरण ... में कही। डॉ राय ने कहा कि उषा जी मेरी सहपाठिनी रही हैं। ये ... वाली बिहार की पहली प्रथम महिला साहित्यकार हैं। इनकी ... उतरती है। इनकी रचना में वहीं श्रेष्ठ होता है जो ... कार डॉ रामशोभित प्रसाद सिंह ने कहा ... मिथिला की मिट्टी का गंध है। इनके ... उपन्यास वाणभट्ट की आ... से कहा कि वे ...

एएन कॉलेज में चला स्वच्छता अभियान

एएन कॉलेज में हुआ कविता का पाठ

पटना। ए एन कॉलेज पटना में मंगलवार को दिनकर जयंती पर छात्रों ने राष्ट्रकवि दिनकर की कविताओं का पाठ किया। हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ कलानाथ मिश्रा ने अपनी स्वरचित रचना 'किस विधि नमन करूं मैं दिनकर' का पाठ कर छात्र कवि सम्मेलन की शुरुआत की। डॉ. संजय सिंह ने दिनकर के ओज गुण की चर्चा करते हुए कविता पथ करने की कला पर ... विभाग के छात्र अमित मिश्रा ने किया। उन्होंने स्वयं भी दिनकर की चांद और कवि कविता का पाठ किया इस अवसर पर शिवनंदन ने कुरुक्षेत्र से भीष्म संवाद का पाठ कर समा बांधा। छात्रों में चुन्नन कुमारी, अमरनाथ, सीमा कुमारी, लक्कीई राज, प्रीति, मुन्ना कुमार, जूली कुमारी, सबीना, रीना, ... विकास, ... अपना सम्मान अर्पित किया।

एहसास और सपने

सब उलझे हैं अपनी निजता में
फर्क किसे क्या पड़ता है।
सपने अनगिनत लाई थी
आँखों में संजोकर सतरंगी
कब बिखर गए एहसास नहीं
जीवन तो फिर भी चलता है।
सब उलझे हैं अपनी निजता में
फर्क किसे क्या पड़ता है।
जो फूल है मेरे बगिया में
जिसे देख दिन–रात जीता हूँ
सींचा है इसे मानवता के लिए
लौलुप्ता में कहीं खो न जाए।
सब उलझे हैं अपनी निजता में
फर्क किसे क्या पड़ता है।
एहसास कभी जब होता है
सतरंगी चंचल दुनिया की
मैं आँखें बंद कर लेती हूँ
ये खींच न ले अपने बस में।
सब उलझे हैं अपनी निजता में
फर्क किसे क्या पड़ता है
माया महाठगिनी हमने जाने
चित्त चंचल किया इसने
यथार्थ की नश्वर भूमि पर
रहना है तटबथ सदैव मुझे।
सब उलझे हैं अपनी निजता में
फर्क किसे क्या पड़ता है
जीना है मानवता के लिए
दबा गया हूँ इस एहसानर तले
काम अगर आ जाऊ,
सार्थक जीवन हो जाए।
सब उलझे हैं अपनी निजता में
फर्क किसे क्या पड़ता है
मुझे खुद समझ नहीं आता है
मंजूर है क्या नियती को
करना है प्रयास फिर भी
निर्मल निश्चल, मानवता के लिए

✍ चुन्न कुमारी
स्नातकोत्तर, हिन्दी

जीवन चक्र

जीवन–चक्र की अबाध गति में
कुछ सपने जो टूट गये
कुछ लोग जो छूट गये
कुछ बातें जो अनकटी रह गयीं
कुछ किस्से जो अनसुने रह गये,
जाने जीवन चक्र में फिर कहाँ मिले
कभी निराशा बन कर आयी
कभी आशा की किरण बनकर
शून्य–सी होती जिंदगी में
खुशी की प्रतिध्वनि लेकर
यूँ ही चलता यह जीवन–चक्र
जाने–अनजाने चेहरे अब तो
स्मृति का एक गुलदस्ता बन गये
जो ये कभी अपने
बेगाने से हो गये
जाने जीवन–चक्र में फिर कहाँ मिले।
फिर भी, जीवन है, जीने का नाम
अबाध, अपलक चलना इसका काम
खुशी और गम हैं इसके दो पहलू
सोंचा क्यूँ न बात ये फिर से कह लूँ
जीवन जीने में ही निहित हैं, सारे तीर्थ सारे धाम।
जीवन चलने का नाम

✍ प्रीति प्रिया
एम.ए.द्वितीय सेमेस्टर, अंग्रेजी विभाग

शिक्षा : आधुनिक संदर्भ और ए.एन. कॉलेज

ए0एन0 कॉलेज में शिक्षा का वह परिदृश्य है जिसमें विद्यार्थी अपने प्राध्यापक के आदर्श को प्रज्वलित करने के प्रति परिदृढ़ हैं। ऐसे कितने ही उच्चतम गुणों के कारण हमारा महाविद्यालय नैक द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त करता है।

शिवनन्दन प्रसाद

भारत, जो कभी शिक्षा के स्तर पर दुनिया का मार्गदर्शक था, आज दयनीय स्थिति में है। भारत में शिक्षा एक सोच थी। इसका सूत्र वाक्य था–

विद्या ददाति विनयम्, विनयम ददाति पात्रताम
पात्रताम धनाप्नोति, धनात् धर्म ततः सुखम।।

आधुनिक परिदृश्य में शिक्षा का संबंध बाजारवाद से हो चुका है। आमतौर पर शिक्षा लेना और देना दोनों व्यापार बन गया है। आज किसी प्रकार से डिग्रियाँ प्राप्त कर धन कमाने की होड़ लगी है। बिहार और यूपी जैसे राज्यों में यह होड़ इतनी तीव्र है कि बच्चे के विद्यालय न जाने पर अभिभावक खुद शिक्षक को विवश करते हैं कि उसकी उपस्थिति बना दी जाए, ताकि छात्रवृति मिल सके, फार्म भरा सके बगैरह–बगैरह। इस होड़ में बात यहीं नहीं रूकती, अभिभावक बच्चे को पास कराने का ठीका भी ले लेते हैं और परीक्षा के दौरान पहुँच जाते हैं विश्विद्यालय और कॉलेजों के सेंटर पर चोरी कराने के लिए। विगत कई वर्षों से यह स्थिति जारी है जिसमें सरकार, समाज, शिक्षक, अभिभावक सभी दोषी हैं। यह स्थिति पूरे सिस्टम पर लागू होती है। आज आधे–अधूरे ज्ञान के बावजूद केवल डिग्रियाँ दिखाकर लोग सेटल होने के प्रयास में लगे हैं। हमारी सरकार भी बेरोजगारी मिटाने के अभियान में बगैर सिस्टम को सुधारे डिग्रियों को प्राथमिकता दे रही है। सरकार के द्वारा बहाल की गयी नियोजित शिक्षकों में कई शिक्षक ऐसे हैं जिन्हें शुद्ध लिखना और पढ़ना नहीं आता। ऐसे शिक्षक भारत के भविष्य को किस रूप में परिभाषित करेंगे यह विचारणीय प्रश्न है और जो शिक्षक पूरी तरह योग्य हैं उन्हें भी उचित सुविधा और साधन नहीं मिल रहा है। परिणामतः वे वेतनमान या वेतनवृद्धि के लिए शिक्षण संस्थान को बंद कराते नजर आते हैं।

आज हमारे यहाँ शिक्षा की स्थिति ये हो गयी है कि 'मिकेंजी' जैसी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ संस्था 40 फीसदी ग्रेजुएटस को नौकरी के योग्य नहीं समझती है। कैरियर बिल्डर जैसी संस्था ने जब 400 कंपनियों का सर्वे कराया तो पाया कि हर चौथी कंपनी ग्रेजुएटस की क्षमताओं से असंतुष्ट है। हाल में जब दुनिया में शिक्षण संस्थाओं की रैकिंग हुई तो पाया गया कि उसमें एक भी भारतीय संस्था का नाम नहीं है। यह सचमुच चिन्तनीय विषय है कि भारत जिसका अतीत बौद्धिक रहा है वहाँ एक भी विश्विद्यालय ऐसा नहीं है जिसे विश्व स्तर पर रेखांकित किया जा सके। इससे भी दयनीय स्थिति महाविद्यालय की है। वर्तमान में बहुत से महाविद्यालय की

प्राथमिकता जहाँ डिग्रियों तक सीमित है एक में 'अनुग्रह नारायण महाविद्यालय' एक अपवाद है। एक कहावत है– 'बिना कॉलेज का नॉलेज नहीं होता।' शायद इसलिए कि कॉलेज हमें केवल किताबी कीड़ा नहीं बनाता बल्कि हमारे व्यक्तित्व विकास में निखार लाता है। इस तथ्य पर ए0एन0 कॉलेज खड़ा उतरता है। यहाँ समय–समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम और संगोष्ठी का आयोजन किया जाना विद्यार्थियों के विकास में महती भूमिका निभाता है। इन कार्यक्रमों में प्रमुख सहभागिता विद्यार्थियों की होती है जिसमें प्राध्यापक माध्यम होते हैं। यहाँ के छात्रनेताओं ने भी अन्य महाविद्यालय के छात्रनेताओं की तुलना में अपनी दिलचस्पी विद्यार्थियों के हित के अलावे सांस्कृतिक कार्यक्रमों अथवा आयोजनों को सफल बनाने में लगाते हैं। यहाँ के प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष अथवा प्राचार्य सभी विद्यार्थियों में भी एक समर्पण की भावना दिखती है।

ए0एन0 कॉलेज में शिक्षा का वह परिदृश्य है जिसमें विद्यार्थी अपने प्राध्यापक के आदर्श को प्रज्वलित करने के प्रति दृढ़ हैं। ऐसे कितने ही उच्चतम गुणों के कारण हमारा महाविद्यालय नैक द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त करता है।

❍ स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

❍ आज का आविष्कार कल का साहित्य है।
माखनलाल चतुर्वेदी।

❍ हिंदी विश्व की महान भाषा है।
राहुल सांत्यायन।

एहसास

कहाँ गया वो चिड़ियों का चहचहाना,
कहाँ गया वो बच्चों का खिलखिलाना।
घर के आँगन में गौड़यों के घोंसलें,
कहीं खो से गये हैं।
रिश्तों की क्या बात करें,
अपनी मर्यादा खो रहे हैं।
प्रेम की बात तो दूर,
बैर के भी अपने तेवर बदल रहे हैं।
माँ–बाप दो टापू हो गये हैं,
कलह इतनी की दोनों जुदा से हो गये हैं।
जुबान की क्या बात करें,
आज बोल! कल मुकर रहे हैं।
नोटों के साथ हर रिश्ता उछल रहा है,
भाई–भाई भी आज जल रहा है।
धर्म के भी अपने रंग हो गये हैं,
कभी राम तो कभी रहीम संग हो गये हैं।
माँ–बेटी की दुरियां बढ़ रही है,
दिल की बात दिलों में दफन हो रही है।
हैवानियत की हद बढ़ गयी है,
अबोध बच्चों की जींदगी नरक हो गयी है।
उठ गया है भरोसा जीने का,
हर तरफ मौत का तांडव हो रहा है।
दो पैसों की भी जींदगी अब न रही,
अब हर बात पर बन्दुकें उठ रही हैं।
आत्महत्या सहज तरीका हो गया है,
जीवन में निरासा का आडम्बर हो गया है।
खुशियाँ क्या है लोग भूल रहे हैं।
दुखः में जीवन ढूंढ़ रहे हैं।
बाते तो कुछ और भी हैं
बस एक एहसास में जी रहे हैं।
बस एक एहसास में जी रहे हैं.....।

अमरनाथ
स्नातकोत्तर, हिन्दी

सजग ही मानव

धरा क्यों चितकार करती
व्योम में कैसा ये हलचल
क्रुद्ध बात क्यों आशियाँ उजाड़ रहा
जनजीवन हो उठा विह्वल।

पारावर की तरंगे आसमां छू रही
शैल से निकला पावक प्रचंड रूप
किस अनिष्ट का संकेत दे रही।

पंचतत्व का यह कैसा शेष
भीषण प्रलय का यह निघोष
सृष्टि की यह धीमी ललकार
प्रकृति की न करें छेड़छाड़।

क्यों हम द्रुमदल की आशियाँ छिन
अपनी आशियाँ बसा रहें
खुद की संख्या बढ़ा
उनकी संख्या घटा रहे।

धरती की उर्वरा में
क्यों जहर मिला दिया
शस्य श्यामल आँचल का दूध
डब्बे का बना दिया।

क्यों हमने नदियों को
कर दिया दूषित
क्यों नीर के हृदय का
पीर बढ़ा दिया।

ये अधिकाधिक वाहनों का प्रयोग
कल कारखाने और उद्योग
समीर की सौंधी गंध को
निर्गंध किए जा रहे हैं।

क्यों हम आशनि से
अपने कर काट
अपंग लिए जा रहे हैं।

विकास कुमार
रौल नं. – 16

श्रद्धांजलि

आतंकवाद कितना बर्बर हो सकता है
यह जान सके हैं हम
जब मारे गये तालिबानी हमले में
पेशावर के एक सौ बतीस स्कूली बच्चे और कुछ लोग
मजहब के नाम पर गुमराह लोगों की करतूत
और मजहब की गलत व्याख्या में
शहीद निर्दोष मासूम
मुस्कुराने से पहले जिनके होठ कत्ल कर दिये गये
फूल खिलने से पहले कुचल दिये गये
और मजबूत होने से पहले हीं देश टुकड़ों में बिखर गया
मासूमों के रक्त से लिखा गया
इतिहास का सबसे दर्दनाक पृष्ठ
किन शब्दों में दूँ बच्चों तुम्हें श्रद्धांजलि
क्या लज्जा करें हम स्त्रियाँ अपनी कोख पर
कि जन्म देकर नहीं कर सकी रक्षा तुम्हारी
या फिर लज्जा करें हम इसलिए
कि वे आतंकवादी भी पैदा हुए हमारी कोख से
आर्तनाद कर रही हमारी आत्मायें
जो भी हो रहा है
अशिक्षा ही कारण है इसका
आज हम मातायें संकल्प लेती हैं
कि मजहब की लड़ाई खतम करने के लिए
शिक्षा की मशाल जलायेगें
आतंकवाद का सही अर्थ उन्हें समझायेंगे
हे मासूम बच्चों।
यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी
शांति–शांति।

✍ डा.कृष्णा सिंह

❍ एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ए.एन.कॉलेज, पटना

SHOUTING SILENCES

Shouting silence everywhere
Not a single soul to care
Emptiness surrounds the world
A void engulfs us to the core

There is no streak of happiness
Dreams shattered, melancholy arrests our soul
Destined to dive in this maddening depth
Disdained and damned, Survival our only goal

I'm wondering why such state
Each one of us clinging to our fate
The world seems like an entrapment
Of broken promises, of closed gates

I'm still searching for solace
Alas! I find no such place
At times, I want to guit
But my heart says, its just another bit.

✍ Preety Priya

❑ M.A. (Previ.) IInd Sem. Dept. of English

संगति सुमति न पावहीं

एक बार एक सैनिक घोड़े पर सवार होकर शिकार के लिए जा रहा था। रास्ते में डाकुओं की एक बस्ती पड़ी। एक घर के दरवाजे के बाहर लटके पिंजरे में बैठा तोता चिल्ला उठा– ''भागो, पकड़ लो इसे, मार डालो। इसका घोड़ा और माल छीन लो।''

तोते की आवाज से सतर्क हो सिपाही ने घोड़ा दौड़ा दिया और घने जंगल में रहनेवाले साधु की कुटिया के पास पहुँच गया। इस कुटिया के बाहर भी एक पिंजरा लटका था। पिंजरे में बैठे तोते ने कहा– ''आओ भाई, थक गए हो, विश्राम करो, तुम्हारा स्वागत है।''

यह वाआज सुनकर साधु अपनी कुटिया से बाहर आए और उस थके हुए सिपाही की अगवानी की।

सिपाही ने पूछा– ''महाराज, एक सवाल है। क्या आप उसका जवाब दे सकेंगे? अभी मैं थोड़ी देर पहले डाकुओं की बस्ती से गुजरा तो वहाँ के तोते ने मुझे पकड़ने और लूटने की बात कही, परंतु आपकी कुटिया के तोते ने मेरा स्वागत किया। महाराज, एक ही जाति के दो परिंदों में यह फर्क कैसा?''

यह सुनकर साधु का तोता बोला– ''मैं साधुओं की वाणी सुनता हूँ, वह तोता डाकुओं की बात सुनता है। न उसमें कोई बुराई है, न मेरे में कोई अच्छाई। अच्छी या बुरी संगत से ही गुण या दोष पैदा होते हैं!''

इन्सानियत का वजूद

इन्सानियत का यारों,
वजूद मिट रहा है,
इंसान ही इंसान का,
दुश्मन बना हुआ है।
इन्सानियत..... मिट रहा है।
हर रोज चारों ओर,
कत्लेआम हो रहा है,
ऐशोआराम की खातिर,
लहू भी बिक रहा है।
सब चाहते हैं अपना,
दबदबा जमाना,
मतलबी के इस दौड़ में
हर कोई चल रहा है।
इन्सानियत..... मिट रहा है।
तहजीब और ईमान की,
अब बात मत करो,
हर रिश्ता इन्सान का
बिकाऊ हो गया है।
इन्सानियत..... मिट रहा है।
कहते हैं हम सभी
विकसित हो गये हैं,
उन्नति के नाम पर,
ये क्या हम कर रहे हैं।
बच्चे वे मासूम से,
फूलों की कलियाँ,
महकती है जिनसे,
जिन्दगी की गलियाँ।
हैवानियत की हद
यहाँ तक पहुँच गई,
मासूमियत की किलकारियाँ,
सिसकियों में बदल गई,
हर जीवन में सबसे खुदगर्ज,
आदमी बन गया है।
इन्सानियत..... मिट रहा है।
जिहाद के भी नाम पर,
सब व्यापार कर रहे हैं,
मजहब के ईल्म रूह को,
दर किनार कर रहे हैं।
हिन्दू हो या मुस्लिम,
सिक्ख या ईसाई,
हर कोई इस जहाँ में,
खुद में समा गया है।
इन्सानियत..... मिट रहा है।
अल्लाह हो या ईश्वर से,
यही फरियाद कर रही हूँ,
भर दें इस जहाँ को,
शुकुन ओ अमन से,
आज भी हर सच्चा
इन्सान कह रहा है।
इन्सानियत... मिट रहा है।

✍ **खुशबू कुमारी**
स्नातकोत्तर, हिन्दी

कवि

भूखी जनता जब रात में बेचैन हो
छटपटाती, कराहती आह भरती है।
उस समय यामिनी की निस्तबधता के बीच
उस बेवसी को महसूस करता है कवि।
देश, समाज की रक्षा का जिनके कंधों
पर है जिम्मेवारी,
वही लगते हैं बेचने जब देश को।
प्रजातंत्र के नाम पर, प्रजा को
मूर्ख बनाते हैं जब राजनीति के दलाल,
तब जनता को उसके अधिकार स्मरण
करता है कवि।
मानवों के खंडित अंग को
जोड़ने का काम करता है चिकित्सक।
लेकिन खंडित होता है जब हृदय
प्रेम से उसको सहला,
''तुमुल कोलाहल कलह में
मैं हृदय की बात रे मन''–
कहता हुआ 'प्रसाद' बन प्रकट होता है कवि।
अत्याचार होता जब किसी मजलूम पर,
अधिकारों से वंचित किसी वर्ण को
घेरने लगता है विषमता का नैशांधकार
तब तिमिर को दूर कर,
फैलाने को नयी जहाँ में रौशनी
'दिनकर' बन उदित होता है कवि।
मजदूर, गरीब, किसानों पर
पूंजी पत्तियों का बढ़ता जब जुर्म है।
बेबस तड़पते लोगों को रहती क्रांति का इंतेजार,
तब बादलों को हांक लगाता,
क्रांतिदूत बनकर आता है कोई 'निराला' कवि।
धर्म के नाम पर मचता है जब लूट–पाट
रिश्ते सभी हो जाते हैं बे–बुनियाद।
ऊँच–नीच का बनने लगता जब गहरी खाई
अनैतिक मूल्यों की होने लगती है बड़ाई।
तब मर्यादा को राम का रूप दे
समन्वय की कलम पकड़, उच्चादर्शो की स्याही बना
'तुलसी' पत्र पर मानव–मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है कवि।
मानवों का विशेष अविष्कार है भाषा
उसी को अपना औजार बना
इंसानियत के अंतर्तम को झकझोरता
हृदय के जज्बातों को जगा
इंसान को इंसान बनाए रखने की चाह में
नित्य नवीन कविता गढ़ता है कवि।

✍ **अमित मिश्रा**
स्नातकोत्तर, हिन्दी

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Anugrah Narayan College
Patna, affiliated to Magadh University, Bihar as
Accredited
with CGPA of 3.18 on four point scale
at A grade
valid up to November 29, 2016

Date : November 30, 2011

HARanaiah

Director

EC/57/RAR/75

प्रशासनिक भवन

Design & Print @ Gyan Ganga Creations # 09334110685